



# द्वानिताभूषणा

(अर्थात्) ३२६०

क्रम से नायिका अलंकारन के एकत्र लक्षणा  
उदाहरनन को संस्कृतनेवा ग्रंथ सगानुसार श्री  
युत् चक्र वारा वंशा बतंस हड्ड कुल कलश  
बुद्धीन्द्र महाराजा धिराज महाराव राजा  
जी श्री श्री श्री श्री श्री २०० श्रीरघुवीर  
सिंह जी के कवि राज राव जी.  
श्री गुलाब सिंह जी कृत

और

जगत अकाश यंत्रालय फतह गढ़ में  
पंडित जी श्री जगन्नाथ असाहजीपा  
वी के अवंध से छापी गई  
पहली बार ५००

(६० दरवारी लाल कापी नवीत फतेहगढ़)



ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सखित्यै नमः ॥

# अथ बनिता भूषण लिख्यते

ॐ स्वस्ति ॥ १ ॥ दोहा

चसुन विशद धारिनी पारद भारद काय ॥ नारदीदि सानस वसः  
 नि शारद होइ सहाय ॥ १ ॥ नृप समय ॥ दोहा ॥ शील सदन  
 जन दुख कदन सदन रूप रन धीर ॥ और मद मदन बर वदन निर  
 त मन रघुवीर ॥ २ ॥ ग्राम जुगल ताजीम राज हिये राम रन धीर ॥  
 कंचन कंचन पगन में पहिराये रघुवीर ॥ ३ ॥ बुंदी मोन रघुवीर की  
 सासन मानि सिताब ॥ बनिता भूषण सम में उद्यम करयो गुताब  
 ॥ संवत सर उनई सखे उन चास कौय वार ॥ आश्विन नवमी शुक्ल  
 पख भयो ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ अथ ग्रंथ नियम ॥ दोहा ॥  
 बनिता भूषण सार गाह ह्यो वन्यो इक वास ॥ चाही तें पाको धर्यो  
 बनिता भूषण नाम ॥ ५ ॥ नायिका जाति ॥ दोहा ॥ जानि  
 पद्मिनी चित्रिनी और शशिनी नारि ॥ बझारि हस्तनी उत मतु प  
 रब प्रच धारि ॥ ६ ॥ अथ साधारण नायिका स्वरूप  
 या नायिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ उपन तरनियाई निरखि  
 गाहि नायिका मानि ॥ स्वासी ही के प्रेम में पयो स्वकीया जानि ॥ ७ ॥  
 पति व्रता साधारणा स्वीया के भेद दोय ॥ खंडितादि जे भेद ते सा  
 शरन में होय ॥ ८ ॥ अथ अलंकार लक्षणा ॥ दोहा ॥ स  
 अर्थन तें भिन्न जो शब्द अर्थ के साहि ॥ चमत्कार भूषण सौरिस भ  
 जन मानत नाहि ॥ ९ ॥ अथ अलंकारांग कथन दोहा  
 ख चयादि उपमेय हैं शशि कयादि उपमान ॥ समानार्थ बाच  
 लखौ धर्म एक गुन जान ॥ १० ॥ चौपाई ॥ हे उपमेय विषय

अरु बराये ॥ उपमाननु बिषयी रु अवरारये ॥ प्रासंगिक कहैं प्रसु  
त जानि ॥ अप्रसंग अप्रस्तुत सानि ॥ १२ ॥ भेदय विशेष्य विशेष  
परा भेदक ॥ बह्व व्यापक सासान्य अखेदक ॥ १३ ॥ अल्प व्या  
पक आहि विशेष ॥ भूषन भासक नाम अशेष ॥ १३ ॥ अय प  
शोपिमा लुप्तोपमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुपशोपमा वाचक रु वि  
धय धर्म उपमान ॥ इक द्वैत्रय के लोप सैं लुप्तोपम परमान ॥ १४ ॥  
टीका ॥ वाचक उपमेय धर्म और उपमान ये च्यारों होय सो पूर्ण  
सा अलंकार है ॥ एक के दोय के तीन के लोप सैं लुप्तोपमा को  
है ॥ १५ ॥ अय साधारण नायिका पुरोपमा उदाहरण ॥  
दोहा ॥ शशि सो उज्ज्वल मुख सुभग अर्ध चंद्र सो भाल ॥  
नो सी छावि भरी बिहरत देखी बाल ॥ १५ ॥ टीका ॥ शशि सो  
लो मुख है ॥ आधा चंद्रमा सो सुन्दर भाल है ॥ सोना की वेल  
विभूरी झई नायिका डोलती देखी ॥ यहाँ शशि उपमान सो  
ज्वल धर्म मुख उपमेय है १ और अर्ध चंद्र उपमान सो वाचक  
ल उपमेय सुभग धर्म है २ और कनक लता उपमान सी वाचक  
भरी धर्म बाल उपमेय है ३ याति पुरोपमा अलंकार है ॥ १५ ॥  
क लुप्ता १ धर्म लुप्ता २ धर्म वाचक लुप्ता ३ वाचको पमेय लुप्ता ४  
मान लुप्ता ५ वाचको पमान लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ७  
चक लुप्ता ८ ये लुप्ता के आठ भेद हैं ॥ अय स्वकीया आलो  
उदाहरण ॥ दोहा ॥ कर किसलय सदु २ केज से पाय २ नैन  
नैन ३ ॥ आ छावि ४ कोट कृश सिंह सी ५ पिक सधुरे सिय बिन ॥  
टीका ॥ कर हैं सो नवीन पान से कोत्तन हैं याके मूल में से वा  
याति वाचक लुप्ता है १ ॥ पंज से पाय हैं यासे धर्म लुप्ता है २  
॥ ये नैन सुरा नैन में हैं याके मूल में धर्म वाचक लुप्ता  
॥ चक लुप्ता है ३ ॥ आ नखी बाली छावि है याके मूल में ४

उपमेय नहीं याते धर्म वाचकोपमेय लुप्ता है ॥ फाटि सिंह सी पत-  
 ली है ईहों सिंह की फाटि नहीं कही याते उपमान लुप्ता है ॥ १५ ॥ सिय  
 के येन कोयल से सीते हैं याके मूल में पिकवानी उपमान और से  
 वाचक नहीं याते वाचकोपमान लुप्ता है ॥ १६ ॥ वरवै ॥ गि  
 रिजा दृग मृग सम है गति गज राज ॥ भापत लुप्ता फाटि हियों  
 फावराज ॥ १७ ॥ टीका ॥ पार्वती के नेत्र हारल के समान हैं ॥ धामें  
 मृग के दृग उपमान नहीं और धर्म नहीं याते धर्मोपमान लुप्ता है  
 ॥ गति गजराज यामें नायिका की गति उपमेय तो है धर्म उपमान  
 वाचक नहीं याते धर्मोपमान वाचक लुप्ता है ॥ जलकी पार्वती-  
 स्पर्शकी नायिका हैं ॥ १८ ॥ अथ सुग्धा अनन्वय लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ जिहें तनु जोवन संकुरित सुग्धा तिय है सोय ॥ नाकी  
 उपमा जाहि को लगे अनन्वय होय ॥ १९ ॥ अथ सुग्धा अन-  
 न्वय ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुख से मुख दृग से दृगहि कच से  
 कच दृसाहि ॥ अल्प उरोज उरोज से जनक सुता के सीहें ॥ २० ॥  
 टीका ॥ मुख से मुख ही है दृग से दृग ही हैं कच से कच ही दो-  
 री हैं जनक सुता के छोटे कुच से कुच ही हैं यहाँ छोटे कुच से सु-  
 ग्धा है और मुख दृग कुच उरोज की उन्हीं की उपमा लगी याते  
 अनन्वय है ॥ २१ ॥ अथ अज्ञात यौवना उपमेयोपमा ल-  
 क्षणा ॥ दोहा ॥ नहिं जाने निज यौवनाहि है अज्ञात सु जोय ॥  
 उपमा उपमेयोपमा लगे परस्पर होय ॥ २२ ॥ टीका ॥ जोवन की  
 नहिं जाने सो अज्ञात यौवनायिका है ॥ परस्पर उपमा लगे सो उप-  
 मेयोपमा अतंकार होय है ॥ २३ ॥ अथ अज्ञात यौवनेपमेयो-  
 पमा उदाहरन दोहा ॥ सर कावतं गुदिया नब लसत अमित छवि रखा  
 नि ॥ जलज पानि से जलज से जनक लली के पानि ॥ २४ ॥ टीका ॥  
 गुदिया सर कावे है नब जनक लली के हाथ से जलज लसे है ॥

र जलज से हाथ लें हैं। यहाँ गुदियाँ खोलि वासों अज्ञात  
 वना नायिका है ॥ और जलजन की उपमा हाथन कों लगी  
 हाथन की उपमा जलजन कों लगी याते उपमेयोपमा अत  
 कार है ॥२१॥ अथ ज्ञात यौवना प्रतीप लक्षणा ॥ दो  
 हा ॥ जानें जोवन आप ही ज्ञात यौवन जान ॥ भाषत प्रथ  
 म प्रतीप जहं होय बरय उपमान ॥२२॥ टीका ॥ आप  
 जोवन को आप ही जानें सो ज्ञात यौवना नायिका है  
 न ॥ जहाँ उपमेय उपमान होय तहाँ प्रथम प्रतीप भाषत है  
 प्रतीप नाम उलटा को है ॥२२॥ अथ ज्ञात  
 यम प्रतीप उत्ताहरन ॥ दोहा ॥ निरखत छाती छाँह  
 ब दोस्त दीठि डुराय ॥ कीरति जा सीबी जुरी तब ही जानी  
 य ॥२३॥ टीका ॥ जब छाती छाँह देखती ऊई सरखीन  
 दीठि बचाकर के दोई है तब ही कीरति जा सीबी जुरी  
 नी जाय है ॥ यहाँ छाती छाँह देख वासों ज्ञात यौवना  
 यिका है कीरति जा सीबी जुरी में उपमेय उपमान भयो  
 खलटो है याते प्रथम प्रतीप है ॥२३॥ अथ नवोदा  
 तीय प्रतीप लक्षणा ॥ दोहा ॥ लज्जा भय बस रति न  
 ह नारि नवोदा मान ॥ द्वितीय बरये उपमान द्वे होय  
 अपमान ॥ टी० लाज और डर के बस रति नहीं है  
 मेय है सो उपमान हो जाय और उपमेय को अनादर  
 य सो दूसरे प्रतीप है ॥२४॥ अथ नवोदा द्वितीय  
 हरणा ॥ दोहा ॥ पिय कर नैं छुटि भजत जब क्यों सजनी  
 ॥ देखो नदन चामिनो घन में चपल लग्यात ॥ २५  
 ॥ पानम फा हाथ में नैं छुटि फोर के जब  
 है तब सरखी क्यों हरखावे है ॥ देखो नायिका की

मेघ से चौजुरी चंचल दोरे है यहाँ नायक का पात से नायिका भ-  
 जे हैं यति नवोदा है नायिका सी चौजुरी है यति उपमेय उपमान भ-  
 यो नायिका की अनादर भयो यति दूसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ  
 विग्रह नवोदा तृतीय प्रतीप लहरा ॥ दोहा ॥  
 सो विग्रह नवोदा है विग्रह से कहु पीव ॥ वरय वरय रहि अब  
 रयहि अनादर सु तृतीय ॥२६॥ टीका ॥ पीतम को कहु विश्वास  
 करे सो विग्रह नवोदा नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमेय रहकरि  
 के उपमान को अनादर करे सो तीसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ वि-  
 ग्रह नवोदा तृतीय प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ कौल भव  
 न को भासिनी भाति भरी सी जाय ॥ दासिनी मन को दुति दरपति हि  
 विरियाँ न रहाय ॥२७॥ टीका ॥ कौल का भवन को भासिनी है  
 होउर में भरी सी जाय है ॥ ना समय चौजुरी का मन को दुति को गवे  
 नहीं रहे ॥ यहाँ नायिका कौल भवन को दरपती सी जाय है यति  
 विग्रह नवोदा नायिका है ॥ और नायिका उपमेय से चौजुरी उप-  
 मान ने अनादर पायो यति तीसरो प्रतीप है यह द्वितीय भेद से उत-  
 टो है ॥२५॥ अथ सतांतरा मुरधा भेद ॥ चौपाई ॥ बयर से  
 धिर नव वधू प्रसंगा ॥ नव जीवन पुनि नवल अनगा ॥ रात वा-  
 मा ॥ मृदु माना दीवानों ॥ लज्जा प्रायासात वरवाँनों ॥२८॥ अथ च-  
 यः स्तोधि चतुर्थ प्रतीप लहरा ॥ दोहा ॥ वयस्स्तोधि शिशु  
 ता कलक कलकै जब तन तीय ॥ चवथ वरय उपमान है अवगार्य स-  
 न नगनीय ॥२९॥ टीका ॥ जब निय का तन से बालक पना की  
 कलक कलकै सो वयस्स्तोधि नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमान हो  
 जाय उपमेय की समान उपमान नहीं गन्यो जाय सो चवथो प्रतीप  
 है ॥२९॥ अथ वयस्स्तोधि चतुर्थ प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 राज सिंगार जब निय चलत अंद नेज राति आहि ॥ तब तब करी



कुंसा गति ससता पावन नाहिं ॥३०॥ टीका ॥ जब तिय है सो सिंघ  
 र राजि के संद तेज गति से चले है तब नव हाथी और हिरण को  
 गति ससता नहीं पावे है इहां संद तेज गति से चले है याते यय-  
 स्तोधि नायिका है और संद तेज गति उपमेय है सो उपमान भयो  
 कर्षा कुंसा की गति ससता लायक नहीं याते चवथो प्रतीप है ॥३१॥  
 अथ नवल बधू पंचम प्रतीप लक्षणा दोहा ॥ दिन दिन  
 दूनी दुति बड़े नवल बधू अनुमान ॥ उपमेयतु उपमान के व्यर्थ  
 य उपमान ॥३२॥ टीका ॥ दिन दिन प्रति दूनी सोभा बड़े यह नव  
 ल बधू को अनुमान है उपमेय है सो उपमान हो जाय फेर उपमान  
 व्यर्थ हो जावे सो पंचम प्रतीप है ॥३२॥ अथ नवल बधू पं-  
 चम प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ दोयज के शशि लों कला  
 शि वासर सरसात ॥ जनक सुता तनु निरख तां कनक ॥  
 त ॥३२॥ टीका ॥ दोयज का चंद्रसा की समान कला गति दिन स  
 सावे है ॥ जनक सुता का शरीर कों देखतां कनक की लता प  
 वे है ॥ यहाँ कला सरसावा सों नवल बधू नायिका है और जनक  
 सुता उपमेय है सो उपमान भई ताके आगे कनक लता  
 न पंचम प्रतीप है ॥३२॥ अथ रूपक लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 विषयी रंजै विषय कों है तद्रूप अभेद ॥ अधिक न्यून सम उद्भू  
 करि पद रूपक है भेद ॥३३॥ टीका ॥ उपमान है सो उपमेय  
 लो रंजै तद्रूप और अभेद होकरि कै ॥ एक उपमान उपमेय में  
 ल्यो रहै एक उपमान न्यारो रहै सो तद्रूप ॥ उपमान उपमेय में  
 द नहीं रहै सो अभेद ॥ इन दोनू न के अधिक न्यून समता  
 कः भेद होते हैं ॥३३॥ अथ नव यौवना अधिक  
 ॥ दोहा ॥ सो सुग्धा नव यौवना जीवन कलक  
 सु है अधिक तद्रूप जह उपमेयहि अधिकाय ॥३४॥

किं जीवन की रत्नक तस्यावै सो मुग्धा नव यौवना नायिका है जहाँ  
 प्रसेय की अधिकता होय सो अधिक तद्रूप है ३५॥ अथ नव  
 यौवना अधिक तद्रूप उदाहरन ॥ दोहा ॥ सरने चन्द्र प्र-  
 काश नें जीवन भलक प्रकाश ॥ सिय मुख शशि शशि ते सरस निश-  
 वन करत प्रकाश ॥ ३५॥ टीका ॥ चंद्रमा का उजाला सें जीवन की  
 रत्नक को प्रकाश अधिक है ॥ सीता को मुख चंद्रमा से सो चंद्रमा सें अधिक  
 है रति दिन उजाला करे है वहाँ नें जीवन का प्रकाश सें नव यौवना  
 नायिका है और सीता का मुख चंद्रमा उपमेय में रति दिन प्रका-  
 श करवों अधिकता है यानि अधिक तद्रूप है ॥ ३५॥ अथ नव  
 ल अनंगा न्यून तद्रूप लक्षणा ॥ दोहा ॥ नवल अनंगा का  
 म रोच भोलापन में जानि ॥ होय न्यून तद्रूप जब उपमेयहि कमव  
 नि ॥ ३६॥ टीका ॥ भोलापन में काम की रोच होवै सो नवल अ-  
 नंगा नायिका जानी ॥ जब उपमेय को कम वाने तब न्यून तद्रूप हो  
 य है ॥ ३६॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप उदाहरण ॥  
 दोहा ॥ सुनि रति की पिय विनय नित नैन मँदि मुसकाय ॥ तब  
 रूप की चप रूपन में चंचलता नर हाय ॥ ३७॥ टीका ॥ नित्य है  
 सो पिय की रति की विनय सुनि करि कै नैन मँदि मुसकावै तब  
 रूप की सो चप रूपन में चंचला नहीं रहै यहाँ नैन मँदि मुसका-  
 वा सें नवल अनंगा नायिका है और रूपन की सो चंचलता चप  
 रूपन में नहीं यानि न्यून तद्रूप है ॥ ३७॥ अथ रति वामासि  
 स तद्रूप लक्षणा ॥ दोहा ॥ रति वामा वामा सुतो सुरत अरु  
 चि पाहिचानि ॥ सम तद्रूप डहन में समता भये बखानि ॥ ३८॥  
 टीका ॥ रति वामा है सो तो सुरत में अरु चि पाहिचानों ॥ दो-  
 वन में समता भया पै सम तद्रूप बखानी ॥ ३८॥ अथ रति  
 वामा सम तद्रूप उदाहरण ॥ दोहा ॥ मोन धारि पिय प्रा-

सजब बैठे हग शिर नाय ॥ तब राधा रति अति लसत मानवती  
रति भाय ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जब सोन धारि कोर के पिय के पास ह  
ग शिर नवाय कोर के बैठे तब राधा रति है सो अत्यंत लसे है मा  
नवती रति की समान ॥ यहाँ सोन धारि शिर नवाय बैठि बासी  
रति वासा नायिका है और राधा रति में मानवती रति में समता है  
याँतें सम तद्रूप है ॥ ३८ ॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद  
लक्षणा ॥ दोहा ॥ मृदु माना जो मान के अवसर मृदुल रहा  
अधिक होय उपमेय तब अधिक अभेद कहात ॥ ४० ॥  
मान का अवसर में मृदुल रहावे सो मृदु माना नायिका है  
य अधिक होय तब अधिक अभेद कहावे है ॥ ४० ॥ अथ  
माना अधिक अभेद उदाहरणा ॥ दोहा ॥ साप  
रिख पिय प्रथम सुसकानी रिस टारि ॥ हास्य जौन्ह तब सदन में  
त रही बिस्तारि ॥ ४१ ॥ टीका ॥ पीतम को पीहले  
कोर के रिस को टारि करि के हँसी तब हास्य रुपी  
सदन में सँवरे ही बिस्तारि रही यहाँ रिस टारि  
सों मृदु माना नायिका है और हास्य में चाँदनी में भ  
नहीं यह तो अभेद सबेरे बिस्तारि रही यह अधिकता  
अधिक अभेद रूपक है ॥ ४१ ॥ अथ लज्जा  
अभेद लक्षणा ॥ दोहा ॥ लज्जा जुत सुरतहि  
लज्जा प्राय ॥ न्यून होय उपमेय तब न्यून अभेद  
॥ ४२ ॥ टीका ॥ लाज सहित सुरत को सो लज्जा  
नायिका है जब उपमेय न्यून होय तब न्यून अभेद  
है ॥ ४२ ॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद  
॥ दोहा ॥ धीर धरुह गुरु जनन जर जो गत है व  
सो भाषत भयभरी तिय रति सोभ प्रकास ॥ ४३ ॥

टीका ॥ धीरज धरो गुरु जन ननद देवर सास जगै हैं पिय सौं  
 भाषतां तिय रति की भय भरी सोभ प्रकासे है इहाँ गुरु जनादि-  
 कसैं लाजै है यातैं लज्जा प्राया है तिय रति की भय भरी सोभ  
 प्रकासवो न्यूनता है यातैं न्यून अभेद रूपक है ॥५३॥ अथ  
 मध्या सम अभेद लक्षणा ॥ दोहा ॥ लाज काम सम जासु  
 कै सो है मध्या तीय ॥ उपमानरु उपमेय सम होय अभेद तृतीय  
 ॥५४॥ टीका ॥ जाके लाज काम समान होय सो मध्या नायिका  
 है ॥ उपमान उपमेय समान होय सो तीसरो अभेद है ॥५४॥ अथ  
 मध्या सम अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥ लिख लिख पिय हग  
 छवि तिया जब जब दीति दुरात ॥ नव नव पिय मन बस करि  
 हग कंजन छवि छात ॥५५॥ टीका ॥ पीतम का दृगन की छ  
 वि देखि देखि करि कै तिया है सो जब जब दीति दुरावै तब  
 तब पीतम कामन कौ बस करवा वाली हग कंजन में छवि छा  
 वै है देखि करि कै दीति दुरावै है यातैं मध्या नायिका है  
 दृगन के ओर कंजन के समाना है यातैं सम अभेद रूपक है ॥  
 ५५॥ मध्य भेद ॥ चौपाई ॥ इक आरुढ़ यावना १ वा-  
 सा ॥ प्रगल्भ वचना २ द्वितीय लतासा ॥ प्रादुर्भूत अनंगा ३ सोई  
 चौथी सुरत विचित्रा ४ होई ॥५६॥ अथ आरुढ़ यौवना  
 परिणाम लक्षणा ॥ दोहा ॥ सु आरुढ़ जुवना कही पूरन जो  
 वन वास ॥ उपमेयरु उपमान मिलि करि किया परिणाम ॥५७॥  
 टीका ॥ जो वास पूरन जोवन वान होय सो आरुढ़ यौवना नाय  
 का है ॥ उपमेय उपमान मिलि करि कै किया करे सो परिणाम अ  
 लंकार है ॥५७॥ अथ आरुढ़ यौवना परिणाम उदाह  
 रन ॥ दोहा ॥ कुच कुंजन तैं उर परिस भुज लतिकनि बाहि लेत  
 हग कंजन सैं लिख प्रिया नन रंजन करि देत ॥५८॥ टीका ॥

कुच कुंभन हैं उर कों परीस करि कै भुज लति कान में गहि हैं  
 हग कंजन हैं होख कै प्रिया है सो जन कों राजी करि दै है  
 हाँ कुच कुंभन हैं आरुध यौवना नायिका है और कुच कुं  
 भुज लतिका हग कंजन हैं परीसवो गहिबो देखवो किया  
 करी यति परीसाम अलंकार है ॥ ४८ ॥ अथ अगल्ल  
 चना प्रथम उल्लेख लक्षणा ॥ दोहा ॥ अगल्ल वन  
 बड बचन भाषि जुदे यहुराय ॥ बज्र माने बज्र सक कौं  
 र गनाय ॥ ४९ ॥ टीका ॥ जो बड बचन भाषि करि कै  
 सो अगल्ल बचन नायिका है सक कौं बज्रत है सो व  
 न प्रकार माने सो प्रथम उल्लेख गनावी ॥ ४९ ॥ अथ  
 लभ बचन प्रथम उल्लेख उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 स पिय लख तिय बचन भाषत जुत अभिसान ॥ पिय पिय  
 कोकिल लखन सोतिन जाने वान ॥ ५० ॥ टीका ॥ पीतस ने  
 अपराध सहित देखि करि कै तिय कों अभिसान सहित  
 भाषत ॥ पीतस ने पियूष जान्या सखीन ने कोकिल जान्या  
 तिन ने वारा जान्या यहाँ अभिसान का बचन भाष वा में  
 लभ बचन नायिका है और सक बचन कों पीतस ने पियूष  
 न्या सखीन ने कोकिल जान्या सोतिन ने वारा जान्या यति  
 लेख अलंकार है ॥ ५० ॥ अथ प्रादुर्भूत सनोभवा  
 य उल्लेख लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रादुर्भूत सनोभवा पूरित  
 कलान ॥ बज्र गुन सों बज्र विधि कहै जुग उल्लेख प्रदान ॥ ५१  
 टीका ॥ काम कलान में पूरित होय सो प्रादुर्भूत सनोभवा  
 बज्रत गुन सों बज्रत विधि करि कै कहै सो दूसरा उल्लेख को  
 सान है ॥ ५१ ॥ अथ प्रादुर्भूत सनोभवा द्वितीय  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ काम कलान भरी लिया रति में

दरसाय ॥ छवि में गिरिजा गुन गिरा पालन रसा तस्याय ॥ ५२ ॥  
 टीका ॥ काम कलान की भरी ऊई तिय है सो रीत में रीत द-  
 रसावे है ॥ छवि में गिरिजा है ॥ गुन में गिरा है ॥ पालता रसात-  
 ला है ॥ यहाँ काम कलान की भरी ऊई है याते अद्भुत मनो  
 भवा पायिका है और एक नायिका को अनेक गुरा से अनेक  
 तरह जानी याते दूसरे उल्लेख है ॥ ५२ ॥ अथ सुरत विचित्र  
 सुमरन लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुरत विचित्रा नायिका ॥ जो अद्भुत  
 रन वान ॥ सुमरन है एक वस्तु लखि सो सुमरन को मान ॥ ५३ ॥  
 टीका ॥ जो अद्भुत रन वाने सो सुरत विचित्रा नायिका है  
 एक वस्तु को देखि करि के सुमरन होय सो सुमरन अलंकार है  
 ५३ अथ सुरत विचित्रा सुमरन उदाहरन ॥ दोहा  
 कोल कला अद्भुत करत ॥ जब पिय मन जलसावे ॥ तब तब नि-  
 रखि सखीन को मदन तिया सुधि जात ॥ ५४ ॥ टीका ॥ अ-  
 द्भुत कोल कला करता जब पीतम को मन जलसावे है तब तब  
 निरखि करि के सखीन को मदन तिया की सुधि जाते है ॥ यहाँ  
 अद्भुत कोल कला से सुरत विचित्रा नायिका है और नायिका  
 को देखि करि के सखीन को मदन तिया को स्मरना भयो याते  
 स्मरना अलंकार है ॥ ५४ ॥ अथ प्रौढा भ्रम लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ प्रौढा पति ही के विषय ॥ कोल कलाप प्रवीन ॥ एक  
 को लखि भ्रम होय जहै है भ्रम भ्रमरा वीन ॥ ५५ ॥ टीका ॥  
 पति के विषय कोल कला में प्रवीन होय सो प्रौढा नायिका है  
 एक को देखि के भ्रम होय तहाँ भ्रम अलंकार है वीन ॥ अ-  
 थ प्रौढा भ्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब पिय संग सि-  
 य चाहे अला ॥ हरिषि हिये नापटानि ॥ तब लखि हृये सोर  
 गन घन दासिनि मन सांनि ॥ ५६ ॥ टीका ॥ जब सोना है

पीनस के संग जटा पे चढ़ि करि कै- हरषि करि कै हिया  
 लपटाई- तब देखि करि कै सोरन के मन हर्ष- घन  
 मन में सानि करि कै- यहाँ हर्षि करि हिया सौं लपटावों  
 यातें प्रौढ़ नायिका है। और सोरन को घन दामिनी को  
 अयो यातें भुम अलंकार है ॥ ५६ ॥ अथ प्रौढ़ भेद ॥  
 पार्ड ॥ ताडतारु राय कासां धौ कीह ॥ भावोन्नता उदर  
 म लाह ॥ अरु समस्त रत चतुरा ५ जानी ॥ पुनि आकांत  
 दसानी ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ हे समस्त रत कोविदा चित्र  
 सा जोय ॥ पुनि लव्या पति नायिका प्रौढ़ भिद नव होय ॥  
 अथ गाढ तारु राया संदेह लक्षणा ॥ दोहा ॥ गाढ  
 तरु राया नायिका पूरन जोवन वारि ॥ इक कों लखि संदेह  
 संदेहसु निर्धारि ॥ ५८ ॥ टीका ॥ जो पूरन जोवन वारी होय  
 सो गाढ तरु राया नायिका है- एक कों देखि कै संदेह होय  
 निश्चय ही संदेह है ॥ ५८ ॥ अथ गाढ तारु राया संदेह  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ बंक दीठि दृगं मद भरे कुच नि  
 तव लखि पीन ॥ अलि सानत यह रति रसा उमा गिरा कि  
 प्रवीन ॥ ६० ॥ टीका ॥ बाकी दीठि मद के भरे ऊर दृगं  
 च नितवन कों पीन देखि कै ॥ अलि सानें हैं यह रति है  
 रसा है कि गिरा है कि उमा है हे! प्रवीन- यहाँ कुच  
 पीन है- यातें गाढ तारु राया नायिका है- और अलि कै  
 ति रसादिक को निश्चय न अयो- यातें सांदेह अलंकार है  
 ६० ॥ अथ कामांधा शुद्धापन्नति लक्षणा ॥ दोहा  
 कामांधा अति काल वस- पारि पूरन रति भाय ॥ शुद्धापन्न  
 ति ज्ञान धरि सांची भाव उराय ॥ ६१ ॥ टीका ॥ काम के  
 वरु अत्यंत होय पारि पूरन रति भावै सो कामांधा है ॥

और धीरे धीरे के सौचा भाव कों छिपावै सो शुद्धापन्नति अलं-  
 गर है ॥६२॥ अथ कामांधा शुद्धापन्नति उदाहरन ॥  
 दोहा ॥ नैनन याके मन सर वैनन मद घर आहिं ॥ तजे न पति  
 तो छिनक यह डरे गुरुन सों नहिं ॥६२॥ टीका ॥ याके नेत्र  
 नहीं हैं-मैन के सर हैं-बचन नहीं है मद के घर हैं-यह पति  
 तो छिन भर भी नहीं-न्यायों है-बड़ा आदमीन सें डरपे नहीं-  
 यहां पति कों नहीं न्यायों है-यातें कामांधा है-और नैनन कों  
 मैन सर बहराया-वैनन कों मद घर बहराया-यातें शुद्धापन-  
 नति है ॥६२॥ अथ भावोन्नता हेत्व पन्नति लक्ष-  
 णा ॥ दोहा ॥ उन्नत भावन ते निया भावोन्नता वर्यानि ॥ हेत्व  
 अपन्नति जुक्ति सों वस्तु डराये जानि ॥६३॥ टीका ॥ उन्नत भा-  
 वन तें भावोन्नता नायिका वर्यानी-जुक्ति सों वस्तु छिपावै पै हे-  
 त्व पन्नति अलंकार जानी ॥६३॥ अथ भावोन्नता हेत्व  
 पन्नति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अति उन्नत भावन भरी यह  
 नहिं नरी निदाने ॥ सतनु पति वनी रति नहीं रमा आहि छाव या-  
 न ॥६४॥ टीका ॥ अत्यंत उन्नत भावन की भरी है यह निश्चय  
 ही नरी नहीं-तनु सहित पति वारी है-यातें रति नहीं-छाव को  
 यान रमा है यहां उन्नत भावन में भावोन्नता नायिका है-और ना-  
 यिका कों जुक्ति करि रति सें बचाय रमा ठहराई यातें हेत्व पन्न-  
 ति है ॥६४॥ अथ दर ब्रीड़ा पर यस्तापन्नति लक्षणा  
 दोहा ॥ जब है थारी लाज तब दर ब्रीड़ा नित्य आप ॥ पर यस्ता  
 पन्नति धर्म पर को पर में रोप ॥६५॥ टीका ॥ जब थारी लाज  
 होय तब दर ब्रीड़ा नायिका है-पैला को धर्म पैला में रोपै सो पर  
 यस्तापन्नति अलंकार है ॥ अथ दर ब्रीड़ा पर यस्ताप-  
 न्नति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुस्त करत अध खुलित हग-



जब तिय बोलत मंद ॥ आहि सुधा धरे बचन नहिं न  
चंद ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ सुरत करता अथ खुल्या नेत्रन सैं  
बसंद बोलैं- ते बचन सुधा धरे है- चंद्रमा सुधा धर नहिं  
यहाँ अथ खुल्या नेत्रन से दर ब्रीड़ा नायिका है- और  
को सुधा धर पराग छिपाय बचन में उहराये- यातें  
नूतन है ॥ ६६ ॥ अथ समस्त रत कोबिदा ॥  
ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ सो समस्त रत कोबिदा सकल  
र बोन ॥ आंतापन्जति ज्ञान की करे आंति को छोन ॥  
संपूर्ण सुरत में प्रवीन होय सो समस्त रत कोबिदा है-  
आंति को छोन करे सो आंतापन्जति अलंकार है ॥ ६७ ॥  
अथ समस्त रत कोबिदा आंतापन्जति ॥  
दोहा ॥ नाना विधि निशि सुरत ते ज्योति आत लखि ताहि  
खि पेकी कहु आधि है तिय कहि रति अस आहि ॥ ६८ ॥  
नाना प्रकार सैं रात्रि में सुरत तैं ताकों सवेरे ज्योति देखि  
स्त्री में पैड़ी कहु आधि है तिय में कही रति को अस है  
नाना प्रकार की सुरति तैं समस्त रत कोबिदा है- और न य  
वचन सैं सखी को अस जातो रह्यो- यातें आंतापन्जति  
है ॥ ६९ ॥ अथ आक्रांत नायका छेकापन्जति  
रा ॥ दोहा ॥ सु आक्रांत नायक तिया निहि यात कुल  
आत ॥ छेकापन्जति ज्ञान के जानैं सौच छिपाव ॥ ७० ॥  
जकि पति और कुल बस में होय सो आक्रांत नायिका है  
का जान्या सों सौच को छिपावे सो छेकापन्जति अलंकार  
अथ आक्रांत नायका छेकापन्जति ॥  
दोहा ॥ मनकज मन सोरे नहीं भयन बसन बनाते ॥  
ति पिय की ते पया नहिं जरि जरि को बात ॥ ७१ ॥

भूयन वसन बनाता मन को तनक भी नहीं गोरेंगे-मुखों ने कही  
पियकी कथा है-नायका ने कहा नहीं सखी-सखी की बात है य-  
हां भूयन वसन बनावा सौ आकांक्ष नायका है और नायका  
ने सखी से सौची बात छिपाई याते छेला पण्डित से ॥३०॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पण्डित लक्षणा  
दोहा ॥ हे समस्त रस कोविदा पियहि सकल रस दाय ॥ पद  
मिसादि कार कैतवा पण्डित सत्य दुराय ॥३१॥ टीका ॥ पी-

तम को संपूर्ण रस दायक होय सो समस्त रस कोविदा है मिस  
पद कार के सत्य को दुराय सो कैतवा पण्डित अलंकार है ॥३१॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पण्डित उदाहर-  
न ॥ दोहा ॥ हास विलास कलान कार प्रेम पास मन सौचि ॥  
पीतम फर में फर लियो चित वानि सुख रस सौचि ॥३२॥

टीका ॥ हास विलास कलान कर के प्रेम पासों से मन को खींच के पी-  
तम को फर में फर लियो चित वानि का मिस सौ रस सौचि कार के यह  
कलान कार के पीतम को वर में फर लियो याते समस्त रस कोविदा  
है और चित वानि को मिस पद कार के रस सौचि वो उदाहरणो याते कैत-  
वा पण्डित अलंकार है अथ चित्र विभ्रमा लक्षणा ॥ दोहा

चित्र विभ्रमा नायिका विभ्रम जासु विचित्र ॥ तन दुनि पिय मन वस कर  
निवर्तत विवुध पवित्र ॥३३॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ जिहि रद हासी  
मुख करत कुंद जीन्ह शीश भंद ॥ सोहि निभ सनि राधक सोहि लियो ह-

ज चंद ॥३४॥ अथ लब्धा पीत लक्षण ॥ दोहा ॥ सो लब्धा पीत  
नायिका प्रीदा भेद वखानि ॥ कानि करे जाकी सदा पांत फल प्रभुता भा-  
नि ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि ललचानी बाल को नई ल-

ला उर लाय ॥ इक टक चित वत डुङ्गन मन रह्यो मेह सरसाय ॥

प्रथम धीरादि भेद ॥ दोहा ॥

[illegible]

**लक्षणा ॥ दोहा ॥** मिस प्रगटे कीह व्यंग्य बच मध्या धीरा  
 नारि ॥ हे संभाव्यरु आस्पद सु उक्ता स्पदा विचारि ॥ ८० ॥ **टीका**  
 व्यंग्य का बचन कहकारि के रोस की प्रगटे सो मध्या धीरा नायि-  
 का हे- संभाव्यतान और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो ॥  
 ८० ॥ **अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा**  
**उदाहरणा ॥ दोहा ॥** हर्षित कीनी मुहि दिखा लालन लोय  
 न लोल ॥ मानऊ मजे मजीठ रा हैं जुग मीन असोल ॥ ८१ ॥ **टीका**  
 लालन ने चंचल नेत्र दिखा करि के मोकी हर्षित करे जानें म-  
 जीठ रा रा में रग्या जया असोल दो मीन हैं- यहाँ हर्षित श-  
 ब्द में दुखत हा या व्यंग्य में कट्यो- याने मध्या धीरा नायि  
 का हे और लोयन वस्तु में मानन की तर्क हे- याने वस्तुत्प्रेक्षा  
 हे- और दांनु विद्य मान हैं- याने उक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा हे ॥ ८१ ॥  
**अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा लक्ष-**  
**णा ॥ दोहा ॥** परुष वचन कीह व्यंग्य विन कोपे मध्या धीरा ॥  
 जहै नहि पद में आस्पद अनुक्ता स्पदा धीरा ॥ ८२ ॥ **टीका ॥**  
 परुष वचन कह करि के व्यंग्य विन कोपे सो मध्या धीरा ना-  
 यिका हे- जहाँ पद में संभावना को विकारी नहीं होय सो अनु-  
 क्ता स्पदा हे हे धीरा ॥ ८२ ॥ **अथ मध्या अधीरा अनुक्ता**  
**स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा उदाहरणा ॥ दोहा ॥** अनल भालन  
 नु विष अधर नैनन सोहि मसाल ॥ जावो जहै निशि जगि पगेरों  
 मुहि करत विहाल ॥ ८३ ॥ **टीका ॥** भाल में अनल हे अधर  
 ने विष हे नैनन के सोहि मसाल हे- जहाँ रति में जागि करि के  
 पगे तहाँ जावो मोकी विहाल क्यों करते हो- यहाँ जावक अज-  
 न ललाई में अनल विष मसाल की तर्क हे याने वस्तुत्प्रेक्षा  
 और जावक अजन ललाई नहीं कही याने अनुक्ता स्पदा वस्तु-

लब्ध्या प्रोक्त मान में त्रिविध होत प्रत्यक्ष ॥ धीरा और ३  
 पुन धीरा धीरा सक ॥ ७५ ॥ अथ उत्प्रेक्षा लक्षणा  
 दोहा ॥ वस्तु हेतु फल तीन में संभावना जब होय  
 उत्प्रेक्षा ताको कहत कवि गुलाब कवि लोच ॥ ७६ ॥  
 वस्तु हेतु फल इन तीन में जब संभावना होय ताको  
 क्षा अलंकार कहें हैं- गुलाब कवि कहें कवि लोच हैं  
 ७६ ॥ चौपाई ॥ वस्तु एक उक्ता सपदा कहि ॥ दूजी आ  
 उक्ता सपदा लहि ॥ हेतु साँहि सदा स्पदा है ॥  
 य असिद्धा स्पदा सदा है ॥ ७७ ॥ टीका ॥ वस्तु में एक  
 दा कहो ॥ दूसरी अनुक्ता स्पदा लहो अर्थात् उक्ता स्पदा  
 नुक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा हेतु के साँहि सिद्धा स्पदा है दूसरी सदा  
 क्षा स्पदा है- हेतुत्प्रेक्षा दोय प्रकार की सिद्ध होय तो सिद्धा सदा  
 हेतुत्प्रेक्षा असिद्ध होय तो असिद्धा स्पदा हेतुत्प्रेक्षा है ॥  
 दोहा ॥ फल सिद्धा सपदा सदा असिद्धा सपदा दोय  
 वाचक मनु संकादि विन गम्योत्प्रेक्षा होय ॥ ७८ ॥  
 फल में सदा सिद्धा सपदा है- असिद्धा स्पदा है ये दोय भेद  
 वाचक मनु संकादि विना गम्योत्प्रेक्षा होय है अफल को फल  
 हराय संभावना करे सो सिद्ध होय तो सिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा  
 सिद्ध होय तो असिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा है ॥ ७८ ॥  
 जाकी संभावना सो संभाव्य  
 आस्पद पहिचानि ॥ ७९ ॥ टीका  
 संभाव्य मान बखानौं  
 ये दोन होय सो  
 स्पद नहीं हो  
 अथ मर

नक्षरा ॥ दोहा ॥ इस प्रगटे कहि व्यंग्य वच मध्या धीर  
 ॥ है संभाव्यरु आस्पद सु उक्ता स्पदा विचारि ॥ ८० ॥ टीका  
 व्यंग्य का वचन कहकार के रोस को प्रगटे सो मध्या धीर नाय  
 ॥ है संभाव्यरु और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो ॥  
 ८० ॥ अथ मध्या धीर उक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा  
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनी मुहि दिखा लालन लोय  
 ॥ लोल ॥ मानझ मंजे मजीव स हैं जुग सीन अमोल ॥ ८१ ॥ टीका  
 लालन में चंचल नेत्र दिखा करि के मोकी हर्षित कर लानों म  
 ॥ वि का रंग में रखा जया अमोल दो मोन है - यहाँ हर्षित श  
 द में दुस्ख हा या व्यंग्य में कल्यो - याने मध्या धीर नाल  
 ता है और लोयन वस्तु में मानन की तर्क है - याने वस्तुत्प्रेक्षा  
 है और दाने विद्य मान है - याने उक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा है ॥ ८१ ॥  
 अथ मध्या अधीर अनुक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा लल  
 ण ॥ दोहा ॥ परप वचन कहि व्यंग्य विन कोपे मध्या धीर ॥  
 ॥ है नहि पद में आस्पद अनुक्ता स्पदा धीर ॥ ८२ ॥ टीका ॥  
 ॥ ॥ ॥ ॥ कह करि के व्यंग्य विना कोपे सो मध्या धीर ना  
 ॥ ॥ ॥ ॥ पद में संभावना को विकानी नहीं होय सो अनु  
 क्ता स्पदा है धीर ॥ ८२ ॥ अथ मध्या अधीर अनुक्ता  
 स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल न  
 नु विष अधर नेनन सोहि मसोल ॥ जावो जह निशि जगि एगोपे  
 मुहि फगत विहाल ॥ ८३ ॥ टीका ॥ भाल में अनल है अधर  
 में विष है नेनन के सोहि मसोल है - जहाँ रति में जागि करि के  
 पगे तहाँ जावो सोकी विहाल सों करते हो - यहाँ जावक अज  
 न ललाई में अनल विष मसाल की तर्क है याने वस्तुत्प्रेक्षा  
 और जावक अजन ललाई नहीं कही याने अनुक्ता स्पदा

त्वेसा है ॥ ८३ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा है  
 त्वेसा लक्षणा ॥ दोहा ॥ व्यंग्य अव्यंग्य हि वचन की  
 रोस प्रकाशे रोय ॥ ८४ ॥ सिद्ध अहेतुहि हेतु रूत हेतु त्वेसा  
 ८४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यंग्य वचन कह करि के रो कीर के रोस  
 कों प्रकाशे- सिद्ध अकारणा कों कारणा को सो सिद्धा स्पदा हेतु  
 हा होय ॥ ८५ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा  
 हेतु त्वेसा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि रोय रिसाय  
 कि कीने लोयन लाल ॥ तिन की रुचि लखि मनु भये लालन  
 न लाल ॥ ८५ ॥ टीका ॥ पिय कों देखि कीर के रो कीर के रोषन  
 र के- बकि कीर के लाल नेत्र कया तिनकी रुचि देखि के  
 लालन के लाल नेत्र भये यहाँ रोवा सों मध्या धीरा धीरा  
 का है- और लालन के लाल नेत्र हो वाको कारणा नायिका के  
 ल नेत्र नहीं तिस कों कारणा वहगया- यातें हेतु त्वेसा और  
 ल हो वो सिद्ध है यातें सिद्धा स्पदा हेतु त्वेसा है ॥ ८५ ॥ २  
 य प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतु त्वेसा लक्षणा  
 दोहा ॥ कोष प्रकाशे व्यंग्य कीर रीतें ते रहें उदास ॥ होय  
 सिद्धतु दूसरी हेतु त्वेसा भास ॥ ८६ ॥ टीका ॥ व्यंग्य की  
 कोष कों प्रकाशे रीतें ते उदास रहे- सो प्रौढा धीरा नायिका है  
 सो असिद्ध होय तो दूसरी हेतु त्वेसा भासै है ॥ ८६ ॥ अथ  
 प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतु त्वेसा उदाहरन  
 दोहा ॥ पिय लखि मुरति बिसारि निय कीर कीर रीतें नैन  
 सदसती यातें सनों बोलत हल बल वैन ॥ ८७ ॥ टीका ॥  
 पिय कों देखि के मुरति बिसारि कीर के निय है सो रीतें नैन  
 कीर के सदसत ऊई- यातें सनों हल बल वचन बोलै  
 सती का वहाना सों हल बल वचन बोलै है

तैं प्रौढा धीरा नायिका है और मद मस्त हो वाको कारणा हल  
बल वचन बोलवो नहीं ताकीं कारणा वहरायो याति हेतु त्रेक्षा  
है- मद मस्त हो वो असिद्ध है- याति असिद्धा हेतु त्रेक्षा है ॥८३॥  
**अथ प्रौढा अधीरा सिद्धा स्पदा फलो त्रेक्षा लक्ष-**  
**णा ॥ दोहा ॥** तर्जन ताडन आदि करि व्यंग्य रहित करि को  
प ॥ सिद्ध अफल कीं फल करि सु फलो त्रेक्षा ओप ॥ ८४ ॥ टी०  
तर्जना ताडना आदि करि के व्यंग्य रहित कोप करि सो प्रौढा  
अधीरा नायिका है- सिद्ध अफल के नहि फल करि सो फलो  
त्रेक्षा ओप है ॥ ८४ ॥ **अथ प्रौढा अधीरा सिद्धा स्प-**  
**दा फलो त्रेक्षा उदाहरणा ॥ दोहा ॥** गर्जत आमत डर-  
त नहि धरत न चित में चेत ॥ घुमत कुकि कुकि रहत मनु मद-  
गज समता हेत ॥ ८५ ॥ टीका ॥ गर्जे है- चासे है- डरे नही है  
चित में चेत नहीं धरे है- घुमे है कुकि कुकि रहै है मानों मल  
गज की समता के चासे- यहां गर्जादिक से प्रौढा अधीरा नायिका  
है- और गर्जवो चासवो नहीं डरवो चित में चेत नहीं धरवो-  
घुमवो- कुकिवो- इनको फल मद गज की समता नहीं ताकी फ  
। वहरायो याति फलो त्रेक्षा गर्जादिक सिद्ध है याति सिद्धा-  
पदा फलो त्रेक्षा है **अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धा स्पदा**  
**फलो त्रेक्षा लक्षणा ॥ दोहा ॥** ताडनादि करि रति बि  
स कोप प्रकासे नारि ॥ जहै असिद्ध है अफल फल सु फलो त्रे  
क्षा धारि ॥ ८६ ॥ टीका ॥ ताडनादि करि के रति से विरस हो  
तिर के निय सों है सो कोप के प्रकासे सो प्रौढा धीरा धीरा नायि  
का है जहै अफल फल असिद्ध होय सो फलो त्रेक्षा धीरा है ॥  
**अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धा स्पदा फलो त्रेक्षा उदा-**  
**हरण ॥ दोहा ॥** अलग रही परसोन पद तसो आपनो हात



न्यस्त दे ॥ २३ ॥ अथ सह  
 नृत्प्रसा लदागा ॥ दोह  
 रास प्रकाशे शय ॥ ॥  
 २४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यं  
 को प्रकाशे- सिद्ध प्रकारगा  
 सा होय ॥ २५ ॥ अथ स  
 हेतु त्प्रसा उदाहर  
 कि कीने लोयन लाल ॥  
 न लाल ॥ २६ ॥ टीका  
 रि कै- बकि करि कै ला  
 लालन के लाल नेव भ  
 का है- और लालन दे  
 ल नेव नहीं सिस बों  
 ल हो वो सिद्ध है  
 थ प्रोवा धीरा  
 दोहा ॥ कोष प्र  
 सिद्धत दूसरी है  
 कोष को प्रकाशे  
 सो असिद्ध हो  
 प्रोवा धीरा  
 दोहा ॥  
 मदमती ल  
 रिब के  
 और न



बूझन समता हित जनों रंगे नैन रंग लाल ॥ ८२ ॥  
 अलग रहो पर प्रति परसो आपनो हाल देखो- बूझ  
 समता के वाली सानों लाल रंग से नेत्र रंग्यो है ॥ इह  
 ग रहो पर प्रति परसो या वचन से सुरत से बिरत  
 याते जोड़ा धीरा धीरा नायिका है ॥ और लाल नेत्र  
 को फल बूझ की समता नहीं ताको फल उहराय  
 ना करे याते फलोत्प्रेक्षा है ॥ नेत्र रंगवो असिद्ध है  
 असिद्ध स्पष्ट फलोत्प्रेक्षा है ॥ ८२ ॥ अथ जेष्ठा  
 रस्य रूप कातिशयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ दे  
 तिय होय जह जेष्ठ कनिष्ठा जुक्ति ॥ निकसे बरग  
 रग्य हैं रूप कातिशयोक्ति ॥ ८३ ॥ टीका ॥ जहां दो  
 री छड़े रती होय तहां जेष्ठ कनिष्ठा की जुक्ति है ॥  
 में उमसेय निकसे सो रूप कातिशयोक्ति अलंकार है  
 अथ जेष्ठा कनिष्ठा रूप कातिशयोक्ति उ  
 न ॥ दोहा ॥ कनक लता जुग में कमल जमल  
 पाव ॥ अली रती इक से करत इक से दीवि दुराय ॥ ८  
 दो कनक लतान में निर्मल कमल प्रफुल्लित पा की  
 ली है सो रक से रती करे है- रक से दीवि दुराय की  
 हां दो नायिकान में जेष्ठा कनिष्ठा हैं ॥ और दो कन  
 दान में दो नायिका निकली और अली से नायक  
 याते रूप कातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ८४ ॥ इति  
 अथ परकीया लक्षणा ॥ दोहा ॥ परकीया पर  
 गुप्त करे जो प्रेम ॥ तामु परोहा कन्यका द्वे विधि करे के ने  
 अथ परोहा सापन्ह वानिसयोक्ति लक्षणा  
 जहा व्याही और की करे और सों प्रीत ॥ होय अपन्हव

॥ सायान्द्वरीति ॥ ८६ ॥ टीका ॥ और को व्याही और सो  
 रीति करे सो ऊदा नायिका है- यह अपन्धव सहित होय सो  
 अपन्धव की रीति है ॥ ८६ ॥ अथ परोदा सायान्द्वरीति  
 त्रयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास जितानी ननद को तर  
 त बिना विचार ॥ सो तनु में नहि सो भुसर रहत तमाल मरुत ॥  
 टीका ॥ सास-जितानी-ननद बिना विचार क्यों तरजे है ॥ मरु  
 त में भुसर नहीं तमाल में रहे है पर पुरुष में रत है- यातें पर  
 गिया है- और भुसर सो सन को बोध भयो तमाल में कृष्ण को  
 बोध भयो यह रूप कातिशयोक्ति तनु में नहीं तमाल है- यह  
 अपन्धजति यातें सायान्द्वरीति त्रयोक्ति अलंकार है ॥ ८७ ॥ अथ  
 अनुदा भेद कातिशयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 अनु व्याही पर पुरुष सो- रस अनुदा जुक्ति ॥ वाही को और क-  
 र- भेद कातिशयोक्ति ॥ ८८ ॥ अथ अनुदा भेद काति  
 शयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ पितु वस तन मन वान  
 वस क्यों पावे इक पान ॥ कर्ता करे तुझे रंके है विधि की विधि  
 जान ॥ ८९ ॥ टीका ॥ तन है सो पिता के वस है- मन है सो  
 कृष्ण के वस है ॥ राक स्थान कैसे पावे- कर्ता करे तो हे सके है  
 ब्रह्मा की विधि और है- यहाँ बिना व्याही कृष्ण सो रत है ॥  
 उनहों को पति चाहती है- यातें अनुदा नायिका है ॥ विधि की  
 विधि और ही है यह भेद कातिशयोक्ति है ॥ ८९ ॥ अथ पर  
 कीया भेद ॥ दोहा ॥ गुप्ता और विदग्ध रूपि- लक्षिता  
 ३० कुलटा ४ नि ॥ अनुसयान ५ मुदिता ६ दि ये- पर कीया भिद  
 जानि ॥ ९० ॥ अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयो-  
 क्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ भूत सुरत दूर वे जु निव- सो गुप्ता  
 प्रथमोक्ति ॥ करे जु जोग अजोग को संबंधातिशयोक्ति ॥ ९१ ॥

टीका ॥ जो ऊई सुरत के ताई छिपावे सो पीहली  
 है ॥ जो अजोग कौं जोग करे सो संबधाति शयोक्ति  
 अथ भूत सुरत गुप्ता संबधाति शयोक्ति  
 रन ॥ दोहा ॥ शशितेँ ऊँचे गिरि शिखर-चढी पुष्प के  
 उतरत बिचले तन बसन-कटक लगे अथाह ॥ १०२ ॥  
 चन्द्रमा सैं ऊँचे पर्वत की शिखर के ऊपर पुष्प की चाह सैं  
 उतरता शरीर का कपड़ा बिचल्या घराणा का टालग्या-  
 न सुरत चिन्ह छियाये यातैं भूत सुरत गुप्ता नायिका है ॥  
 शिखर अजोग कौं चन्द्रमा के जोग्य करी-यातैं  
 योक्ति है ॥ १०२ ॥ अथ वर्तमान सुरत गुप्ता यो  
 धाति शयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ वर्तमान रत  
 दूजी गुप्ता जोग ॥ असंबधाति शय उकाति यो गाहि करे  
 १०३ ॥ टीका ॥ वर्तमान सुरत का छिपावा सैं दूसरी गुप्ता सैं  
 जोग है ॥ योग कौं अयोग करे सो असंबधाति शयोक्ति है  
 अथ वर्तमान सुरत गुप्ता असंबधाति शयोक्ति  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ शरीर मुहि मुच्छित परत माहि  
 राखी भरि बाध ॥ पर उपकारी दीन हित नाहि इन सम  
 १०४ ॥ टीका ॥ हे शरीर मोकौं मुच्छित परत इनने बाध  
 रि के शरीर ॥ पैला का उपकार करवा वाला दीनन का  
 इन सम सुरनाथ नहीं-यहाँ बाध भरि वासैं वर्तमान सुरत  
 गुप्ता ॥ और इंद्र जोग है ताकौं अजोग करयो यातैं  
 अलंकार है ॥ १०४ ॥ अथ भविष्याति सुरत  
 अक्रमाति शयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुरत  
 गोप तैं तीजी गुप्ता गाय ॥ अक्रमाति शय उक्ति  
 को साथ ॥ १०५ ॥ टीका ॥ आगे हो जा वाली सुरत

तौई छिपावै सो तीसरी गुप्ता की गाथा है ॥ जहाँ कारणा कार  
को साथ होय सो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १०५ ॥

अथ भविष्यति सुरत गुप्ता अक्रमातिशयोक्ति  
उदाहरन ॥ दोहा ॥ फूलन हित बन सघन में जहाँ झा-  
जाज ॥ पंग धरत हित नव सनवर कटि है कंठक साज ॥

॥ १०६ ॥ टीका ॥ फूलन के वास्ते है आली आज सघन बन में  
जितो ॥ पंग धरतो ही तन का सुन्दर कपड़ा कंठकन के साज  
कोटेगा ॥ यहाँ होवा वाला चिन्ह कहशा ॥ याने भविष्यति सु-  
रत गुप्ता है ॥ और पंग धरतो ही कपड़ा कटेगा ॥ इसी कारन  
आज संग है ॥ याने अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १०६ ॥

अथ बचन विदग्धा चपलातिशयोक्ति लक्ष-  
णा ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा चतुरी करे बचन में साज ॥

॥ १०७ ॥ टीका ॥ चपलातिशयोक्ति जहाँ हेतु जानने काज ॥ १०७ ॥ टीका ॥  
बचन में चतुराई करे सो बचन विदग्धा नायिका है ॥ जहाँ  
कारणा नाम हो सो कारज होवै सो चपलातिशयोक्ति अलंकार  
है ॥ १०७ ॥

अथ बचन विदग्धा चपलातिशयो-  
क्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरि लखि लखि सँ कहि आवैति

जहाँ जमुना न्हान ॥ प्यारी बचन पिपुष से मुनतहि हयै कान  
॥ १०८ ॥ टीका ॥ हरि को देख करि के सखी सँ कहै जमुना न्हा-  
वा की अव हो जाऊगी प्यारी का पिपुष मा बचन मनगो लो

पन विदग्धा नायिका है ॥ और खान हित जावो कारणा है नाका  
सुन वासे ही कृपा को हर्षिवो कारज भयो ॥ याने चपलातिश-  
योक्ति अलंकार है ॥ १०८ ॥

दोहा ॥ बचन विदग्धा होय  
जब देशों सँ अनुराग ॥ स्वयं दूतिया पथिक से कहै बचन करि लाम ॥

॥ अथ क्रिया  
दोहा ॥ क्रिया

॥ अत्यन्त निश्चयान्विते

जब क्रिया में चतुराई करे सो क्रिया विदग्धा  
पहिले काज होय सो

अथ क्रिया विदग्धा

॥

॥ काज कली कर

प्रथम

करिके

हुआ

काज की

यह जनायो तुम मेरा हृदा में  
विदग्धा नायिका है और पहिले प्रफुल्लित  
काज पहिले है कारण पाई है ॥

२११

लक्षिता

सखे ते

धर्म ॥

को

॥ मोति जाल्या

रूप धर्म होय

सो पाहलो

नायिका है ॥

सर्म है ॥ २१२

मेरे राज

प्रति

मन राज ॥ २१३ ॥

मेरे मन वैन

॥ यो

कामल क

सो नै रति के चिन्ह जानि लिये- याँ तें लक्षिता है ॥ और नैन-वैन  
 पसेय हैं तिनको विकलावोरक धर्म है- याँ प्रथम तुल्य योगि-  
 ॥ है और चन्द्रमा कमल उपमान को लाजवोरक धर्म है याँ  
 प्रथम तुल्य योगिता है ॥ ११३ ॥ अथ कुलटा द्वितीय तु-  
 ल्य योगिता लक्षणा ॥ दोहा ॥ बज्रत नरन सौ जोरमें  
 ॥ कुलटा नित्यमान ॥ वृत्ति तुल्य हिते अहित में तुल्य योगिता आ-  
 ॥ ॥ ११४ ॥ टीका ॥ जो बज्रत पुरुषन सौ रमें सो कुलटा नित्य-  
 तो प्रमान है ॥ वृत्ति अहित में समान वृत्ति दोय सो दूसरी तुल्य  
 योगिता है ॥ ११४ ॥ अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगि-  
 ता उदाहरन ॥ दोहा ॥ ऊँच नीच हित अहित में को न तन-  
 क विचार ॥ घालक पातक नरन में करे सुरत उपचार ॥ ११५ ॥  
 टीका ॥ ऊँच नीच में और हित अहित में तनक भी विचारन  
 हीं को मारवा वाला- पालवा वाला आदमीन में सुरत को जतन  
 करे है ॥ अहाँ घराना पुरुषन में सुरत चाहै है ॥ याँ कुलटा नायि-  
 का है ॥ और मारवा-पालवा वालान में रति करि वो समान व्यव-  
 हार है- याँ द्वितीय तुल्य योगिता है ॥ ११५ ॥ अथ प्रथ-  
 म अनुसयाना तृतीय तुल्य योगिता लक्षणा  
 दोहा ॥ वर्तमान संकेत को विगत देखि डराय ॥ कम गुन को  
 अति गुनन संग वर्नन वृत्ति कहाय ॥ ११६ ॥ टीका ॥ वर्त-  
 मान सकान के ताई बिगड़तो देखि डरये सो पहिलो अनुशय-  
 ना नायिका है ॥ कमगुणी को अत्यंत गुणी के संग वर्नन हो-  
 य सो तीसरी तुल्य योगिता है ॥ ११६ ॥ अथ प्रथम अनु-  
 सयाना तृतीय तुल्य योगिता उदाहरन ॥ दोहा  
 छुटावन अरु चैत्ररथ नंदन समसरसात ॥ सब अस्तु सम है पे-  
 अली सुहि अस्तु राजन भान ॥ ११७ ॥ टीका ॥ अहाँ वसंत से



कार हो बासों संकेत विगत्यो यातें प्रथम ॥ ११७ ॥  
 और चैत्ररथ वंदन बड़े हैं ॥ तिनकी समान वृंदावन को  
 न है ॥ यातें तृतीय तुल्य योगिना है । अथ द्वितीय अनु-  
 स्याना दीपक लक्षणा ॥ दोहा ॥ होनहार  
 को सोचै सावि अभाव ॥ दीपक वरार्थ अवसर्य की धर्म  
 ता पाव ॥ ११८ ॥ टीका ॥ होवा वाला संकेत को अभाव  
 नि करि के सोचै सो दूसरी अनुसयाना है ॥ वरार्थ अवसर्य  
 र्म की एकता होय सो दीपक अलंकार है ॥ ११८ ॥ अथ  
 द्वितीयानुसयाना दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 खो तिहार सासर है वन ताल अपार ॥ तह मराल उत्तम  
 क्रीड़ा करत अपार ॥ ११९ ॥ टीका ॥ यहाँ नायिका ने  
 गला संकेत को सोच कर्यो ताकों सरखी नें समुझाई यातें  
 री अनुसयाना है ॥ और मराल उपमान उत्तम पुरुष  
 डा कर वो एक धर्म है यातें दीपक है ॥ ११९ ॥ अथ तृती-  
 या अनुसयाना प्रथम दीपका वृत्ति लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ प्रिय सहैट गो मैं न गई यों ग नित्यारो धृति ॥ पद की  
 आवति होय सो प्रथम दीपका वृत्ति ॥ १२० ॥ टीका ॥  
 स सहैट मैं गयो मैं नहीं गई यों गान करि के धीरज  
 तीसरी अनुसयाना नायिका है ॥ पद की आवृत्ति होय सो  
 ती दीपका वृत्ति है ॥ १२० ॥ अथ तृतीयानुसयाना  
 प्रथम दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरी  
 री कर माल उर धरि आवत नंदलाल ॥ सरसाने लखि  
 इ सरसाने लो बाल ॥ १२१ ॥ टीका ॥ कर में हरी करी  
 में माला धरि करि के नंदलाल को सरसाया जया आवता  
 र्व के ताक्या तीर की तरह विकल भई ॥ यहाँ नायिक को

छेद में सों आयो देखि कै मुख पाई यति तीसरी अनुसयानां हे  
 और सरसाने सरसाने पद एक है अर्थ न्यारो न्यारो है यति प्र  
 यत्न दीपका वृत्ति है ॥ १२१ ॥ अथ मुदिता द्वितीय दी  
 पका वृत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ लखि चित चाही होत  
 मन हय मुदिता जानि ॥ द्वितीय दीपका वृत्ति है अर्थ वृत्ति पि  
 छानि ॥ १२२ ॥ टीका ॥ चित की चाही होती देखि करि कै  
 मन में हय सो मुदिता नायिका मानों ॥ अर्थ की आवृत्ति हो  
 य सो दूसरी दीपका वृत्ति पिछानौ ॥ १२२ ॥ अथ मुदिता  
 द्वितीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ रहि है  
 इकती घर बधु जे हैं सगरे प्रान ॥ बिकसे तिय के हग सुनत  
 ले सगरे गान ॥ १२३ ॥ वधु है सो स्कती घर रहै गो संवेरे सब जावेगा सुनत  
 ही निष केनेत्र बिकसे सब गान फल्यो यहां एकली रहवासों प्रसन्न भई  
 याते मुदिता नायिका है और बिकस्यो फलवो पद न्याय १२३ अर्थ एक है  
 १२३ ॥ अथ गनिका तृतीय दीपका वृत्ति लक्षण  
 दोहा ॥ धन दे जासों रति करे सो गनिका परिमान ॥ आहु  
 ति जु पद अर्थ की तीजी जानि सुजान ॥ १२४ ॥ टीका ॥  
 धन दे जासों रति करे सो गनिका को परिमान है ॥ पद अर्थ की  
 आवृत्ति होय सो तीसरी दीपका वृत्ति जानों ॥ १२४ ॥ अथ  
 गनिका तृतीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा  
 धन दाय की बात सुनि अवन तप हो जात ॥ घर आवत ले  
 खि नयन मन तप होत हर्षति ॥ १२५ ॥ टीका ॥ धन दे वा  
 वाला की बात सुनि के अवन तप हो जावे हैं पर आवता देखि  
 के नेत्र मन हर्षति है यहाँ धन दायक से हर्षावाते गनिका है  
 और तप तप पदवी एक है ॥ अर्थ वी एक है यति तीसरी दीप  
 का वृत्ति है ॥ १२५ ॥ अथ अन्य नायिका वर्णित ॥

अति सुख दीपका वृत्ति

दोहा ॥ सुधादिक भिद हीन जे स्वकिया परकीयारु ॥ स  
 मान्या में होत ये तीन नायिका चारु ॥ १२६ ॥ चौपाई  
 अन्य संभोग दुःखिता जानौं ॥ पुनि वक्रोक्ति गर्विता जानौं ॥  
 बहनों मान बली उर जानौं ॥ तीन नायिका ये सब मानौं ॥  
 १२७ ॥ अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तुप  
 मा लक्षणा ॥ दोहा ॥ निज नायक सों जान तिय रसो न  
 निजन साहिं ॥ अन्य सुरत दुःखिता कहौ दुःखित होय ती  
 ताहि ॥ १२८ ॥ टीका ॥ अपना नायक सों और स्त्री कों से  
 मानि करि के मन में दुःखित होय सो अन्य सुरत दुःखिता ना  
 यिका है ॥ १२९ ॥ दोहा ॥ उपमानरु उपमेय जुग वाक्य धर्म  
 इक होय ॥ बरनत प्रति वस्तुपमा भिन्न भिन्न पद जोय ॥ १३० ॥  
 टीका ॥ उपमान उपमेय दोनै वाक्यन को एक धर्म होय  
 प्रति वस्तुपमा बने है न्यारे न्यारे पद देखि कै ॥ १३१ ॥  
 अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तुपमा  
 चरन ॥ दोहा ॥ विचले भूषन बसन की सोतिन मोहिं  
 न ॥ अधिक लीन की दारि वर कैसे हू नहिं भात ॥ १३२ ॥  
 विचल्या ऊँचा भूषन बसन की सोति सोकों नहीं सुहावै ॥  
 शा लीन की सुंदर दाल कैसे भी नहीं भावे यहाँ सोति के  
 चिन्ह देख्या यातें अन्य संभोग दुःखिता नायिका है जो  
 र्वाद्ध में उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है ॥  
 को न सुहात नहीं भात धर्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं  
 प्रति वस्तुपमा है ॥ १३३ ॥ अन्य जु ॥ नीति मंजरी ॥  
 दोहा ॥ अस्तुति कीने इष्टजन रसै कबहुन कोय ॥  
 न मसलै नर मनहि लोह सलाका होय ॥ १३४ ॥ आवृत्ति  
 पक भूषन वुनही होय वै धर्म्य ॥ होयहि प्रति वस्तुपमा



व की प्रीति ज्ञाति सोहि निरंतर भात ॥ जैसे सरद मयंक  
 कों जोन्ह सुहात ॥ १३८ ॥ टीका ॥ हे सजनी पिय की  
 प्रीति ओकों निरंतर भावे है ॥ जैसे सरद का चंद्रमा की चाँदी  
 कों सुहावे है- यहाँ पिय की प्रीति बहुत भावे है याते  
 चिता नायिका है- और नायक की प्रीति बिब है चंद्रमा  
 दनी प्रति बिब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ १३८ ॥ नीति  
 ट ॥ दोहा ॥ सब जग के व्यवहार की नीति बिना थित  
 भोजन बिना प्राणीन की ज्यों तनु थित नहि आहि ॥ १४० ॥  
 टीका ॥ संपूर्ण संसार का व्यवहार की नीति बिना थित  
 है ॥ जैसे भोजन बिना प्राणीन का तनु की थिति नहीं ॥  
 नीति और व्यवहार की थिति बिब है भोजन और प्राणीन  
 नु थिति प्रति बिब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ १४० ॥  
 य भूषण चंद्रिका वै धर्म्य दृष्टांत उदाहरन ॥  
 दोहा ॥ गर्व समुख मन करत तुव अरि मन सकल नसात  
 ब लौ रवि को उदय नहि तब लौ तम वहरात ॥ १४१ ॥  
 तेरे गर्व के सामने मन करता ही संपूर्ण वैरी नास कों प्राप्त होत  
 है ॥ जब तई सूरज को उदय नही है तब तई तम वहरात  
 यहाँ नशावो वहरावो विरुद्ध धर्म है याते वै धर्म्य दृष्टांत  
 १४१ ॥ अथ निज रूप गर्विता निदर्शना लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ गर्व कौ जब रूप को रूप गर्विता सोय ॥ जुग  
 की रकता निदर्शना सो होय ॥ १४२ ॥ टीका ॥ जब रूप को  
 र्व कौ सो रूप गर्विता नायिका है दोनू वाक्यन की रकता होत  
 सो निदर्शना अलंकार है ॥ १४२ ॥ अथ निज रूप  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ जो मधुराई सुभगता  
 माहि ॥ येरी अली मयंक में यही विमलता आति

टीका ॥ जो सधुरता और सुभगता मेरा मुख में राजे है  
 तारी सखी चंद्रमा में यही निर्मलता है ॥ यहाँ सुदरता को अ-  
 नंतमान है ॥ यों रूप गर्विता नायिका है और सुभगता सधु-  
 री है सोई चंद्रमा में निर्मलता है यह दोन वाक्यन की सकता  
 यों निदर्शना अलंकार है ॥ १४३ ॥ अथ द्वितीय नि-  
 दर्शना लक्षणा ॥ दोहा ॥ वृत्ति पदार्थ की जहाँ और ती-  
 वहराव ॥ यह निदर्शना दूसरी कवि गुलाब मन भाव ॥  
 टीका ॥ जहाँ पदार्थ की वृत्ति और तीव्र वहराव यह दू-  
 सरी निदर्शना गुलाब कवि का मन में भाव है अर्थात् पदार्थ वृ-  
 त्त नाव एक वस्तु की लीला गुन धर्म की है ॥ १४४ ॥ अथ पिय  
 रूप गर्विता द्वितीय निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 पिय चप खंजन चरित गहि मन रंजन करि देत ॥ बचन पियूष  
 विलास लहि कहि मोल नहि लेत ॥ १४५ ॥ टीका ॥ पीतम-  
 का चप है तो खंजन का चरित गह करि के मन को राजी करि  
 देहें ॥ पिय का वचन अमृत का विलास को प्राप्त हो करि के  
 कोन को मोल नहीं ले ॥ यहाँ पिय का रूप को गर्व है ॥ यों  
 पिय रूप गर्विता नायिका है ॥ और खंजन की लीला नैनन  
 ने लीनी अमृत का गुन बैनन ने लीना यों दूसरी निदर्श-  
 ना है ॥ १४५ ॥ अथ तृतीय निदर्शना लक्षणा ॥ दो-  
 हा ॥ किया अस नसत करि करे औरन की उपदेश ॥ तीजो-  
 द्विविधि निदर्शना वर्नत सकल वृधेश ॥ १४६ ॥ टीका ॥  
 असत सत किया करि के औरन की उपदेश करे सो तोसरी  
 दो प्रकार की निदर्शना संपूर्ण वृधन के ईश वर्नते हैं ॥ १४६ ॥  
 अथ भूषण चंद्रिका नायिका रहित असदृश  
 निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ राज विरोधी नशत है

यों जग कों दरसात ॥ चंद उदय में तम निकर छिन छिन छोड़  
 जात ॥ १४४ ॥ टीका ॥ राज का विरोधीन से है ॥ ऐसे जग  
 दरसातो जगो चंद्रमा का उदय में तम को समूह छिन छिन  
 छोड़तो जाय है यहाँ तम हीजिबो अस्त करिया है यों  
 सूर्य निदर्शना है ॥ १४४ ॥ अथ निज गुन  
 दूर्य निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ निज गुन  
 पियाह में सौतिन शिक्षा देत ॥ सब ही पिय बस करन हित  
 गुन चित चेत ॥ १४५ ॥ टीका ॥ अपना गुन में में पीतम  
 स करि के सौतिन कों शिक्षा द्यो है सब ही पीतम का  
 वाके वास्ते चित का चेत में गुन सीखे यहाँ गुन सों में  
 कों बस करों हों जैसे कह वासे निज गुन बर्बिता नायिका  
 और गुन जो सत अर्थ तसों सौतिन कों शिक्षा दीनी यात  
 दूर्य निदर्शना अलंकार है ॥ १४५ ॥ अथ मान वती व्य  
 रंक लक्षणा ॥ दोहा ॥ अपर तिया के दरस ते नास कड़े ते  
 य ॥ संगमादि करि मान सें मानवती तिय होय ॥ १४६ ॥  
 और तिया के दर्श ते नास कड़यो ते देखो संगमादिक करि के  
 न सें मान वती नायिका होय है ॥ १४६ ॥ दोहा ॥ उपमान  
 उपमेय में वै लक्षणा व्यतिरेक ॥ अधिक न्यून सम भाव  
 ताको त्रिविधि विवेक ॥ १४७ ॥ टीका ॥ उपमान उपमेय में  
 विशेषता होय सो व्यतिरेक अलंकार है ॥ अधिक न्यून  
 भाव करि के ताको तीन प्रकार को जान है ॥ १४७ ॥ अथ  
 किया मानिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरन ॥ दोहा  
 लखि पिय बिनती रिस भरी चित वै चंचल आय ॥ तब स  
 न से हरान में लाती अति छवि छाये ॥ १४८ ॥ टीका ॥  
 बीनती देखि के रिस की भरी चंचल आय सें चित वै

तव खंजन से दृगन में लाली अत्यंत छवि में छवि है  
 यहाँ पिय की बीनती तैं रिस की भरी ऊई कोंफें है  
 याते स्वकीया मानिनी है ॥ और नेत्र उपमेय में लाली  
 सें घरी छवि छाई याते अधिक व्यतिरेक है ॥ १४८ ॥  
 अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरन  
 दोहा ॥ सापराध लखि पियाहि तिय जब दृगं देत न  
 वाय ॥ तव खंजन से चखन में चंचलता न रहाय ॥ १४९ ॥  
 टीका ॥ तिय है सो पिय कों अपराध सहित देखि के  
 जब दृगन कों नवा देहै तव खंजन से नेत्रन में चंच-  
 लता नहीं रहे ॥ यहाँ पीतम कों अपराध सहित दे-  
 खि के दृगन कों नवावे है ॥ याते परकीया मानिनी है  
 और नेत्रन में चंचलता नहीं यह न्यूनता है याते न्यु-  
 न व्यतिरेक है ॥ १४९ ॥ अथ गानिका मानिनी स-  
 म व्यतिरेक उदाहरन ॥ दोहा ॥ सागस लखि धन  
 दानि कों सौंन गहै मन मारि ॥ तव शशि सो मुख बा-  
 ल को होय श्यामता धारि ॥ १५० ॥ टीका ॥ धन दानी  
 कों अपराध सहित देखि के मन कों मारि के सौंन कों ग-  
 है ॥ तव चंद्रमा शरीको बाल को मुख श्यामता धारि  
 के होय यहाँ धन दानी कों देखि के सौंन गहै है याते  
 गानिका मानिनी ॥ और शशि के मुख के समता है ॥  
 याते सम व्यतिरेक अलंकार है ॥ १५० ॥ अथ द्वाद-  
 श नायिका वर्नना ॥ दोहा ॥ प्रोपित पति का खंडि-  
 ता कलहां तरिता जानि ॥ विप्र लब्ध उत्कंचिता चासक स-  
 ज्जा मानि ॥ १५१ ॥ रुस्वाधीन पतिका अपर अभिसारिका  
 निहारि ॥ नवम प्रवत्स्य त्रैयसी कही कोवन निधोरि ॥



१५२॥ चौयाई ॥ दशम आगमिष्यत पतिका तह  
 सकादश आगत पतिका कहि ॥ परी स्वाधीन  
 वासा ॥ में बनी लखि ग्रंथ ललामा ॥ १५३॥ २,  
 पित पतिका लक्षणा ॥ होहा ॥ गये पीय  
 मे विरह विकल जो होय ॥ सो है प्रोषित भक्ता  
 शौ दशा जुन जोय ॥ १५४॥ दशा दशा नाम ॥  
 अभिलाषरु चिंता स्मरण युन कथन रु उद्वेग ॥  
 धि प्रलाप उन्माद सरन जुन वेग ॥ १५५॥ अथ  
 प्रोषित पतिका लक्षणा ॥ होहा ॥ ह्यो  
 दि को पूरव लक्षणा धारि ॥ वर वरानि है साथ  
 सहोक्ति निर्धारि ॥ १५६॥ होहा ॥ यहां सुग्रा  
 प्रोडा परकीया सामान्या को पहिलो लक्षणा धार  
 य शब्द करि के सुन्दर बर्नन होय सो सहोक्ति निर्धारि  
 १५६॥ अथ प्रोषित पतिका सहोक्ति  
 होहा ॥ कहु दुवराई लखि परी पिय वियोग  
 दुवराई संग सेवता छाई सकल शरीर ॥ १५७॥  
 योरी सो दुवराई जानि परी पीतल का वियोग को  
 सैं दुवराई के साथ सेवता सम्पूर्ण शरीर में छाई  
 हों थोडी दुवराई सैं सुग्रा प्रोषित पतिका है ॥ जो  
 दुवराई के साथ सेवता बनी यतैं सहोक्ति है ॥ १५८॥  
 अथ विनोक्ति लक्षणा ॥ होहा ॥ सो विनोक्ति  
 सुन जहाँ होय कहुक विन होन ॥ द्वितीय  
 कह विना पावे सोम नवीन ॥ १५९॥ होहा ॥  
 प्रसुते कह विना हीन होय सो विनोक्ति है कह  
 ना नवीन शोभा पावे सो दूसरी विनोक्ति है ॥ १६०॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका अथम विनोक्ति  
उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिरहानल मल जर निमिरारखीरे  
कि प्रवीन ॥ तउ जानी अलीन नै चिन लाली छवि छीन ॥  
१५८ ॥ टीका ॥ बिरहानल की मलकी जरनि प्रवीन नै जे  
व में रोके राखी ॥ तौ भी सखीन नै लाली विना छीन छवि  
जानी ॥ यहाँ बिरह की मर नायिका नै रोकी सखीन नै जानी  
याते मध्या प्रोषित पतिका नायिका है और ललाई बिना  
छवि छीन भई याते पहिली विनोक्ति है ॥ १५८ ॥ अथ  
प्रौढा प्रोषित पतिका द्वितीय विनोक्ति उदाहरन  
दोहा ॥ सब तनु लाली दुरि गई जरि बिरहानल ताप ॥ त  
उ मन मोहत अलीन को पीरी प्रभा जमाय ॥ १५९ ॥ टीका ॥  
म्युरी तन में लाली छिपि गई बिरहानल की ताप से जी  
रि के तौ भी अलीन को मन मोहै है जमाय पीरी प्रभा  
ने यहाँ प्रसा बिरह से प्रौढा प्रोषित पतिका नायिका है  
लाली चिना पीरी प्रभा नै अधिक प्रभा पाई याते दूसरी  
विनोक्ति है ॥ १५९ ॥ अथ समा शोक्ति परिकर लक्ष  
ण ॥ दोहा ॥ समा शोक्ति प्रस्तुत विषे अप्रस्तुत फुरि जाय  
आशय कहे विशेषणहि सो परिकर उहराय ॥ १६० ॥ टी  
का ॥ प्रस्तुत पद के विषे अप्रस्तुत फुरे सो समा शोक्ति अ  
लंकार है विशेषण पद में आशय कहे सो परिकर अलंका  
र उहरावो है ॥ १६० ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका  
समा शोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उद्धव देख्य अलिय  
है है कपटी वे पीर ॥ तजि वर विमला मालती सेवत कला  
कनीर ॥ १६१ ॥ टीका ॥ हे उद्धव देखो यह अलि कपटी है  
वे पीर है अर्थात् निमल मालती को तजि करिये कनीर की

कली कों सेवै है ॥ यहाँ कल्प है चार कदम चारों परकीय  
 प्रोषित पतिका नायिका है ॥ और भक्त दोहा ली कनोर की-  
 कली आसंगक हैं आते सखा शक्ति अलंकार है ॥ १६२ ॥  
 अथ गानिका प्रोषित पतिका परिकर उदाहरन  
 दोहा ॥ पाती प्रीतम धनद की वांचित प्रिया प्रवीन ॥ तन  
 लखि हिलकर बदन में सरि गन शीतल कोन ॥ १६३ ॥ टी-  
 का ॥ प्रीतम धनद की पाती प्रवीन प्रिया ने वाचतां हिम-  
 कर बदन में देखि देखि के सखीन को गन शीतल कसे  
 यहाँ धनद की पाती से गानिका प्रोषित पतिका नायिका है  
 और हिंस कर विशेषरा पद में शीतल करवो आशय है  
 आते परिकर अलंकार है ॥ १६३ ॥ अथ खंडिता लक्ष्मी  
 दोहा ॥ अन्य तिया संयोग के चिन्ह धारि निज गात ॥ त-  
 य खंडिता जासु के आवै पिय परमात ॥ १६४ ॥ चिंता तूनी  
 भाव पुनि अंगु पात संताप ॥ चेष्टा हैं निश्वास अरु आदि  
 अस्कुहालाप ॥ १६५ ॥ अथ परिकरां कुर अलेस लक्ष्मी  
 रा ॥ दोहा ॥ आशय सहित विशेष्य पद पोर कर अंकु-  
 सोय ॥ बहृत अर्थ पद में कहे अलेस अलंकार होय ॥ १६६ ॥  
 टीका ॥ विशेष्य पद आशय सहित होय सो परिकरां  
 कुर अलंकार है ॥ पद में बहृत अर्थ कहे सो अलेस अलंकार  
 र होय है ॥ १६६ ॥ अथ सुरधा खंडिता परिकरां कुर  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात आय निशि वास को जानव  
 तावो धाम ॥ भाल लाल लखि लाल को रही नाय शिर वाम ॥  
 १६७ ॥ टीका ॥ सबै ही आकर के रात्रि में वस वाको अ-  
 बतायो लाल को भाल लाल देखि के वाम है सो शिर  
 यहाँ सापराध देखि शिर नवा वाम सुरधा खंडिता

नायिका है और भाल विशेष्य पद में सापराध परतो आशय  
 है ॥ याँतै पार करं कुर अलंकार है ॥ १६७ ॥ दोहा ॥ ज्ञापसु  
 वरार्य वरार्य करि वरार्य अवरार्य विजोय ॥ तृतीय अव  
 रार्य अवरार्य करि कवि गुलाब मत होय ॥ १६८ ॥ टीका  
 श्लेष अलंकार है सो उपमेय उपमेय करि कै उपमेय उपमा  
 न करि कै और तोसरा उपमान उपमान करि कै गुलाब क  
 वि का मत में होय है ॥ १६८ ॥ अथ मध्या खंडिता व  
 रार्य वरार्य श्लेष ॥ दोहा ॥ दंपति कंपत विरस बस  
 बोलत करत न लाग ॥ इक एक चितवत चलत नहि भरे खरे  
 हरा राग ॥ १६९ ॥ टीका ॥ दंपति जो नायिका नायक है सो  
 विरस के बस में कंपते हैं ॥ विरस को अर्थ नायिका में विना  
 रस नायक में विशेष रस बोले नहीं मिलाप करे नही इक  
 एक देखे है चले नही नेव खरे राग में भरे हैं राग नाम प्रेस  
 को और राग को है ॥ यहाँ नायक की सदोष देखि काम में  
 विरस भई लाज से बोलि नही सकी याँतै मध्या खंडिता  
 है और दोनू उपमेय हैं विरस और राग पद के दोय  
 अर्थ हैं याँतै वरार्य वरार्य श्लेष है ॥ १६९ ॥ अथ व  
 रार्य अवरार्य श्लेष ॥ दोहा ॥ द्विज कपि हित कर  
 शील घर अरि हारक ररा धीर ॥ पालक दीन अनंत के गौर  
 श्याम रघुवीर ॥ १७० ॥ टीका ॥ गौर रघुवीर कैसे है  
 द्विज कपि भगवान से हित करे है शील के घर  
 हारक है ररा में धीर है घरा गरीवन के  
 पालक है ॥ श्याम रघुवीर कैसे है ॥ द्विज पक्षी जटाशु क  
 पि चानरान से हित करे है अनंत आषावतार लक्ष्मण जी  
 के पालक है ॥ यहाँ गौर रघुवीर उपमेय है श्याम रघुवी

उपमान हैं याते वराय वराय ज्ञेय है ॥ १७० ॥ कापिनीति  
 लह के साथी सरोच मधुसूदन ॥ इति मोदिनी ॥ दो०  
 सुखद मदन दर वीर्य घर राज राज हित धीर ॥  
 तज शुचि भूति धर गिरिजा पति रघुवीर ॥ १७१ ॥  
 गिरिजा पति कैसे हैं सुख स्वर्ग का दाता है मदन कामदे  
 व का विदीर्षी करना वाला है ॥ वीर्य जो शुक्र प्रभाव तेज  
 सामर्थ्य इनके घर हैं ॥ राज राज कुवेर सौ हित हैं ध  
 रज वान है ॥ उमा पार्वती जलज चन्द्रमा ॥ शुचि आगि  
 ति भस्म ॥ इनकों धारण करने वाला है ॥ रघुवीर कैसे हैं  
 सुख आनंद का दाता है मद नहीं है ॥ दर भय नहीं है  
 र्य जो तेज सामर्थ्य के घर है ॥ राजान के राजा जो सार्वभौम  
 जिनसे हित है ॥ धीर पंडित और धीरज वान है उमा  
 ति कांति ॥ जलज मोती ॥ शुचि अंगार शुद्ध मंत्री ॥  
 ति ॥ इनकों धारण करने वाले हैं ॥ यहाँ रघुवीर उपमेय हैं  
 गिरिजा पति उपमान हैं ॥ याते वराय वराय ज्ञेय है ॥ १७२ ॥  
 सुख शर्मगाना केच ॥ वीर्य शुक्र प्रभावेच ॥ तेजः  
 र्य यो रपि ॥ राज राजः कुवेर पि सार्वभौमे सुधा करे ॥  
 धैर्यो चिते स्वरे बुधे लीवतु कुकुमे ॥ उमाः तसी है म  
 हारिद्र कीर्ति कान्ति सु ॥ शुचि श्रीष्माग्नि अङ्गरे प्यास दे  
 शुद्ध मंत्री ॥ इति मोदिनी ॥ चिंता तने  
 अवराय ज्ञेय ॥ दोहा ॥ वाहक वृष दाहक  
 ति अन चाहक काम ॥ अति चाहक वन चरन के  
 न वाम ॥ १७३ ॥ टीका ॥ राम कैसे हैं धर्म के चलावे  
 ॥ अधर्म के दाहक हैं कामना के अत्यंत अन  
 के अति चाहक हैं ॥ वाम कैसे हैं बैल के

हक हैं। अकल्याण के दाहक हैं॥ कामदेव के अत्यंत आ-  
 न चाहक हैं॥ भूत पिशाचादिक के अति चाहक हैं॥ जै-  
 राम चास मैने नहीं सुमरे॥ यहाँ राम और शिव उपमान  
 याते अवराय अवराय ज्ञेय है॥ १७२॥ अथ अप्र-  
 स्तुत प्रशंसा लक्षणा॥ दोहा॥ जहाँ प्रस्तुत के कार-  
 ण अप्रस्तुतहि प्रशंस॥ होय तहाँ भूषण यह अप्रस्तुत  
 प्रसंस॥ १७३॥ टीका॥ जहाँ प्रस्तुत के वाली अप्रस्तुत  
 तो प्रसंसे तहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होय है॥ १७३  
 छप्पय॥ वरान अप्रस्तुतहि सौहि जहाँ प्रस्तुत निकसै।  
 अरु संबध हि सौहि अलंकृति यह निति विकसै॥ समस्त  
 रूप के सौहि जहाँ सम रूप जु निकरै॥ सो सा रूप्य निब-  
 ध नहि भिद यहिलो उधरै॥ निकसै विशेष सामान्य में  
 सो सामान्य निबंधना॥ सामान्य विशेषहि में कहे सहे  
 विशेष निबंधना॥ १७४॥ दोहा॥ कारण में कारज क-  
 रै हेतु निबंधन सोय॥ कारज में कारण रदैं काय निबंध-  
 न होय॥ १७५॥ अथ जोड़ा खंडिता सास्य नि-  
 बंधन उदाहरन॥ दोहा॥ वक धरि धोरज चापट करि  
 जो वनि रहै मराल॥ उधरै अंत गुलाव कवि अपनी वो-  
 ननि चाल॥ १७६॥ टीका॥ वक है सो धोरज धरि को-  
 र कपट करि के जो मराल चनि के रहै है गुलाव कवि कहै  
 है अंत में उधरै अपनी चालो चाल में। यहाँ सत्य ना-  
 यक सो नायिका चतुराई करि कहे है याते जोड़ा खंडिता  
 है। और वक इस वरिण वरिण समान रूप मराल का पोट  
 वरिण वो निकसै है। याते सास्य निबंधना है॥ १७६  
 अथ पर जोड़ा खंडिता सामान्य निबंधना॥

उत्ताहरन ॥ दोहा ॥ सोख न सानै गुरुन की  
हित सन सानि ॥ सो पीछतावे तासु फल ललन भये  
हानि ॥ १७६ ॥ टीका ॥ गुरुन की सीख नहीं मानै  
अहित कों हिन सानि फार के सीता का फल में  
हे! ललन हित की हानि भयापे यहाँ नायक कों सतोष  
सिखै नायिका कहै है ॥ मैंने घर कान की सीख नहीं मानै  
तो दुख पाई याते परकीया खंडिता नायिका है और  
हिले सामान्य वचन सब पै है फेर पीछतावे एक  
यक को ही निकसे है यह विशेष है याते सामान्य  
बंधन है ॥ १७७ ॥ अथ गानिका खंडिता विशेष  
निबंधन उत्ताहरण ॥ दोहा ॥ लालन सुर तरु  
ह जनहित करी होय ॥ तिन हू को आदरन है यों  
बुध लोग ॥ १७८ ॥ टीका ॥ हे! लालन सुर तरु और  
र भी जनहितकारी होय तिन को भी आदर नहीं होय  
ऐसे बुध लोग मानै है ॥ यहाँ नायक कों सतोष देखि  
धनवान की निंदा करे है याते गानिका खंडिता नायिका  
है और कलम ब्रह्म कुबेर को वर्णन है यह विशेष है  
फेर सब धनवानन पै लगै है याते विशेष निबंधन  
है ॥ १७९ ॥ अथ भूषण चन्द्रिका कारण निबंधन  
ना ॥ दोहा ॥ लीनों राधा मुख रचन विधि नै सार  
साम ॥ तिहि सग होय अकाश यह शशि में दीखत  
प्रयास ॥ १८० ॥ टीका ॥ राधा को मुख रच बाकी  
नै तमाम सार लियो ताका सग में होकर के यह  
में कालो अकाश दीखै है यहाँ राधा को मुख  
कारन को वर्णन है ॥ तामें मुख कारजकी

निकसे है याते कारन निबंघना है ॥ १०८ ॥ अथ कार्य  
 निबंघना उदाहरन ॥ दोहा ॥ गुव पद नख की धुति  
 कहुक गड़ धोवन जल साथ ॥ तिहि कन मिलि दीध मयन में  
 चंद भयो है नाय ॥ १०९ ॥ टीका ॥ गुम्हार पद का नख की  
 कहुक धुति धोवन जल के साथ गई नाका कनका मिलि की  
 के दीध सा मयन में है नाय चन्द्रमा चन्द्रो है ॥ यहाँ चंद्र  
 मा कारज को वेनन में नख धुति कारन की बड़ाई है याते  
 कार्य निबंघना है ॥ ११० ॥ अथ कलहो तरिता ल-  
 चरा ॥ दोहा ॥ पिय आये माने नहीं फिरि पाहे पाहि  
 नाय ॥ कलहो तरिता नायिका कही कविन सुरव पाय ॥ १११ ॥  
 भांति और सताय मुनि संमोहर निश्वास ॥ ज्वर रु प्रताप दि  
 क सकल आकी चेष्टा भास ॥ ११२ ॥ अथ प्रस्तुतां कुर  
 लहरा ॥ दोहा ॥ प्रस्तुत वर्णन करि अपर प्रस्तुत या  
 तन होय ॥ तहाँ प्रस्तुतां कुर कहन कवि गुलाब बुध लोग  
 ११३ ॥ टीका ॥ प्रस्तुत को वर्णन करि के प्रस्तुत को प्रवा  
 स होय गुलाब कवि कहे है बुध लोग है सो तहाँ प्रस्तुतां  
 कुर अलंकार कहे है ॥ ११४ ॥ अथ सुरधा कलहो तरि-  
 ता प्रस्तुतां कुर उदाहरन ॥ दोहा ॥ अली न राके  
 सानिती अली अनत जब जाय ॥ ता पाहे मन मानि दुरव कसे  
 लीगा ॥ ते न के लीने



अथ पर्यायोक्त लक्षणा ॥ दोहा ॥ जहं रचना  
 बात सौ पर्यायोक्त प्रकार ॥ जहं मिस करि कारज को  
 य भेद निर्धार ॥ १८६ ॥ टीका ॥ जहाँ रचना सौ बात  
 सो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ जहाँ मिस करि के कारज  
 दूसरो भेद है निर्धार निश्चय ॥ १८६ ॥ अथ मध्याक  
 लहां तरिता उदाहरन ॥ दोहा ॥ नंबर दर्शन  
 ख लघु आदि अंक को भाव ॥ सादर राख्यो ते न सो  
 ज नहि आव ॥ १८७ ॥ टीका ॥ नंबर दर्शन लाख लघु  
 न च्याँन का आदि अंक को भाव तेने आदर सहित  
 राख्यो सो है अली आज नहीं आवे ॥ यहाँ नायिका ने  
 क को बुलावो चाह्यो याते मध्या कलहां तरिता नायिका  
 और नंबर को ना दर्शन को द। लाख को ल। लघु को ल। क  
 में नंदलाल नामनिकस्यो यह रचना सौ बात कही याते  
 योक्त अलंकार है ॥ १८७ ॥ अथ प्रौढा कलहां  
 ता द्वितीय पर्यायोक्त उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 ब नहि मान्यो मोर मत क्यों अब नचने निकाम ॥ मो  
 र कत शौन मे लो ओ हों घन श्याम ॥ १८८ ॥ टीका ॥  
 मेरो मत नही मान्यो अब बिना काम क्यों नचै है मेरो  
 र भरकै है आराम भया पै घनश्याम कों लियाऊगी यही  
 तब वासों और सखी को कह्यो नही मानि वासों प्रौढा  
 र भरक वाका मिस करि के नहीं जावो कारज साध्यो या  
 ते दूसरो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८८ ॥ अथ व्याज सु  
 नि लक्षणा ॥ दोहा ॥ इक को निहा सतुनि मिस सु

अस्तुति का भिर कर के वाही की अस्तुति निंदा दोस्ते  
 पैला की निंदा अस्तुति से पैला की अस्तुति निंदा होवे-  
 १८८॥ **दोहा** ॥ पर की अस्तुति से जवै पर की अस्तुति  
 साज ॥ व्याज स्तुति यों पाँच विधि कहत सकल काबिरा  
 ज ॥ १८९॥ **टीका** ॥ पैला की अस्तुति से जब पैला की अस्तु  
 ति साजै ऐसे व्याज अस्तुति पाँच प्रकार से सम्पूरी काबि  
 राज कहें हैं ॥ १९०॥ **अथ वाही की निंदा से वा-**  
**ही की स्तुति ॥ दोहा** ॥ रूख सुदामादिकन के भरि दीने भंडा  
 र कंसादिक कीने निधने है हरि विनहि बिचार ॥ **टीका** ॥  
 है हरि सुदामादिक कंगानन कों घणो धन दीनों कंसादिक कों  
 नाश कयो बिना ही बिचार यहाँ कृष्ण की निंदा में स्तुति है  
 यानि प्रथम व्याज स्तुति है ॥ १९१॥ **अथ पर की या क-**  
**लहौ तरिता वाही की स्तुति से वाही की निंदा**  
**दोहा** ॥ तेरी सुघराई सली मो पै कही न जाय ॥ पर भय  
 भरि बोली न तब अब कर मलि पछिताय ॥ १९२॥ **टीका**  
 है सरखी तेरी चतुराई मो पै कही नही जाय ॥ तब पैला का-  
 भय में भरि कर के बोली नही अब हाय मसलि कर के  
 पछितावे है ॥ यहाँ पर भय से परकीया कलहौ तरिता है  
 और सुघराई स्तुति में सरखता निंदा निकसे है यानि द्विती  
 व्याज स्तुति है ॥ १९३॥ **और की निंदा से और की**  
**स्तुति ॥ दोहा** ॥ दश शिर कुमति करान नै कस्यो राम-  
 अपकार ॥ तज्यो विभीषन ताहि सो कीनीं काम उदार ॥ १९४॥  
**टीका** ॥ कराल कुमति चालो दश शिर है ऊँ राम की अ  
 पकार कर्यो ॥ ताँको विभीषन नै तज्यो सो बड़ो काम कर्यो  
 यहाँ रावन की निंदा से विभीषन की अस्तुति है यानि तृती

श्रौत व्याज स्तुति है ॥ १८३ ॥ श्रौत की स्तुति  
 श्रौत की निंदा ॥ दोहा ॥ धन्य विभीषन राम  
 यो सरन सुजान ॥ धिक् है जाने अनुज अस दियो  
 निदान ॥ १८४ ॥ टीका ॥ विभीषन को धन्य है  
 म के सरगो आयो ताको धिक्कार है जाने ऐसा भाई को  
 श्रव्य निकासि दियो यहाँ विभीषन की अस्तुति में  
 की निंदा है याते चौथो व्याज अस्तुति है ॥ १८५ ॥  
 स्तुति में श्रौत की स्तुति ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य  
 राधिका पाये पति भगवान् ॥ धन्य राधिका मात जिहि  
 सुना सुजान ॥ १८६ ॥ टीका ॥ राधिका को धन्य है  
 भगवान् पति पाया राधिका को माता को धन्य है  
 जान सुना जाई यहाँ राधिका की स्तुति से राधिका की  
 की स्तुति है याते व्याज अस्तुति को पाँचवों भेद है ।  
 अथ व्याज निंदा लक्षणा ॥ दोहा ॥ पर की  
 से जहाँ पर की निंदा होय ॥ तहाँ व्याज निंदा इकहि भेद  
 त कवि लोय ॥ १८७ ॥ टीका ॥ जहाँ पैला की निंदा से  
 की निंदा होय तहाँ व्याज निंदा को एकही भेद कवि  
 हैं हैं ॥ १८८ ॥ अथ रागिनी कलहो तरिता  
 ज निंदा उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुर तेरु सम पिय  
 गयो करि बिनती उपचार ॥ भाल सोर तू निंद्य है निंद्य  
 पिकार ॥ १८९ ॥ टीका ॥ कल्प वृक्ष की समान पीतम  
 ताजि करि के गयो बानती जतन करि कोहे मेरा भाल तू  
 श्रौत तेरो नाप करवा वात्सो निंदा लायक है यहाँ  
 गवाये पाँछवाँ है यत्किं कानका कलहो तरिता है श्रौत  
 की निंदा में ब्रह्मा की निंदा है याते व्याज निंदा अनांका

६७॥ अथ विप्र लब्धा लक्षणा ॥ दोहा ॥ तिय  
 नकेत निकेत मे जाय न देखे पीय ॥ कही विप्र लब्धा यहै  
 दुखित होय अति जीय ॥ १८८ ॥ निवेदक निप्रवास पुनिस  
 खन उराहन सानि ॥ अश्रुपात चितादि ही याकी चेष्टा जा  
 नि ॥ १८९ ॥ अथ प्रथम द्वितीयाक्षेप लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ आक्षेप सु कहि आपु ही फेरि बात विचारि ॥ क  
 हि बच करि निषेध सो द्वितीयाक्षेप निहारि ॥ २०० ॥ टी०  
 आपही कह करि के विचार करि के बान कौ फेरि सो प्र  
 थमा क्षेप है ॥ बचन कह करि के निषेध करि सो दूसरो  
 आक्षेप है ॥ २०० ॥ अथ मृगया विप्र लब्धा प्रथमा  
 क्षेप उदाहरन ॥ दोहा ॥ अबही घर चलि के अली उ  
 दय होन दे चंद ॥ यौ कही भरी भामिनी परी सेज दुति  
 मंद ॥ २०१ ॥ टीका ॥ अबही घर चलि के अली चंद्रमा  
 को उदय होवा है ॥ ऐसे कह करि के भरी भामिनी है सो  
 मंद डोत से सेज पे परी ॥ यहाँ अबही चलि के चंद्रमा  
 को उदय होवा है या पराधीन बात से मृगया विप्र लब्धा  
 नायिका है ॥ और अब ही चलि यौ बात कह करि के के  
 री चंद्रमा उदय होवा है याते प्रथमाक्षेप है ॥ २०१ ॥ अ  
 थ मृगया विप्र लब्धा उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई  
 नही सहेट में आली भूली चाल ॥ भापि बचन कह कोप क  
 रि मौन गही बर वाल ॥ २०२ ॥ टीका ॥ सहेट में नहीं  
 आई है आली चाल भूली हौं यौ बचन भापि करि के कह  
 कोप करि के सुंदर बाल ने मौन गही यहाँ काम से योडो  
 कोप कर्यौ और ताज से मौन गही याते मृगया विप्र लब्धा  
 नायिका है और सहेट में आवो कह करि के निषेध

दूसरो आक्षेप है ॥२०२॥ अथ तृतीया  
 या भास लक्षणा ॥ दोहा ॥ गुप्त निषेध  
 धि तृतीया क्षेप निकास ॥ है न विरोध विरोध सो  
 धा भास ॥२०३॥ टीका ॥ छिपि वा तो मने करि वो  
 जाहर में कर वो होय सो तृतीया क्षेप को निकास है  
 तो नही होय विरोध सो भासै सो विरोधा भास  
 २०३॥ अथ प्रौढा विप्र लब्धा तृतीया क्षेप  
 हरन ॥ दोहा ॥ आली घर चलि चलतही करि हैं प्रान  
 यान ॥ पङ्कचन ही घर होय गो येरी मोहि मसान ॥  
 टीका ॥ हे आली घर चलि चलतों ही प्रान पयान  
 पङ्कचता ही येरी मोकों घर मसान होय गो यहाँ उत्कर्ष  
 चन वोलै है बातें प्रौढा विप्र लब्धा नायिका है और  
 चलि यह विधि बचन है घर चलती ही मारि जाऊं गी  
 ते मति चलै यह निषेध छिप्यो है याते तीसरो  
 है ॥२०४॥ अथ परकीया विप्र लब्धा विरोधा  
 स उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास ननद या तान को आर  
 नीति वाय ॥ अब आली घर गसन की सुधि आयें  
 जाय ॥२०५॥ टीका ॥ सास ननद द्यौरानी  
 नीति सुवा करि कै आई हे आली अब घर चलि वाकी  
 सुधि आया सों शरीर की सुधि जाय है ॥ यहाँ  
 जितानीन को सुवा करि कै आई जैसे कह वासों पर  
 या विप्र लब्धा नायिका है ॥ और सुधि आवा से सुधि  
 जावो विरोध सो भासै है विरोध नहीं याते विरोधा  
 अलंकार है ॥२०५॥ अथ रानिका विप्र लब्धा  
 भास उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई वर सन वा

में करि धन आसा धाम ॥ भई बिहाल निरास लखि  
 न प्रयामन धन प्रयाम ॥ २०६ ॥ टीका ॥ बरसना  
 लमें धन की आसा करि कै ई धाम में आई बिहाल  
 ई निरास भई धन प्रयाम जो मेघ हैं उनको देखि कै  
 न प्रयाम जो श्री कृष्ण उनको नहीं देखि कै यहाँ धन  
 की आसा करि कै धाम में आई याते गनिका विप्र लब्धा  
 गीयका है और धन प्रयाम है सो धन प्रयाम नहीं यह वि  
 ध सो दोख्यो विरोधा भास अलंकार है ॥ २०६ ॥ अथ  
 उत्कंठिता लक्षणा ॥ दोहा ॥ संकेत स्थल में गई पी-  
 न आयो होय ॥ ताको कारन चित वै उक्ता कहिये सो-  
 ॥ २०७ ॥ जंभा आगई अरति कंप रुदन संताप ॥ स्वा-  
 धस्था कथनादि ये याकी चेष्टा याप ॥ २०८ ॥ अथ  
 विभावना लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारन विन जह काज  
 है नह विभावना मानि ॥ लघु कारणा ते काज है दूजो भेद  
 जानि ॥ २०९ ॥ टीका ॥ जहाँ कारन विना काज होय  
 जहाँ विभावना मानो ॥ छोले कारणा सैं कारज होय सो  
 दोसरो भेद जानो ॥ २०९ ॥ अथ सुरधा उत्कंठिता  
 विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय औहैं औहैं न  
 सोचत रहित उमंग ॥ पिय रानी लाये बिना केसर के  
 रंग ॥ २१० ॥ टीका ॥ पीतम आवेगा अथवा नही  
 आवेगा उमंग रहित सोचतां केशर लगाया बिना केशर  
 के रंग सी पीला जई ॥ यहाँ पीतम आवेगा अथवा नही  
 आवेगा सेस उमंग रहित सोचै है यानि सुरधा उत्कंठिता  
 गीयका है ॥ और केसर कारन है ताका लगाया बिना केस  
 के रंग सी पीला जई ॥ यहाँ कारन होय जानो प्रथम विभावना है

२१०॥ अथ मध्या उत्कंठिता द्वितीय  
उदाहरण ॥ दोहा ॥ खानि सनेह सकोच की सौ  
न निहारि ॥ भई विकल भट्ट शशि किरनि भई  
र फारि ॥ २११॥ टीका ॥ सनेह सकोच की  
सो सुनों घर देखि के विकल भई चंद्रमा की  
रनि है सो हृद को फाड़ि करि के घर भई यहाँ  
सनेह की खानि में मध्या उत्कंठिता नायिका है ॥  
इसा की कोमल किरनि थोड़ा कारण से पार होवे  
कारज भयो याते दूसरी विभावना है ॥ २११॥ अथ  
चतुर्थ विभावना लक्षणा ॥ दोहा ॥ कार  
न होय जहं प्रतिबंधक हूँ होत ॥ चवय अकारन  
तैं कारज करे उद्योत ॥ २१२॥ टीका ॥ जहाँ प्रति  
जो रोकवा वालो है ताके होता छत्ता वी पूरन कारज  
सो तीसरे विभावना है ॥ अकारन वस्तु तैं कारज  
र सो चौथी विभावना है ॥ २१२॥ अथ प्रोढा  
ता तृतीय विभावना उदाहरण ॥ दोहा ॥  
वारि बयार तउ कुरसि गई विन नाह ॥ आयो  
हेतु नहि यों सोचत चित चाह ॥ २१३॥ टीका ॥  
वसै है बयार चलै है तौ भी नाह विना बलि गई  
तम जाई वसै नही आयो ऐसे चित को चाह में  
चै है ॥ यहाँ कुरसि वसै चित की चाह में प्रोढा  
ठिता नायिका है ॥ और वरसिबो बयार चलिवो  
जा वालो है तैं भी ॥ कुरसि वो पूरन कारज भयो याते  
विभावना है ॥ २१३॥ अथ पर चौथा उत्कंठिता  
विभावना उदाहरण ॥ ॥ मे जाई

काम तजि आये नहि नंदलाल ॥ यों कहि सो  
 कलिन पै वाटे खेद विशाल ॥ २१४ ॥ टीका ॥  
 घर को काम तजि करि कै आई नंदलाल नही आये  
 कह करि कै फूलन की कलीन पै सोवना घरा खेद  
 ज्या यहाँ घर को काम तजि वासी परकीया उत्कीर्णता  
 दीयका है ॥ और फूलन की कली अकारन वस्तु नें पसे-  
 न कारज भयो याति चौथी विभावना है ॥ २१४ ॥ अथ  
 पंचम कुटी विभावना लहारा ॥ दोहा ॥  
 कारज हेतु विरुद्ध नै होय सु पंचम पाव ॥ कारज नै कार  
 जनम पद विभावना भाव ॥ २१५ ॥ टीका ॥ विरुद्ध  
 लहारा सें कारज होय सो पंचम विभावना है ॥ कारज  
 नै कारन को जनम होय सो कुटी विभावना को भाव है  
 ॥ २१५ ॥ अथ परकीया उत्कीर्णता पंचम विभा  
 वना उदाहरन ॥ दोहा ॥ कुल नारिन भय ताप स  
 हि आई शीतल धाम ॥ हयौ पिय विन हिमकर अली  
 नारत सोहि निकाम ॥ २१६ ॥ टीका ॥ कुल की स्त्री-  
 न को डर और डर सह करि कै शीतल घर में आई है  
 अली यहाँ पीतम विना हिमकर चन्द्रमा है सो सोकी  
 विना काम जलावे है ॥ यहाँ कुल नारीन का भय और  
 ताप सह वासी परकीया उत्कीर्णता नायिका है और  
 हिमकर सें जलावे विरुद्ध कारज भयो याति पंचम वि  
 भावना है ॥ २१६ ॥ अथ गानिका उत्कीर्णता तृ  
 तीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन दायक  
 वायो नही किंहे कारन ईहि याम ॥ यों भापत जप रु  
 धन नें सारिना वही अमान ॥ २१७ ॥ टीका ॥ धन का



देवा वालो ई घर में कार्ड काररा सैं नहीं  
 भाषता चय रूपन सैं अमान सारता वही  
 को देवा वालो नहीं आयो जैसे कह वासी  
 उत्कंठिता नायिका है ॥ और अच्छी कारज सैं सौ  
 ता कारन भयो यानें छटी विभावना है ॥ २१०  
 य वासक सज्जा लहरा ॥ दोहा ॥ पिय  
 न को यह दिवस मेरो अहै आज ॥ वासक  
 इसि सजे सुरत को साज ॥ २१० ॥ इती प्रश्न  
 लाग्य दर्शन भास ॥ सामग्री संपादन रु जानि  
 हास ॥ २१० ॥ अथ विशेषोत्ति असंभव  
 दोहा ॥ विशेषोत्ति अति हेतु है नऊ काज  
 कारज विन संभावना होय असंभव सोय ॥ २  
 अत्यंत हेतु होय तो भी काज नहीं होय सो  
 ति अलंकार है ॥ विना संभावना कारज होय  
 त अलंकार है ॥ २२० ॥ अथ सुग्धा वासक  
 विशेषोत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोई  
 ज पै लोचन मूँटि विशाल ॥ पिय मग देखन  
 उ खोलै नेन न बाल ॥ २२१ ॥ टीका ॥ सोभाय म  
 के ऊपर सूती विशाल नेत्रन को मूँटि करि के पीतम  
 ग देखि वाकी चाह है तो भी बाल हैसो नेत्रन को  
 लै ॥ यहाँ नेत्र नहीं खोलै वासी सुग्धा वासक  
 यिका है और पीतम को मग देखि वाकी चाह  
 तो भी देखिवा कारज नहीं भयो यानें विशेषोत्ति  
 कार है ॥ २२१ ॥ अथ  
 उदाहरन ॥ वासक  
 ॥ का जानै हा यह

है आज ॥ राखन तोज उकाह दिन नाज पर नागस  
 ज ॥ २२२ ॥ टीका ॥ कौन जाने हो आज यह दिन  
 होय गो सावन में तोज का उकाह का दिन में जेप  
 तिन का समाज को तोज कर के यहाँ काम में उत्सा  
 मान्यो लाज से सोतन को जेप मानी याने सध्या  
 सक सज्जा है और ई काम को हो वो संभव नहीं हो  
 ज्यो याने असंभव अलंकार है ॥ २२२ ॥ अथ प्रथ  
 द्वितीय असंगति लहारा ॥ दोहा ॥ प्रथम  
 संगति कारणा रु कारज न्यारी वीर ॥ द्वितीय और बलक  
 कीं करे और ही वीर ॥ २२३ ॥ टीका ॥ कारणा न्यारी  
 वीर होय कारज न्यारी वीर होय सो पहिली असंगति है  
 वीर बल का काम की और वीर करे सो दूसरी असंगति है  
 ॥ २२३ ॥ अथ प्रोढ़ा वासक सज्जा प्रथम अम  
 ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखिन सहित साजत स-  
 विन विमल बनावत वास ॥ देन दान तखि बाल कीं यकी  
 तति अम तास ॥ २२४ ॥ टीका ॥ सखीन से हित सय  
 साजता निर्मल वास बनावता बाल कीं दान देनी देखि  
 ताका अम से सोति है सो यकी ॥ यहाँ दान देवासा प्रो  
 वासक सज्जा नायिका है और दान को परिश्रम का  
 ॥ नायिका में है यकियो कारज सोतन में है याने प-  
 ली असंगति है ॥ २२४ ॥ अथ पर कीदा वासक  
 ज्जा द्वितीय असंगति उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 र हर सोज सेज वर करि नव सत सिंगार ॥ हथि हाथ से  
 र दियो दियो बयार मत्तार ॥ २२५ ॥ टीका ॥ हर ही  
 जे सोज सोज के सोलह सिंगार कर के ॥ हथि के हा-

यु सैं दियो पवन में धीरे दियो ॥ यहाँ दियो ब्या  
धीरे वासों पर कीया वासक सज्जा नायिका है ॥  
दिया को काम बिना पवन की ठौर में धीरे वास  
सो पवन की ठौर में धर्यो यातें दूसरी असंगति है ॥

**अथ तृतीय असंगति प्रथम विषम**  
**॥ दोहा ॥** ज्ञान करत ज्ञानीह करे तातय  
ति जानि ॥ ज्ञान मिलते के संग में प्रथम विषम म

२२६ ॥ **दोहा ॥** और करतों और करे सो तीसरी  
जानें ॥ ज्ञान मिलते के संग में मन में प्रथम विषम

२२६ ॥ **अथ गानिका वासक सज्जा तृतीय**  
**संगति उदाहरन ॥ दोहा ॥** सेज साजि भूष

ष हरि हरषि मन साहि ॥ नय पहरत किंहीं कारे  
तारि उसाहि ॥ २२७ ॥ **दोहा ॥** सेज साजि के मन में

षि के भूषन वसन पहरे के नय पहरत का ई वास  
ग करि के उतारि धरो ॥ यहाँ नय ले वासो वासो उता

याते गानिका वासक सज्जा है नय पहरत उतारि  
और काम कर्यो याते तीसरी असंगति है ॥ २२७ ॥

**स्वाधीन पतिके लक्षणा ॥ दोहा ॥** ज्ञ  
सनि रह सदा आज्ञाकारी पाय ॥ सु स्वाधीन पतिके

जीवन नियम करि तीय ॥ २२८ ॥ वन विहार आदि  
ते सदनोत्सव में प्रीति ॥ सद रु सनोत्थ प्राप्ति पूर्ति

कार है रीति ॥ २२८ ॥ **अथ सुरधा स्वाधीन**  
**का प्रथम विषम उदाहरन ॥ दोहा ॥**

ला निधि लाल फिन कित यह भोरो बाल ॥ ज्ञान मिल  
जाते सेन ह्यो अलो लख्यो लिपि माल ॥ २२९ ॥

**टीका ॥** सम्पूर्ण कल्मस को खाने लाल कहाँ यह भोरी  
 वाल कहाँ यहाँ अन मिल को अत्यंत मेल है सो हे अली  
 भाल को लिपि से जान्यों यहाँ भोलापन से मुग्धा है और  
 मेल हो वासे स्वाधीन पति का नायिका है ॥ और अन मिल  
 ता को संग है याने प्रथम विषम है ॥ २३० ॥ अथ द्विती  
 य तृतीय विषम लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारन कारज  
 सिद्ध रंग द्वितीय विषम गरा नीय ॥ भले उद्यम ने अभल  
 फल होय सु विषम तृतीय ॥ २३१ ॥ **टीका ॥** कारन को  
 और रंग होय कारज को और रंग होय सो दूसरो विषम  
 गरा ॥ भला उद्यम से बुरो फल होय सो तीसरो विषम है  
 २३१ ॥ अथ मध्या स्वाधीन पति का द्वितीय  
 विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥ खुले अन खुल चष  
 निरख रंगे लात रंग श्याम ॥ ना लाली की कलक ते भयो  
 सौतिन मुख श्याम ॥ २३२ ॥ **टीका ॥** खुल्या अन खुल्या  
 चपन से देखि करि कै श्याम को लाल रंग से रंग्या तिस  
 लाली की कलक से सौतिन को श्याम मुख भयो अहाँ खु  
 ल्या अन खुल्या चपन से मध्या स्वाधीन पति का नायिका  
 है ॥ और लाली की कलक कारन को रंग लाल है सौतिन को  
 मुख श्याम कारज श्याम रंग है याने दूसरो विषम है  
 २३२ ॥ अथ प्रोढा स्वाधीन पति का तृतीय वि  
 षम उदाहरण ॥ दोहा ॥ कलि कला रस रीति करि  
 ने वालम वस कोन ॥ अब अलि संतत मेल ते वोलि न स  
 को अलीन ॥ २३३ ॥ **टीका ॥** कलि कला रस की रीति  
 करि कै मैने वालम को वस कसो हे अली अब निरंतर मे  
 ल से अलीन से नहीं वोलि सकी यहाँ कलि कला करि

पीतम कों वस कर्यो याँते प्रोढा स्वाधीन पीतका  
 का है और वालस कों वस करि वो भलो काम है तसों  
 खीन कों नही मिलवो बुरो फल भयो याँते तीसरो  
 म है ॥२३५॥ अथ प्रथम द्वितीय लक्षणा॥  
 हा ॥ वर्नन दो सम रूप को ताहि प्रथम सम जाय ॥  
 कारन के गुन काज में मिलें द्वितीय सम होय ॥२३५॥  
 टीका ॥ दो समान रूप को वर्नन होय ताको प्रथम  
 म देखो ॥ कारन के गुन काज में मिल्या सों दूसरो  
 होय है ॥२३५॥ अथ परकीया स्वाधीन  
 का प्रथम सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रेम पास  
 वस कियो दे दीधि दान रमाल ॥ गुन गर्वीली बाल  
 विद्या निधि नंदलाल ॥२३५॥ टीका ॥ प्रेम की पास  
 सै पकड़ि करि कै वस कर्यो सुंदर दीधि दान दे करि  
 के गुन को गर्वीली बाल नै विद्या का निधि नंदलाल  
 यहाँ दीधि दान दे करि कै वस कर वासों परकीया स्वा  
 धीन पीतका नायिका है ॥ और बाल गुन गरवीली ब  
 णा विद्या निधि हैं दोनों समान हैं याँते प्रथम सम  
 हैं ॥२३६॥ अथ परकीया स्वाधीन पीतका  
 द्वितीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ विहरत कुंज  
 में पयो जाय राधिका जाल ॥ यामे अचिरज कोन सीत  
 आहि विहारी लाल ॥२३७॥ टीका ॥ कुंजन में डोल  
 तो ज्यो राधिका का जाल में पड़ि गयो है सबी यामे  
 कोन अचिरज है विहारी लाल है ॥ यहाँ डोलता कृष्ण  
 कों वस कर्यो याँते परकीया स्वाधीन पीतका नायि  
 ॥ और दोनों वा कारन का गुन विहारी लाल का

ज से पाया याते दूसरो सम है ॥ २३७ ॥ अथ तृती-  
 य सप्त विचित्र लक्षणा ॥ दोहा ॥ काज सिद्धि  
 निविष्ट है जतन करत सम तीन ॥ इच्छा फल विपरीत  
 को जतन विचित्र प्रवीन ॥ २३८ ॥ टीका ॥ जतन करत  
 ही निविष्ट कारज सिद्ध हो जाय सो तृतीय सम है ॥ और  
 विपरीत फल की इच्छा को जतन करे सो विचित्र अल-  
 कार है हे प्रवीन ॥ २३८ ॥ अथ गानिका स्वाधीन  
 पति का तृतीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ हंसि  
 हसाय चरपा परस आज बाल भरि वाय ॥ लौनों सदन व-  
 साय हरि सुरतरु गोपीनाथ ॥ २३९ ॥ टीका ॥ हंसि  
 हसाय के रस चरपाय के आज बाल ने वाय भरि के सुर-  
 तरु गोपीनाथ हरि को घर में बसा लिया यहां सुर तरु  
 का वस कर नाते गानिका स्वाधीन पति का नायिका है-  
 और हंसि हसावा जतन से कृपा को वस करि वो का-  
 रज निविष्ट सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २३९ ॥  
 अथ अभिसारिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिय  
 मे जाय कि पीतमहि आप बलावे जोय ॥ पाय प्रेम स-  
 द सदन वस सु अभिसारिका होय ॥ २४० ॥ होय समय  
 अनुरूप ही भूषण शंका जाति ॥ प्रजा ने पुन्य रु कपट  
 हासादिक पहिचानि ॥ २४१ ॥ ये चेष्टापर नारि की हेतु  
 या की नाहि ॥ कृपा शुक्ल दिवादिभिर है पर कोया सौ-  
 हि ॥ २४२ ॥ निज गानन में लीन है रोकि सु भूषण ध्वा-  
 न ॥ दवि गात्र वसनन विमल कुल जाकरत पयास ॥  
 २४३ ॥ मद से विहल बोलत प्रफलित नैन वितास ॥  
 हंसती सवलती भय रहित चंदी गीन प्रकास ॥ २४४ ॥

अद्भुत उज्जल वेष धर करि नूपुर कनकार ॥ अमुक्त  
 लित मुख प्रगट वार मुखी अभिसार ॥ २४३ ॥ ३  
**मध्या अभिसारिका विचित्रा उदाहरण ॥**  
 हा ॥ पिय पै जात सखीन संग सलज सखीनी जो  
 ज्यों ज्यों नीचो होत अति त्यों त्यों ऊँचो होय ॥ २४४ ॥  
**टीका ॥** सखीन का संग में पिय पै जाता राज  
 नायिका जैसे जैसे अत्यंत नीचो होय है वैसे वैसे  
 होय है यहाँ सलज जाया सें मुग्धा अभिसारिका  
 का है और नीचा हो वासों ऊँचो होवो उलटो फल  
 याते विचित्र अलंकार है ॥ २४६ ॥ **अथ प्रथम**  
**तीय अधिक लक्षणा ॥ दोहा ॥** अधिक  
 आधार तें आधे यमु अधिकाय ॥ द्वितीय अधिक  
 य तें जब आधार बढ़ाय ॥ २४७ ॥ **टीका ॥** बड़ा  
 र सें आधेय अधिकावे सो पहिलो अधिक है ॥  
 धेय सें आधार बढ़े सो दूसरो अधिक है ॥ २४७ ॥  
**मध्या अभिसारिका प्रथम अधिक**  
**रणा ॥ दोहा ॥** सखी लाज सनेह की तिया पिय  
 त ॥ तिहि लखि बढ़यो अलीन मन त्रिभुवन में न  
 त ॥ २४८ ॥ **टीका ॥** लाज सनेह की सखी ऊँच  
 है सो पिया पै जाय है ताकों देखि करि के अलीन  
 न बढ़यो सो नीनों भवन में नही भावे यहाँ लाज  
 सनेह की भरी ऊँच तिया है सो पिया पै जाय है  
 मध्या अभिसारिका मायिका है ॥ और त्रिभुवन  
 है तामें अलीन को मन आधेय मही भयो  
 अधिक है ॥ २४८ ॥ **अथ प्रोवा**

रिका द्वितीय अधिक उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 म परो अति मंद गति चली अलीन ममार ॥ उजियारो मु-  
 चंद की भरी गलीन अपार ॥ २४८ ॥ टीका ॥ प्रेम की प-  
 ऊई अत्यंत मंद गति से अलीन का बीच में चली मुख चं-  
 सा की उजियारो गलीन में अपार भरी यहाँ प्रेम से च-  
 याने प्रोढ़ा प्रेमाभिसारिका नायिका है और मुख चंद्र-  
 की उजाली आधेय है सो गली आधार में सा गई याने  
 सारा अधिक है ॥ २४८ ॥ अथ अल्प अन्योन्य ल-  
 तरा ॥ दोहा ॥ अल्प अल्प आधेय से अल्प होय आ-  
 नार ॥ अन्योन्य हि उपकार ते अन्योन्या लंकार ॥ २४९ ॥  
 टीका ॥ अल्प जो आधेय है उस आधार अल्प होय सो  
 अल्पालंकार है परस्पर उपकार से अन्योन्या लंकार है ॥  
 २४९ ॥ अथ प्रोढ़ा गर्वाभिसारिका अल्प उदाह-  
 रन ॥ दोहा ॥ कीरति जा निज भवन में तुम्हें बुलावत आ-  
 हि ॥ सुनि सुख भयो सुलाल के मन में सायो नहि ॥ २५० ॥  
 टीका ॥ राधिका अपना मकान में है लाल तुमको बु-  
 लावे है ॥ सुनिवार के सुख भयो सो लाल के मन में नहीं  
 मायो यहाँ प्रीति को अभिमान के वस से बुलावे है याने  
 प्रोढ़ा गर्वाभिसारिका नायिका है ॥ और सुख है सो आ-  
 धेय है मन आधार है सो मुख छोटा आधेय है छोटा  
 है याने अल्प अलंकार है ॥ २५० ॥ अथ प्रोढ़ा का-  
 माभिसारिका अन्योन्य उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 लपटि आहि पाय ॥ आहि  
 मंड पारि के आहि है सो प्रान



व० भू०

मै लगे गया पगन मै सर्पन की छाबि छाई सर्पन  
गन की छाबि छाई यहाँ कामाँधा नाँसे पगन मै सर्प  
स्था को दीक नही पड्यो याँतै प्रौढा

और परस्पर उपकार है याँतै अन्योन्या लंकार

२५२॥ अथ प्रथम द्वितीय विशेष

दोहा ॥ विना ख्यात आधार के रह आधेय  
एक वस्तु कौं बज्जत तौ वरनत दूजो बेष ॥ २५३॥

विख्यात आधार बिना जहाँ आधेय रहै सो प्रथम  
शेष अलंकार है ॥ एक वस्तु कौं बज्जत ठाम वरनै सो  
सरो विशेष है ॥ २५३॥ अथ परकीया

उदाहरन ॥ दोहा ॥ दूरि दूरि गुरु बने तान से चली  
ली हित धारि ॥ पै दूरि दूरि पग सग धरत वन नम  
स निहारि ॥ २५४॥ टीका ॥ गुरु बनितान में छिपि

कारि के लली है सो हित धारि के चली ॥ परन्तु डी  
रि के सग मै पग धरै है वन में आकास को फूल दोष  
के यहाँ दूरि दूरि के जा वासों परकीया भिसारिका  
का है और आकास का फूल को बिना आधार बने  
याँतै पहिलो विशेष है ॥ २५४॥ अथ कृष्णा

रिका द्वितीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥

वसन भूषन पहारि चली अमावस राति ॥ घन वन  
निज सजन में सरविन लखी छाबि छाति ॥ २५५॥

का ॥ काला वसन और भूषन पहारि के अमावस की  
में चली तब नायिका है सो घन में वन में तम में

मै सरविन नै छाबि की छाई ऊई देखी यहाँ  
पद्मिनी वासों कृष्णा भिसारिका नायिका है और

१ वस्तु नायिका की द्विबि है सो घन बनादि में बरनी  
 ते दूसरो विशेष है ॥२५५॥ अथ तृतीय विशेष  
 प्रथम व्याघात लक्षणा ॥ दोहा ॥ अलघुना  
 लघु जतन ते तृतीय विशेष सुख्यात ॥ वरने हित  
 २ वस्तु सैं अहित सु है व्याघात ॥२५६॥ टीका ॥  
 गेवा जतन सैं बडो लाभ हो जाय सो तीसरो विशेष है  
 इतकारी वस्तु सैं अहित बने सो व्याघात है ॥२५६॥  
 अथ शुक्लाभिसारिका तृतीय विशेष उदा  
 हरन ॥ दोहा ॥ रजनी राका सरद की चली सेत साज  
 गेज ॥ जिहि तरिख जानी साखिन नैं लखी शारदा साज  
 ५७ ॥ टीका ॥ सरद की घुन्यों की राति में सुपेद साज  
 गीज के चली यहाँ जिसको देखि के सखीन ने जानी आ  
 शारदा देखी ॥ यहाँ सेत साज साज के चली याते शु  
 क्राभिसारिका नायिका है और नायिका को देखि वासों  
 शारदा को देखिबो अधिक लाभ भयो याते तृतीय वि  
 शेष है ॥२५७॥ अथ द्विवाभिसारिका प्रथम  
 व्याघात उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुरंग वसन आभर  
 न साजि चलो सध्य दिन बाल ॥ मग सैं घन आये घु  
 मिडि लखि कुम्हिलानी हाल ॥२५८॥ टीका ॥ लाल  
 वसन आभरन साजि करि के बाल है सो दुपहर चली  
 गीला में घन घुमडि आया नुरत हो देखि करि के कु  
 म्हिलाई ॥ यहाँ दिन में चल वासों द्विवाभिसारिका ना  
 यिका है और घन घुमडिबो दिन कर वस्तु सैं अहित  
 घन्यो याते प्रथम व्याघात है ॥२५८॥ अथ द्वि  
 तय व्याघात प्रथम कारणा साला लक्षण ॥ दोहा

काज विरोधी सैं सधै जुग व्याघात वर्यानि  
पुनि कारणा काज ह्यै कारन माला जानि ॥२५॥  
विरोधी सैं कारज सधै सो दूसरो व्याघात  
फेर फेर कारन ह्यै सो काज होय सो कारन  
लंकार जानौ ॥२५॥ अथ

दाहरन ॥ दोहा ॥ सदसाती हंसि बोलती  
इत उत जाय ॥ संग बनावन चलन संग हंसि  
जासिक लोय ॥ २६० ॥ टीका ॥ मद सैं मस्त जई  
करिकै बोलती जई इत उत कों देखती चलती  
यिका के संग सैं मारग कों बनावन जई हंसि  
के गति सैं जासिक लोग हें सो संग चले है ॥ यह  
सती जई इत उत कों देखती चले है यातें  
रिका नायिका है ॥ और चौकोदार मारग का  
लान नैं मारग को बनावो कारज कर्यो यातें  
व्याघात है ॥ २६० ॥ अथ गानिका भिर  
यस कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥  
सजि भूषन बसन यों कहती पति धाम ॥ अस सैं  
गुन सैं धन रु धन सैं होत सु काम ॥ २६१ ॥  
भूषन बसन सजि करिकै पति का धाम कों  
ई असै कहै है अस सैं गुन होय है गुन सैं धन  
धन सैं सुंदर काम होय है ॥ यहाँ भूषन बसन  
करिकै पति का धाम कों जाय है यातें गानिका  
मारिका नायिका है और अस कारन है गुन कारन  
गुन कारन है धन कारन है फेरि धन कारन है  
अस कारन है यातें पहिली कारन माला है ॥ २६१ ॥

य द्वितीय कारन माला रक्तावली लक्षन  
 हा ॥ कारन माला दूसरी कारज कारन माल ॥ गहि  
 पर कौड़े जहाँ रक्तावली रसाल ॥ २६२ ॥ टीका  
 ज और कारन को माल होय सो दूसरी कारन मा-  
 जे जहाँ पर को गह गह करिके कौड़े सो रक्तावली  
 नुदर ॥ २६२ ॥ अथ गारिकाभिसारिका द्विती  
 कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ जाती मन ज  
 आवती कहती भरी उमंग ॥ गुन अम संग धन गुन स  
 ह सकल काम धन संग ॥ २६३ ॥ टीका ॥ जाती ज  
 मन को जलसावती जई उमंग की भरी जई कहती  
 गुन है सो अम के संग है धन है सो गुन के संग है  
 री काम है सो धन के संग है ॥ यहाँ धन की ब-  
 ई करे है याने गारिकाभिसारिका नायिका है ॥  
 र पहिले गुन कारज कह्यो फेरि अम कारन कह्यो  
 रि धन कारज कह्यो गुन कारन कह्यो याने दूसरी  
 रन माला है ॥ २६३ ॥ अथ प्रवत्स्यत्यति का  
 दारा ॥ दोहा ॥ अगले छिन में जाहि को जैहें पति  
 रदश ॥ ताहि प्रवत्स्यत्येय सी बरनत सु कावि असेश  
 ६५ ॥ कातर प्रेक्षण काकु वच निर्वेदक संताप ॥ संस  
 रु निश्वास पुनि गमन विघ्न को थाप ॥ २६४ ॥ अथ  
 रधा प्रवत्स्यत्यति का रक्तावली उदाहरन  
 हा ॥ आली पीव पयान दुख लीख परि है परमात  
 न नै मुख मुख नै नयन अधिक अधिक मुरझान ॥  
 ६६ ॥ टीका ॥ हे आली पीतस का पयान को दुख  
 है जानि पड़े गो ॥ मन नै मुख दुख नै नयन अधि

। गणिका प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है  
करा सुंदरी कह्या जाही कमसों कर जंगरी  
याने यथा संख्य अलंकार है ॥ २७२ ॥

सिष्यत्पतिका लक्षणा ॥ दोहा ॥

परदेश ते यौ गनि हर्षित होय ॥ सुआग

यसी बरनत सब कवि लोच ॥ २७३ ॥ अथ

य लक्षणा ॥ दोहा ॥ क्रम से आश्रय एक

है सो पर्याय ॥ क्रम से बह के एक ही आश्रय

य गनाय ॥ २७४ ॥ टीका ॥ क्रम से एक के बह

य होय सो पर्याय अलंकार है ॥ क्रम से बह के

आश्रय होय सो दूसरे पर्याय गनावो ॥ २७५ ॥

गधा आग सिष्यत्पतिका अथ

उदाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज हरा वाम गनि

दित मन बाल ॥ पियराई मुख को गई आई लाली

२७६ ॥ टीका ॥ चाई भुजा बाँया नेत्र फरकता गनि

के बाल है सो मन में प्रसन्न भई ॥ मुख की पियराई

तुरत लाली आई यहाँ चाई भुजा बाँया नेत्र फरकता

गधा आग सिष्यत्पतिका नायिका है और पियराई

को मुख एक आश्रय भयो याने प्रथम पर्याय है ॥

अथ मध्या आग सिष्यत्पतिका

य उदाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज पुन का

ल्यो जिय घर आय ॥ लगी दीठि भुज वाम पुनि

वामे जाय ॥ २७७ ॥ टीका ॥ चाई भुज फरकी फा

क सो तिया के घर आ करि के बोल्यो चाई भुजा में

न देख काम के चरसै दीठि लगाई लाज के वस सै  
 एक नही हर्षाई याने मध्या आगमिष्यत्पनिका ना  
 न है ॥ और एक दीठि भुजा सै और काक सै लगी या  
 सरो पर्याय है ॥ २७६ ॥ अथ परिहृति परिसं  
 या लक्षणा ॥ दोहा ॥ परिहृति सु यत्न दो करे अथि  
 न्यून को कोय ॥ परि संख्या यत्न ज्ञान तजि इक यत्न  
 थित होय ॥ २७७ ॥ टीका ॥ अधिक न्यून को कोई  
 दो करे सो परिहृति अलंकार है ॥ जो और यत्न कों  
 न करि कै एक यत्न सै थित होय सो परि संख्या अ  
 लंकार है ॥ २७७ ॥ अथ प्रौढा आगमिष्यत्पनिका  
 परिहृति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उवतहि प्रात  
 रा भरि बोली प्रिया प्रवीन ॥ आली अधिक उछाह दे  
 दा काक नै लीन ॥ २७८ ॥ टीका ॥ सर्वे उवतौ ही उ  
 ॥ सै भरि करि कै प्रवीन प्रिया बोली है आली अधिक  
 हाह दे करि कै काक नै विदा लीनी यही अधिक उछा  
 सै प्रौढा आगमिष्यत्पनिका नायिका है और का  
 नै अधिक उछाह दे करि कै विदा लीनी याने परि  
 हृति अलंकार है ॥ २७८ ॥ अथ परकीया आग  
 मिष्यत्पनिका परि संख्या उदाहरन ॥ दो  
 नन परोसनि को पिया अहे आजहि सारु ॥ रही क  
 न ही प्रयामना कृशता करि ही सारु ॥ २७९ ॥ टी  
 रोसनि को पिया आज ही सारु कों आवै सो कालाप  
 है सो बालन ही सै रह्यौ दुवराई कसरि में ही रही  
 ही परोसनि का पीत सै परकीया आगमिष्यत्पनिका  
 नायिका है ॥ और कचन सै प्रयामना रही कोटि मे कृशता

रही ॥ यातै परि संख्या अलंकार है ॥२७८॥

कल्प प्रथम समुच्चय लक्षणा ॥ दोहा ॥  
बल जुगल विरोध को कथन विकल्प वर्यानि ॥  
वन को संग कथन प्रथम समुच्चय जानि ॥२७९॥  
समान बल दोनूँ विरोध को कथन होय सो

॥ बलत भावन को संग कथनो होय सो  
जानी ॥२८०॥ अथ गानिका आग

त्यतिका विकल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥  
गानि गावती बोली हिय हर्षानि ॥ आज

ख जानि है जसराज कि धन दानि ॥२८१॥ टीका  
अवधि का दिनन कों रानि करि कै गावती ऊँ  
मे हर्ष करि कै बोली आज राति मे दुख भाने गो  
ज कै धन दानी कृपा यहाँ गावसों गानिका आ  
व्यत्यतिका नायिका है ॥ और जसराज धन दान  
बल है तिन मे सारि वो जिवावो विरोध है यो  
कल्प है ॥२८१॥ अथ आगत पतिका  
दोहा ॥ जाको पिय परदेश ते आयो तबही होय  
आगत पतिका नायिका हर्षति जिय मे जोय ॥  
टीका ॥ जाको पीतम परदेश ते तबही आयो  
सो आगत पतिका नायिका जीव मे हर्षती देखो ॥

अथ सुरधा आगत पतिका प्रथम

उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये लखि नवल  
हंसो जंभाय ॥ कंपी अनुरागी बज्रि बेठी

॥२८३॥ टीका ॥ पिय कों आयो देखि कै  
सो हर्षी हंसो जंभायो ली कंपी अनुरागी फी

लजा करि कै वैरी यहाँ लाज वासै मुरधा आगत प  
 का नायिका है ॥ और नायिका मै हृषीदिक बज्रत  
 व है याँ प्रयत्न समुच्चय है ॥ २८३ ॥ अथ द्विती  
 समुच्चय लक्षणा ॥ दोहा ॥ हौं पहिले ही प  
 न यौ बज्रत मानि मन खाँह ॥ दूसरे सिद्धि इक काज  
 द्वितीय समुच्चय आहि ॥ २८४ ॥ टीका ॥ हम प  
 लें हम पहिले जैसे बज्रत है सो मन में मानि कां  
 एक काज की सिद्धि करे सो दूसरो समुच्चय है ॥ २८४ ॥  
 अथ मध्या आगत पतिका द्वितीय समुच्चय  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये परदेश सँ भँवत प  
 न और ॥ तनु चप अवनन चाह नै वढि नित्य करी श  
 और ॥ २८५ ॥ टीका ॥ पीतम परदेश तँ आये कुटुंब  
 समूह सौं मिलतां तनु चप अवन की चाह नै वढि  
 करि कै नित्य कौं अधीर करी यहाँ पहिले लाज सँ धीर  
 और रही फेर काम सँ शरीरादि की चाह नै वढि का  
 अधीर करी ॥ याँ मध्या आगत पतिका नायिका है  
 और तनु चप अवनन की चाह नै वढि करि कै अधी  
 रता एक कारज करी याँ दूसरो समुच्चय है ॥ २८५ ॥  
 अथ कारक दीपक समाधि लक्षणा ॥ दोहा  
 कारक दीपक वज्र किया वत्स तै कारक एक ॥ ज्ञान ह  
 नु सँ काज की सिद्धि समाधि विवेक ॥ २८६ ॥ टीका  
 कम सँ वज्रत क्रियान को कारक एक होय सो कारक  
 दीपक अलंकार है ॥ और हेतु सँ कारज की सिद्धि होय  
 सो समाधि है ॥ २८६ ॥ अथ अष्टा आगत पति  
 का कारक दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी क



ही विदेश तैं प्रिया पिया ह्यौ जात ॥ दौरी फि  
रही पुनि पूछी कुशलात ॥ २८७ ॥ टीका ॥  
कही विदेश तैं हे प्रिया हया पिया आवै हे दौरी  
री खरी रही फेर कुशल पूछी यहाँ घणी हष  
तैं प्रीति आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी  
दि अनेक भाव सक नायिका मै भये यातै  
पक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया

त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥  
सी परदेश तैं आयो जिहि निशि साहि ॥ घर के सब  
त्सवन में गये राखि घर ताहि ॥ २८८ ॥ टीका ॥  
रोसी परदेश तैं आयो जी रात्रि में घर के सब  
न में गये ता नायिका कों घर राखि के जाकी  
सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सैं आव  
परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर  
को जावो अन्य कारज सैं मिलाप कारज भयो  
अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक

लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रवल शत्रु के  
वपै प्रत्यनीक बल धाति ॥ यो है तो यह है कहा सो  
व्याधीपति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रवल शत्रु के मित्र  
बल की धाति होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यो है  
तो यह काई है जैसे होय सो का व्याधीपति अलंकार  
र है ॥ २८९ ॥ अथ गानिका आगत पतिका प्र  
त्यनीक उदाहरन ॥ दोहा ॥ आवत पति  
राखि सासरन अमंद ॥ सै असन्न सुख नैन तव  
मंदे चंद ॥ २९० ॥ टीका ॥ पतिका परदेश सैं

ब० भ०

विदेश तैं प्रिया पिया हयौ जात ॥ दोरी  
रही पुनि पूँछी कुशलात ॥ २८७ ॥ टीका ॥  
कही विदेश तैं हे प्रिया हया पिया आवै हे दे  
री खरी रही फेरि कुशल पूँछी यहाँ यणी  
तैं प्रीति आगत पतिका नायिका है ॥ और दोरी  
दि अनेक भाव सक नायिका में भये याते  
पक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया  
त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥  
सी परदेश तैं आयो जिहि निशि साँहि ॥ घर के  
त्सवन में गये राखि घर नाहि ॥ २८८ ॥ टीका ॥  
रोसी परदेश तैं आयो जी राखि में घर के सब  
न में गये ता नायिका कौ घर राखि कै जाकी  
सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सैं आवा  
परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर का  
को जावो अन्य कारज सैं मिलाय कारज भयो  
समाधि अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक  
व्यायपति लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रवल शत्रु के  
त्रयै प्रत्यनीक बल धाति ॥ यौ है तो यह है कहा सोक  
व्यायपति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रवल शत्रु के भन  
वल की धाति होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यौ है  
तो यह काई है जैसे होय सो का व्यायपति अलं  
र है ॥ २८९ ॥ अथ वानिका आगत पतिका प्र  
न ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश  
अनंद ॥ अ प्रसन्न मुख नैन तव क  
टीका ॥ पतिका परदेश सैं



ही विदेश तैं प्रिया पिया हयों आत ॥ दौरी फिरी  
 रही पुनि पूछी कुशलात ॥ २८७ ॥ टीका ॥  
 कही विदेश तैं हे प्रिया हया पिया आवै हे दौरी  
 री खरी रही फेरे कुशल पूछी यहाँ घरी हरी  
 तैं प्रीति आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी  
 दि अनेक भाव सक नायिका सै भये यातै कारक  
 पक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया  
 त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 सी परदेश तैं आयो जिहि निशि साँह ॥ घर के सब  
 तखन में गये राखि घर नाहि ॥ २८८ ॥ टीका ॥  
 रोसी परदेश तैं आयो जो रात्रि सै घर के सब उत्तर  
 न में गये ना नायिका कों घर राखि कै जाकी पारोसी  
 सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सैं आवा  
 परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर कान  
 को जावो अन्य कारज सैं मिलाप कारज भयो यातै  
 अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक  
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रवल शत्रु के मित्र  
 त्रये प्रत्यनीक बल धाँत ॥ यों है तो यह है कहा सो का  
 व्याप्यपति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रवल शत्रु के मित्र  
 वल की धाँत होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यों है  
 तो यह काहे है जैसे होय सो का व्याप्यपति अलंकार  
 है ॥ २८९ ॥ अथ गनिका आगत पतिका प्र  
 न ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश  
 अमंद ॥ अ प्रसन्न सुख नैन नव क  
 टीका ॥ पतिका परदेश सैं

भावना गहराण सहीन देखि कै मुख नैन प्रसन्न भये नब  
चंद्रमा ने कमल मूदे यही नायक को गहराण सहीन देखि वासींग  
निका आगत पतिका नायिका है और चंद्रमा ने मुख का पक्षी कमल  
न को मूछा याते अल्पनीक अलंकार है ॥२८०॥ अथ पति स्वा  
धीना लक्षणा ॥ दोहा ॥ रूप प्रेम गुन आदि करि है पति के  
वस नारि ॥ पति स्वाधीना कहत तिंहैं कीच कीविद निधीरि ॥  
२८१ ॥ टीका ॥ रूप प्रेम गुन आदि करि कै नारि पति के  
रूप गुन प्रेम गुन आदि करि कै पति पति पति पति पति पति  
अथ गुण पति स्वाधीना लक्षणा ॥ दोहा ॥

लो लाल को मुख देखि कै रति ह लुभा करि कै रहे ॥  
मे लाज को तजि करि कै वस भई सो गिनती नही  
गिनी जाय यहाँ लाज को मुख माने है पति के व-  
स है याते मुग्धा पति स्वाधीना नायिका है और जो  
को देखि कै रति सो लुभा रहे तो मे काँई हों असे-  
कह वासींग काव्यार्थ पति अलंकार है ॥२८२॥

अथ काव्य लिंग लक्षणा ॥ दोहा ॥ अर्थ सम  
र्थन योग्य जो तासु समर्थ न होय ॥ काव्य लिंग मू-  
पन तहाँ फवि गुलाब मने होय ॥२८३॥ टीका ॥  
समर्थन योग्य जो अर्थ ताको समर्थन होय तहाँ-  
गुलाब फवि काम ते काव्य लिंग अलंकार है ॥२८३॥

अथ मध्या पति स्वाधीना काव्य लिंग उ-  
दाहरन ॥ दोहा ॥ मोलि लई सो लखि रहो मोलि  
न सकी सचेत ॥ मोते रीत अनि न्यून है पति मोहन

सुनें सुनें हियो जलसाप ॥ येरी सुरली लाल की सो  
 चित लियो चुराय ॥ २८७ ॥ टीका ॥ विना ही सुन्य  
 ध्यान धरि कै रहों हों सुन्या सों हियो जलसावै है  
 येरी लाल को सुरली नै मेरो चित चुरा लियो यहों  
 सुरली का सुन चासैं वस भई यातै परकीया पति-  
 स्वाधीना नायिका है और कृष्ण के जोग सैं सुरलीनै  
 बडाई पाई यातै दूसरो अर्थात् रन्यास है ॥ २८७ ॥  
 अथ विकस्वर औदोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 विकस्वरस्तु विशेष पुनि है सामान्य विशेष ॥ औ-  
 दोक्ति जु कारन करे अकारनहि गनि वेप ॥ २८८ ॥  
 टीका ॥ विशेष होय सोमान्य होय फेरि विशे-  
 य होय सो विकस्वर अलंकार है ॥ अकारन कौं वे-  
 य गनि कै कारन करे सो औदोक्ति अलंकार है ॥ २८८ ॥  
 अथ गानिका पति स्वाधीना विकस्वर उदा-  
 हरण ॥ दोहा ॥ आली लावत लाल धन जगजन की  
 अनुहारि ॥ निहैं ते वारों डगुन धन आनन असल-  
 निहारि ॥ २८९ ॥ टीका ॥ हे आली लाल धनल-  
 य है जगत काजन की अनुहारि ताकों ले करि कै ड-  
 गुन धन वारों निमल मुख देख करि कै यहाँ डगुन  
 धन वार चासैं गानिका पति स्वाधीना नायिका है  
 और लाल धन लावत यह विशेष है जगत काजन  
 की अनुहारि यह सामान्य है फेरि लाल ये डगुन  
 धन वार वो यह विशेष है यातै विकस्वर है ॥ २८९ ॥  
 अथ उत्तमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ धन हित करी  
 पोय पै हिन ही करे जु वाम ॥ बाकी चेष्टा उत्तमहि

व०

जानि उत्तमा नाम ॥३००॥ टीका ॥ अनहित करी  
जो वास अहित करे ॥ याकी चेष्टा उत्तम है याते  
सा नाम जानौ ॥३००॥ अथ उत्तमा प्रौढोक्ति उत्त  
॥ दोहा ॥ आये प्रीतम प्रात घर लाय  
ल ॥ तउ तनु जसुन तमाल द्यति लखि भइ हर्षित  
ल ॥३०१॥ टीका ॥ प्रीतम है सो सर्वे ही घर आ  
भाल से महावर लगा करि के तो भी तनु में जसुना का  
तमाल की द्यति देखि के वाल हर्षित भई ॥ यहाँ सापरा  
ध नायक की देखि के हर्षित भई याते उत्तमा नायक  
और जसुना को तमाल अधिक श्यामता को कारन  
ही ताकी कारन कस्यो याते प्रौढोक्ति अलंकार है ३०१  
अथ मध्यमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिय के हित  
हित करे अहित अहित ते होय ॥ चेष्टा है व्यवहार  
जानि मध्यमा सोय ॥३०२॥ अथ संभावना ले  
ख्या ध्य वसिति लक्षणा ॥ दोहा ॥ जो यौ होय  
तु होय यौ तु संभावना जानि ॥ मिथ्या हित मिथ्या क  
न मिथ्या ध्यवसिति जानि ॥३०३॥ टीका ॥ जो यौ हो  
य तो यौ होय जैसे होय सो संभावना अलंकार है  
मिथ्या के वास्ते मिथ्या को कहवो होय सो मिथ्या  
ध्यवसिति मानौ ॥३०३॥ अथ मध्यमा संभाव  
ना उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात पिया पा परन लखि  
बोली रिसाह वशाय ॥ राति जो न उत जावते तो क्यों  
परते पाय ॥३०४॥ टीका ॥ सर्वे ही प्रीतम की पा  
न से पड़तो देखि के रिम के नशा करि के बोली जो रा  
ति में उत कौ नही जाव  
॥ यौ पड़ते ॥

यहाँ पीतम ने उपगध कर्मों नव गंग कर्मों और पीतम पायन में पड़्यो तब राजी हुई यानि मध्यमा नायिका है और जो गति में उनको नहीं जावते तो पगन में क्यों पड़ने जैसे कह वासी संभवना अलंकार है ॥

३०४॥ अथ अधमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ हितकारी हूँ पीय पै अहित करै जो नारि ॥ चेष्टा याकी अधम यों अधमा कही विचारि ॥ ३०५॥ टीका ॥ हितकारी भी पीतम पै जो नारि अहित करै याकी चेष्टा अधम है जैसे विचारि करि कै अधमा कही है ॥ ३०५॥ अथ अधमा मिथ्या ध्यवसिति उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय वर बिनती भाषता बोली अधिक रिसाय ॥ नभ फूलन की साल जोध रै सु तुम्है पत्याय ॥ ३०६॥ टीका ॥ पीतम कौंसु दर बिनती भाषता अधिक रिसा करि कै बोली जो नभ का फूलन की साल कौं धाररा करै सो तुमको पत्यावै ॥ यहाँ बिनती भाषता कठिन बोली यानि अधमा नायिका है और नायक कौं विश्वास मिथ्या मानि नभ फूलन की साल को धरयो मिथ्या है यानि मिथ्या ध्यवसिति है ॥ ३०६॥ अथ ललित

लक्षणा ॥ दोहा ॥ जो कहु प्रस्तुत धर्म से वर्ननीय हतात ॥ अ प्रस्तुत प्रति विव करि वर्नत ललित सुख्यात ॥ ३०७॥ टीका ॥ जो कहु प्रस्तुत का धर्म को वरीया जोरय दूनात होय ॥ अ प्रस्तुत को प्रति विव करि कै वर्नत होय सो ललित है सुख्यात जाहूर ॥ ३०७॥ अथ अधमा ललित उदाहरन ॥



दोहा ॥ वर्जित निशि मैं गवन करि दोनों  
 माय ॥ भोर भये वर्जकन के काहें पकर  
 दोहा ॥ वर्जना निशि मैं गमन करि के माल  
 यो भोर भया पै वर्जवा वालान के परान में  
 ई है यहाँ नायक नै परा पकड़ा तो भी नही  
 यातै अधसा नायिका है ॥ और माल गुमावा बात  
 प्रस्तुत को वर्गान करि के नायक को वृत्तान  
 ते लीलन अलंकार है ॥ ३०८ ॥ अथ नायक  
 गा ॥ दोहा ॥ सुन्दर शील जु वासु घर कील  
 लवान ॥ शुचि उदार गुन वानि तिहि नायक  
 सुजान ॥ ३०९ ॥ अथ प्रथम द्वितीय  
 लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रहर्षन सु बिन जतन ही  
 नार्थ हो जाय ॥ वौंछित तैं अधिकार्य की सिद्धि सु  
 य गनाय ॥ ३१० ॥ दोहा ॥ बिना जतन ही  
 अर्थ हो जाय सो प्रहर्षन है ॥ वौंछित सैं अधिक  
 र्य की सिद्धि होय सो दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३११ ॥  
 अथ नायक प्रथम प्रहर्षन उदाहरन  
 दोहा ॥ कर सुरली पट पीन धर शीश मुकट  
 ल ॥ वन तैं आवत मग निरख अति  
 ज बाल ॥ ३१२ ॥ दोहा ॥ हाथ में सुरली पीन  
 डा कौ धारण कथा ऊया शीश पै मुकट हठा में  
 धरा ऊया वन तैं आवत मग सैं देख के वृज  
 अत्यंत हर्षी यहाँ जतन बिना ही नायक कौ  
 वो वौंछित अर्थ हो गयो बातें प्रथम प्रहर्षन है ॥  
 ३१३ ॥ अथ त्रिग

परन्त्यो पति उपयति सुतो परनारिन मै लीन ॥ वैसिक  
 नारिन नाह यो भाषत त्रिविध प्रवीन ॥ ३१२ ॥ टीका  
 परन्त्यो ज्यो पति है पैला की स्त्री न मै लीन होयसे  
 उपयति नायक है वेश्या को पति वैसिक है यो तो  
 न प्रकार को भाषे है प्रवीन है सो ॥ ३१२ ॥ अथ  
 ति नायक द्वितीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दो०  
 धनुष भंजि सब सै सरस लेखि ताँहि निज पीय ॥  
 प्राप्त दुर्लभ लाभ में अति हर्षानी सीय ॥ ३१३ ॥  
 टीका ॥ सब सै सरस धनुष भंजि कै अपना पीत  
 स को ताँहि देखि कै दुर्लभ लाभ में आप हो कै सी-  
 ता अत्यंत हर्षाई ॥ यहाँ राम चंद्र पति नायक है  
 और राम चंद्र की प्राप्ति बाँछित सै अधिक है याँहि  
 दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१३ ॥ अथ पति भेद ॥ दो०  
 अनुकूल रु दक्षिण रु शठ घृष्ट चारि पति मूल ॥ प-  
 रनी इकहाँ नारि को हितकारी अनुकूल ॥ ३१४ ॥ टी०  
 अनुकूल दक्षिण शठ घृष्ट ये चारि पति के भेद हैं  
 परनी ऊँई एक ही स्त्री को हितकारी होय सो अ-  
 नुकूल है ॥ ३१४ ॥ अथ तृतीय प्रहर्षन विषा-  
 दन लक्षणा ॥ दोहा ॥ जतन वस्तु जिहि हेर तें व-  
 हो मिते सु तृतीय ॥ बाँछित तें उलटो मिले विषादन  
 सु गुहानीय ॥ ३१५ ॥ टीका ॥ वस्तु को जतन हेरतो  
 वाही वस्तु मिले सो तीसरो प्रहर्षन है ॥ बाँछित सै  
 उलटो मिले सो विषाद न गणी ॥ ३१५ ॥ अथ अ-  
 नुकूल तृतीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 सिय पिय वल वन हित सबो मग जोवन ही धाम ॥

तबही सने सनेह में ज्ञात लखे मग राग ॥ ३१५ ॥  
 सिय है सो प्रिय कों बुलावा कै वास्ते धाम में  
 को मग देखे ही तबही सनेह में सने ऊंचे राग  
 में जाते देखे यहाँ राग अनुकूल नायक है ॥  
 का बुलावा कों सखी की चार देखता राग ही सिते  
 तैं तीसरो प्रहर्षन है ॥ ३१५ ॥ अथ दक्षिणा वि-  
 षादन उदाहरन ॥ दोहा ॥ गई बुलावन निज  
 वन बजत प्रिया प्रिय धाम ॥ सब को सख सनमानको  
 मे वन में घन प्रयास ॥ ३१७ ॥ टीका ॥ अपना सख  
 में बुलावा कै वास्ते बजत प्रिया है सो प्रिय के धाम  
 म गई ॥ सब को बराबर सनमान करि कै घन प्रयास  
 हैं सो वन में गये यहाँ सब को सनमान समान का-  
 र्यो यातें दक्षिणा नायक है ॥ और कृपा कों बुला-  
 वा गई वै उलटा वन कों चल्या गया यातें विषाद  
 न है ॥ ३१७ ॥ अथ उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 गुन दोषन करि एक के ज्ञानहि है गुन दोष ॥ चारि  
 भेद उल्लास के वर्तत कवि मति कोष ॥ ३१८ ॥ टीका  
 एक के गुन दोष करि कै और कों गुन दोष होय ॥  
 उल्लास के चारि भेद वर्तत है ॥ मति के भंडार  
 सो ॥ ३१८ ॥ अथ शठ प्रथम उल्लास लक्षणा  
 दोहा ॥ सित वचनी कपटी वहै शठ नायक पर  
 कास ॥ इक के गुन सैं ज्ञान कों गुन होय सु-  
 म ॥ ३१९ ॥ टीका ॥ सीठा वचन बोलवा वालो है  
 ॥ कपटी होय सो शठ नायक है प्रकास जाह  
 के गुन सैं और कों प्रथम उल्लास

॥३२०॥ अथ शत अथस उल्लास उदाहर  
 ॥ दोहा ॥ तुव अधरा सत ध्यान धरि बच प्रिया  
 प्रान ॥ अब अधरा सत ध्यान धरि है हो अमर  
 दान ॥ ३२० ॥ टीका ॥ तेरा अधरन का अमृत को  
 प्रान धरि कै है प्रिया राति में प्रान बच अब अधरा  
 त पान करि कै अमर होऊंगी निदान निश्चय यह  
 पद से सीठी वान करे है याते शत नायक है और न  
 प्रका का अधरा सत का गुन से नायक को गुन भयो  
 ताते अथस उल्लास है ॥ ३२० ॥ अथ धृष्ट द्विती  
 य उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥ निलजनि उर अपरा  
 ध कर नायक धृष्ट गनीय ॥ होय दोष परदोष से सो  
 उल्लास द्वितीय ॥ ३२१ ॥ टीका ॥ लान रहित हर रहि  
 त अपराध करे सो धृष्ट नायक गं नौ ॥ पैला का दोष  
 से दोष होय सो दूसरो उल्लास है ॥ ३२१ ॥ अथ धृ  
 ष्ट द्वितीय उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ पायनस  
 रत पाय परि वाले लाल सुजान ॥ तो वियोग मोभा  
 न में क्यों विधि लिख्यो अपान ॥ ३२२ ॥ टीका ॥  
 पायन की मारता जंघा पगन में पाडि कै सुजान ल  
 ल बोल्यो तेरो वियोग मेरा भाल में अथान विधि  
 ने क्यों लिख्यो यहाँ निलजनि उर है याते धृष्ट  
 धृष्टक है और मारि वो नायका का दोष से ब्रह्मा  
 का दोष है याते दूसरो उल्लास है ॥ ३२२ ॥ अथ तृ  
 तीय चतुर्थ उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥ इक केगु  
 न में प्रान की दोष सु तनिय प्रकास ॥ होय दोष से  
 गुन जहाँ है चौथो उल्लास ॥ ३२३ ॥ टीका ॥ एक के

कौं सो क्रिया चतुर नायक है ॥ गुन दोषन में  
 ष गुन की कल्पना होय सो लेस अलंकार है ॥ ३३१ ॥  
 अथ क्रिया चतुर गुन में दोष लेस  
 न ॥ दोहा ॥ आली बज्रत तियान में मोहि निराल  
 लाल ॥ विहीस कौल शिर धरत नितिरूप भयो  
 जाल ॥ ३३२ ॥ टीका ॥ हे आली बज्रत तियान में  
 कौं देखि के नंदलाल है सो विहीस के नित्य शिर  
 धरे है मेरो रूप है सो जंजाल भयो यहाँ  
 ने कमल साया ये धरि के प्रणाम जतायो यों  
 क्रिया चतुर नायक है और परिराम गुन है तौ  
 सान्यो याते लेस है ॥ ३३२ ॥ अथ प्रोषित  
 स में गुन लेस उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्यारी  
 परदेश में करते प्रान पयान ॥ ये यह मोरि कठोर  
 नित्य जिवावत नान ॥ ३३३ ॥ टीका ॥ प्यारी  
 परदेश में प्रान पयान करते परन्तु यह मेरी  
 रता नित्य जिवावे है न ज्ञान और नही  
 यहाँ परदेश में है याते प्रोषित नायक है ॥ और  
 दोष से जीवो गुन है याते लेस अलंकार  
 ॥ ३३३ ॥ अथ अनभिज्ञ मुद्रा लक्षण  
 ॥ नहि समुके तिय रसन में सो अनभिज्ञ  
 नि ॥ प्रकृत अर्थ में और ह कटे सु मुद्रा सानि  
 ३३४ ॥ टीका ॥ तिय के रसन में नहीं समुके  
 भिन्न वस्तुओं ॥ प्रकृत अर्थ में और सो कटे  
 अलंकार जानौ ॥ ३३४ ॥ अथ अनभिज्ञ  
 हरन ॥ दोहा ॥ गये लपटे प्रवास गर वन

भय वैन ॥ प्रयास कही क्यों गर गहत हयंत न क-  
 ऊ भय है न ॥ ३३५ ॥ टीका ॥ राधिका है तो प्रया-  
 स का गला सों लपटी वन में भय का वचन कह-  
 कार के ॥ प्रयास ने कही गलो क्यों गहे है हयंत  
 नक भी भय नहीं है ॥ यहाँ राधा को प्रेम कृष्ण  
 ने नहीं जान्यो सो अनभिज्ञ नायक है ॥ और प्रया-  
 स गर वन में ॥ इन अक्षरन में कारो जहर पानी से  
 यह अर्थ निकसे है याते मुद्रा है ॥ ३३५ ॥ अथ  
 उत्तम नायक रत्नावली लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 करे जतन तिय मान हर सो उत्तम जिय जानि ॥  
 प्रस्तुत पद क्रम से कहे रत्नावली वर्यानि ॥ ३३६ ॥  
 टीका ॥ तिय है सो मान कौं हर वाको जतन  
 र सो जीव से उत्तम जानों क्रम से प्रस्तुत पद कहे  
 सो रत्नावली वर्यानों ॥ ३३६ ॥ अथ उत्तम ना-  
 यक रत्नावली उदाहरन ॥ दोहा ॥ वानी श्री  
 बदली निरखि गौरी को नंदलाल ॥ भाषि वचन स-  
 धुरे सरल खुस कारि लीनो हाल ॥ ३३७ ॥ टीका ॥  
 गौरी को वानी और श्री बदली देखि के नंदलाल  
 ने सधुरे और सरल वचन भाषि के नुरत खुस कर-  
 ली यहाँ बाल को प्रसन्न कारि लीनो याते उत्तम ना-  
 यक है और वानी श्री गौरी उत्पति पालन प्रलय  
 क्रम से निकसी याते रत्नावली अलंकार है ॥ ३३७ ॥  
 अथ मध्यम नहुन लक्षणा ॥ दोहा ॥ कर-  
 न रस रिस रिस वती तिय सों मध्यम सोय ॥  
 नज गुन तजि संगति गुनहि गहे सो नहुन हो-

ब० भ०

य ॥ ३३८ ॥ टीका ॥ रस वाली तिय सों प्रेम  
नही करे सो मध्यम नायक है ॥ अपना गुन  
तजि के संगति का गुन कों रहे सो तदनु  
र है ॥ ३३८ ॥ अथ मध्यम तदनु

रु ॥ दोहा ॥ तिय अन बोली लखि तुल  
रह लजनाथ पुनि हसती लखि जाय दिग  
रि भरि वाय ॥ ३३८ ॥ टीका ॥ तिय को

न बोली देखि के लज नाथ ठठकि रहे फेरि  
तो देखि के दिग जा करि के वाय भरि के  
ये यहाँ अनबोली देखि ठठके बोली तब  
गये याते मध्यम नायक है और वाय भरि के  
हरे भये सो पीला से कालो मिले तब हरा  
है याते तदनु है ॥ ३३८ ॥ अथ अधम

रूप लक्षणा ॥ दोहा ॥ कोल समय  
रखे लाज भीति तजि देय ॥ पूर्व रूप गहि संग  
तजि पुनि निज गुन लेय ॥ ३४० ॥ टीका ॥

का समय से लाज भीति तजि दे सो अधम  
है ॥ संगति का गुन लेकर फेरि जैके तजि के  
पना गुन कों ले सो पूर्व रूप अलंकार है ॥ ३४० ॥

अथ अधम पूर्व रूप उदाहरन ॥

पिय लखि शशि वरनी प्रिया होत लाल  
सरियन नै होत सेत तजि रा

कों देखि करि शशि  
रंग के लाल होय है फे  
रंग कों तजि के सेत

यहाँ विना समय छाथ पकोड वासों अधम ना  
 यक है और पीनस का राग का संग सौ ताल रंग  
 लियो फेर छाथ पकोड ने आप को सेत रंग लि-  
 यो याते पूर्व रूप है ॥३४१॥ अथ धीर ललि  
 तद्वितीय पूर्व लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुखी कला नि-  
 धि निः फिकर धीर ललित बिय जोष ॥ मिटें व-  
 स्तु तिहि गुन रहै पूर्व रूप भिद दोय ॥३४२॥  
 टीका ॥ सुखी होय कला निधि होय निः फिक-  
 र होय सो जीव में धीर ललित देखौ जो वस्तु का  
 मित्या सँ गुन रह जाय सो पूर्व रूप को दूसरो भे-  
 द है ॥३४२॥ अथ धीर ललित पूर्व रूप  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ धीर कला निधि सुख स-  
 दन रास प्रताप प्रकास ॥ अस्त भये रवि के रहत  
 छाथ धरा आकास ॥३४३॥ टीका ॥ धीर और  
 कलान की निधि सुख का घर जो रास हैं उनका  
 प्रताप को प्रकास है सो सूरज के अस्त भये ये  
 पृथ्वी आसमान में छायो रहै है यहाँ धीर ललि-  
 त नायक है और रवि अस्त नम हो वाको कारन  
 तयो तौ भी नम न मित्यो याते दूसरो पूर्व रूप  
 है ॥३४३॥ अथ धीरोद्धत अतद्वगुन लक्ष-  
 णा ॥ दोहा ॥ धीरोद्धत गर्वी कुली निजे गुन वक्ता  
 तय ॥ अतद्वगुन सु संग जु भये गुन ताके नहि लेया  
 ॥३४४॥ टीका ॥ धीरोद्धत है गर्वी है कुली है अ-  
 ना गुन को वक्ता जानौ ॥ संग भी भया में ताके गुन  
 हो लेय सो अतद्वगुन अतकार है ॥३४४॥ अथ



धीरोद्धत अतद्गुन उदाहरन ॥ दोहा  
 गवी लला व डाय ला हो शिर मोर कलीन ॥ वस  
 राग घर बाल मन लउ अनुराग नलीन ॥ ३४५ ॥  
 टीका ॥ हे लला गवी हो व डाय ला हो कलीन का  
 शिर मोर हो राग को घर जो बाल को मन है  
 वैसे हो तो भी अनुराग नहीं लियो यहाँ गवी  
 है याते धीरोद्धत नायक है ॥ और राग को घर जो  
 बाल को मन है तामें वैसे है तो भी अनुराग  
 हो लियो याते अतद्गुन अलंकार है ॥ ३४५ ॥

अथ धीर शान्त अनुगुण लक्षणा ॥

धीर शान्त शुचि श्रुति गुनी विनयी नायक गाय  
 अनुगुन सो संगति भये पूरव गुन अधिकाय ॥  
 ३४६ ॥ टीका ॥ शुचि होय श्रुति होय गुनी  
 य विनयी होय सो धीर शान्त नायक गावो संग  
 ति भये ये पूरव गुन अधिकाये सो अनुगुन है ॥

३४६ ॥ अथ धीर शान्त अनुगुण ५  
 दोहा ॥ धीर शान्त शुचि नय सदन लहि संगति र  
 पुर्वीर ॥ विनयी और हर लखन भौ श्रुति विजयी  
 रगा धीर ॥ ३४७ ॥ टीका ॥ धीर धीरज वान शान्त  
 शुचि पावन नीति के घर लक्ष्मण है सो  
 की संगति पा करि कै विनय वान भयो बेरीन को  
 मारवा वालो भयो अत्यंत विजयी भयो रगा  
 भयो यहाँ नायक धीर शान्त है और लक्ष्मण में रघु-  
 वीर की संगति में पहिला गुन अधिक भया याते  
 अनुगुन अलंकार है ॥ ३४७ ॥

मीलित लक्षणा ॥ दोहा ॥ कमी गंभीर सत  
 त रु विजयो धीरो दात ॥ मीलित मीलित में जहाँ  
 द न तनक लखात ॥ ३४८ ॥ टीका ॥ कमावान  
 होय गंभीर होय अच्छ्या ब्रन सहित होय विज  
 होय सो धीरो दात है ॥ मीलित में जहाँ तनक  
 द न हो लखावै सो मीलित अलंकार है ॥ ३४८ ॥  
 अथ धीरो दात मीलित उदाहर ॥ दोहा  
 विजयो कमी गंभीर अति कोप्यो समर समार ॥  
 व न लखन कै लखि पर्यो चंदन लाल लिलार ॥  
 ३४९ ॥ टीका ॥ विजयो विजयवान कमी कमा  
 वान अत्यंत गंभीर समर का बीच में कोप्यो त  
 लक्षणा का लिलार में लाल चंदन को तिलकन  
 हो देखि पर्यो यहाँ नायक धीरो दात है ॥ लिलार  
 का रंग से चंदन मिलि गयो याते मीलित है ॥ ३४९ ॥  
 अथ दर्शन ॥ दोहा ॥ देखे तिय रिय हित से  
 हत दर्शन ताहि बिचारि ॥ अवन स्वप्न पुनि चि  
 काहि साक्षात सु विधि चारि ॥ ३५० ॥ अथ सा  
 मान्य उन्मीलित लक्षणा ॥ दोहा ॥ सो सा  
 मान्य समान में नाहि न विशेष लखाय ॥ जव सी  
 लत में भेद है उन्मीलित तब गाय ॥ ३५१ ॥ टीका  
 समान में विशेष न हो लखावै सो सामान्य है जव  
 मीलित में भेद होय तब उन्मीलित गावो ॥ ३५१ ॥  
 अथ अवरा दर्शन सामान्य उदाहरन ॥  
 दोहा ॥ सुनि गुपाल गुन वाल के मुख अति लाली  
 जात ॥ तब मसाल मुख वान को भिन्न न जान्यो

त ॥ ३५२ ॥ टीका ॥ गुपाल के गुन मुनि  
ल के मुख में अत्यंत लाली आवै है तब मसाल  
जोर बाल को मुख न्यारो नही जान्यो जाय  
मसाल बाल में भेद नही याते सामान्य है ॥ ३५३ ॥  
अथ स्वप्न दर्शन उन्मीलि उदाहरन ॥  
स्वप्न मेल तै मिलि रहै केसर लागी भाल ॥  
ही जानी परे होत सेत रंग बाल ॥ ३५३ ॥  
स्वप्न का मेल सौं भाल में लागी केसर हे सो  
रहै जागता ही बाल को सेत रंग होता जानी  
है यहाँ मिली केसर जानि परे याते उन्मीलि  
है ॥ ३५३ ॥ अथ विशेषक गूढोत्तर  
दोहा ॥ है विशेष सामान्य में वहे विशेष  
मानि ॥ उत्तर देने भाव तें गूढोत्तर पहचानि ॥  
३५४ ॥ टीका ॥ सामान्य में विशेष होय  
शेषक मानों भाव में उत्तर दिया ये गूढोत्तर  
चानो ॥ ३५४ ॥ अथ चित्र दर्शन वि  
उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत चित्र नंद लाल  
भई चित्र बत नारि ॥ नीति पिछानी जाति है  
आवत सास निहारि ॥ ३५५ ॥ टीका ॥ नंद  
को चित्र देखता नारि है सो चित्र की नाई भई  
उसासन कों आवता देखि कै नीति पिछानी  
है यहाँ दो चित्रन में उसास ले वासों  
नी याते विशेषक अलंकार है ॥ ३५५ ॥ अ  
साक्षात् दर्शन गूढोत्तर उदाहरन ॥ दो  
प्रथम निराख अभिलाषिनी बाना द्विय हृदी

लाल लगात न लैरवा आज हमारी गाय ॥ ३५६ ॥  
 टीका ॥ पहल पहल देख के अमिलारिखनी है  
 सो रह्या में हर्षा करि कै बोली है लाल आज ह  
 मारी गाय है सो बछड़ान को नहीं लगवै ॥ यह  
 बाछरान को नै लगावो नाम ले करि भीतर आयो चा  
 है है यानि गदोतर है ॥ ३५६ ॥ अथ सरवी च-  
 रानि ॥ चौपाई ॥ जासो प्रिया दुगवन राखै ॥ ता  
 नित्य को सजनी सम भापै ॥ संडन सिद्धा ताके काम  
 उपातेम परिहास ललासा ॥ ३५७ ॥ अथ चि-  
 त्र सूक्ष्म लक्षणा ॥ दोहा ॥ अश्रुहि में उत्तर  
 कटे सो चित्रा लंकार ॥ पर आशय लिख जहं कि  
 या करे सु सूक्ष्म विचार ॥ ३५८ ॥ टीका ॥ अ-  
 श्रुन में उत्तर कटे सो चित्रा लंकार है ॥ पैला का आ  
 शय को देखि के जहाँ किया करे सो सूक्ष्म अलं  
 कार विचारो ॥ ३५८ ॥ अथ संडन चित्र उदाहर-  
 न ॥ दोहा ॥ अंजन दे विंदुली दई नय पहिरा-  
 य सुहार ॥ नख सिख साजि सिंगार पुनि का कीनै  
 उपहार ॥ ३५९ ॥ टीका ॥ अंजन दे करि कै विंदु  
 ली दई सुहार सुंदर नय पहरा करि कै नख सों ले  
 करि कै सिखनाई सिंगार साज के काई उपहार क  
 र्यो हार यहाँ का उपहार कस्यो हार उपहार कस्यो  
 यह उत्तर निकस्यो यानि चित्र अलंकार है ॥ ३५९ ॥  
 अथ सिद्धा सूक्ष्म उदाहरन ॥ दोहा ॥ चोल  
 अति प्रिय सो मिलन हित करे अति रति हिन सा-  
 धि ॥ यों सुनि सजनी और नित्य चितई मृगी बांधि

३६० ॥ टीका ॥ हे जालि पिय सों मिल बाँधे  
सौ चलि हित कों साधि करि कै अत्यंत रीते  
जैसे सुनि करि कै सजनी की ओर तिय है ते  
ही बाँधि करि कै काँकी यहाँ मूँची बाँधि  
जतायो फसल सुदेगा जब मिलौं गी याते  
अलंकार है ॥ ३६० ॥ अथ पिहित

लहरा ॥ दोहा ॥ पिहित जानि पर बात  
शय सहित जनाव ॥ व्याजोक्ति सु पर हेतु  
जहँ आकार दुराव ॥ ३६१ ॥ टीका ॥ पैला  
बात को आशय सहित जनावे सो पिहित  
कार है ॥ पैला को हेतु कह करि कै जहाँ  
कों छिपावे सो व्याजोक्ति अलंकार है ॥ ३

अथ उपालंभ पिहित उदाहरन ॥

प्यारी प्यारी सरखन सों मुकुरव भूलि  
कहि अति हर्षाय हिय दीनों मुकुर दिखाव  
टीका ॥ हे प्यारी प्यारी सरखन सों मुकुर  
सो भूलि कहावे है ॥ जैसे कह करि कै हिम  
त्यंत हर्षा करि कै काच दिखा दियो यहाँ  
देखा के सुरत चिन्ह दिखाया याते पिहित  
कार है ॥ ३६२ ॥ अथ परिहास

उदाहरन ॥ दोहा ॥ पान खवावत वि  
च कह्यो प्रिया गहि सार ॥ शीत पवन ते  
ई जाली अधर दार ॥ ३६३ ॥ टीका ॥

समय पान खवावता प्रिया ने सार गह  
जहाँ शीत का पवन से हे जाली अधरन से

पौर गई यहाँ सरसी नै दंत च्छात देखि विना समय  
 पान खवायो यह सरसी को पौरहास जानि नायिका  
 नै सोन पवन को दरार कह करि आकार छिपायो या  
 नै व्याजोक्ति अलंकार है ॥३६३॥ **दूती वर्णन ॥**  
**दोहा ॥** नित्य पिय के संदेश बच कहै सु दूती वाम  
 बिरह निवेदन मिलव नहि दे दूती के काम ॥३६४॥  
**अथ उत्तम दूती गूढोक्ति लक्षणा ॥ दो०**  
 उत्तम दूती मन हरि भाषि सधुर वर वात ॥ गूढो  
 क्ति तु मिस आन के कहै आन से वात ॥३६५॥  
**टीका ॥** सधुर और सुन्दर बचन भाषि करि कै म-  
 न को हरै सो उत्तम दूती है ॥ और के मिस से और से  
 वात कहै सो गूढोक्ति अलंकार है ॥३६५॥ **अथ**  
**उत्तम दूती गूढोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** लार  
 राधे कौं मात दिंग कहि कीरति से वाम ॥ स्वामि  
 नि आज निकुंज में कोर है कोनुक प्रियाम ॥३६६॥  
**टीका ॥** राधिका कौं माता के दिंग देखि कै वाम  
 नै कीरति से कही है स्वामिनि आज निकुंज में  
 प्रियाम कोनुक कोरे गो यहाँ सधुर बचन से उत्तम  
 दूती है और राधा की माता से कहै है राधा कौं सु-  
 नावै है याने गूढोक्ति अलंकार है ॥३६६॥ **अथ**  
**मध्यम दूती विवृतोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥**  
 मध्यम दूती परुष मृदु बोले बचन बनाय ॥ श्लेष  
 छिप्यो प्रगटाय जब तहँ विवृतोक्ति कहाय ॥३६७॥  
**टीका ॥** कठोर और कोमल बचन बना करि कै बो-  
 ले सो मध्यम दूती है जब छिप्या जया श्लेष को

प्रगटावै तहाँ विवृतोक्ति कहावै है ॥ ३६७ ॥ अथ म  
ध्यम दूती विवृतोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उ  
मि उमिगि बज्ज दिनन से घोर रहे सब ठाम ॥ बिष  
म बात उत्पात तै अब हटि हैं घन प्रयाम ॥ ३६८  
टीका ॥ बज्जत दिनन से उमिगि के सब ठाम घी  
भयंकर पवन और उत्पात तै अब घन प्रयाम  
गे यहाँ मीठा कठिन बचन से मध्यम दूती है और  
घन प्रयाम काला बादल बिषम पवन से हटै या  
र्थ में श्लेष छिप्यो रह्यो परंतु उत्पात शब्द से  
प्रयाम को अर्थ कृष्ण और बिषम बात को  
न्दा के बचन निकसे याते विवृतोक्ति ॥ ३६८ ॥  
अथ अथम दूती युक्ति लक्षणा ॥  
दूत ता परुष कीहे अधमा दूती सोय ॥ सम  
कोर क्रिया युक्ति अलंकारि होय ॥ ३६९ ॥ टीका  
कठोर बचन कह करि के दूतना कोर सो अधमा  
है ॥ क्रिया कोर के सम कीं छिपावै सो युक्ति  
कोर होय है ॥ ३६९ ॥ अथ अधमा दूती युक्ति  
उदाहरन ॥ दोहा ॥ अमित दीख पिय सो  
मानि रही अनखाय ॥ वेग चली कीहे दूतिका  
की सास बढ़ाय ॥ ३७० ॥ टीका ॥ अमित  
पिय सो रसी मानि के अनखा रही जलदी चली  
मे कह करि के दूतिका है सो सास बढ़ा कोरके  
का यहाँ सास बढ़ा के कड़की याते अधमा दूती  
और पोतम सो रसिदो सास बढ़ावो क्रिया  
पोतम सो रसिदो छिपायो याते युक्ति अलंकार

३७०॥ अथ विरह निवेदन लोकोक्ति ल-  
क्षणा ॥ दोहा ॥ तिय प्रिय को जु वियोग दुख भा-  
षे मन हित मानि ॥ कथै लोक कहना वती सो लोको-  
क्ति वखानि ॥ ३७१ ॥ टीका ॥ जो तिय प्रिय का वि-  
रह को दुख मन से हित मानि करि कै भाषे लोक की  
कहना वती कथै सो लोकोक्ति वखानै ॥ ३७१ ॥ अथ  
प्रिय विरह निवेदन लोकोक्ति उदाहरन  
दोहा ॥ निरखत मग तेरो लली तो विन दुखित गुण-  
ल ॥ चोल जलदी मिलि मति चलै आज काल की  
चाल ॥ ३७२ ॥ टीका ॥ हे लली तेरो मग देखैं हैं तो  
बिना गोपाल दुखी हैं जलदी चलै कै मिलि आज  
काल की चाल मति चलै यहाँ आज काल लोको-  
क्ति है ॥ ३७२ ॥ अथ हे कोक्ति वक्रोक्ति ल-  
क्षणा ॥ दोहा ॥ और अर्थ लोकोक्ति से कहैं होय  
हे कोक्ति ॥ अर्थ फिरै अरु श्लेष सों जानि लेइ व-  
क्रोक्ति ॥ ३७३ ॥ टीका ॥ लोकोक्ति से और अर्थ क-  
हे सो हे कोक्ति अलंकार है ॥ अरु सों श्लेष सों अ-  
र्थ फिरै सो वक्रोक्ति जानि ल्यौ ॥ ३७३ ॥ अथ प्रि-  
य विरह निवेदन उदाहरन ॥ दोहा ॥ भई  
विकल अति नदरी विरह वावरी चाल ॥ अलिङ्ग ला-  
ल लखी न नुरी शुक्ल लयन की चाल ॥ ३७४ ॥ टीका  
विकल भई अत्यंत दूरी भई चाल है सो विरह से  
लावरी भई है लाल लुभ सोलायन से सो नही देखी  
हो तो नाका नवन की सो चाल है यहाँ शुक्ल लो-  
यन की चाल यह लोकोक्ति है और ई में यह अर्थ



निकस्यो जैसे सुवो नेत्र बदल ले हैं तैसे तुम बदल  
 ल्यो हो यह हेकोक्ति है ॥ ३७४ ॥ अथ मिलाप  
 वक्तोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाई आज  
 ज भति रति से लौनी वाल ॥ ईह रस वस है रस  
 शा याहि भूलि हो लाल ॥ ३७५ ॥ टीका ॥ आज  
 डी मति कीरति से सुंदर वाल लाई हों ई का रस  
 वस होकरि के रात्रि में रसि कीरि के हे लाल  
 भूलो गा अर्थात् नही भूलो गा यह स्वर सों स्नेह  
 फेर्यो याते वक्तोक्ति है ॥ ३७५ ॥ अथ सर्या  
 रानि ॥ दोहा ॥ पीठ मर्द विट चेटक रु कर्म  
 व पाहिचानि ॥ बझरि विदषक पाँच विधि  
 सर्या वखानि ॥ ३७६ ॥ अथ पीठ मर्द स्वभा  
 वोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ मानवती हिम  
 पीठ मर्द निधारि ॥ वर्णन जाति स्वभाव को  
 वोक्ति लंकार ॥ ३७७ ॥ टीका ॥ मानवती के  
 मनासके सो पीठ मर्द नायक है ॥ जाति को औ  
 स्वभाव को वर्णन होय सो स्वभावोक्ति अलंकार  
 है ॥ ३७७ ॥ अथ पीठ मर्द स्वभावोक्ति  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुकुट लकुट पट पीत  
 य लली घर हाल ॥ पायन पारि मुरारि कौ हर्षित व  
 नी वाल ॥ ३७८ ॥ टीका ॥ मुकुट और लालड़ी प  
 पट कौ धारण करि के लली के घर नरत ही ला करि के  
 कौ पगन में पट कि के बालकौ हर्षित करी  
 को वर्णन है याते जाति अलंकार है ॥ ३७८ ॥  
 ॥ त्योंरी मीन मरोरि धरि लखि वैठी शिर नाय

त बनाय विनोद की लीनी वेग बुलाय ॥ ३७ ॥ टीका ॥ त्योंरी और मौन सरोरि धरि के शिर नवा-  
 द्य वैरी देखि के विनोद की बान बना करि के ज-  
 दी बुला लीनी यहां त्योंरी मौन सरोरि धरि वो सु-  
 ख है यति स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७ ॥ अथ  
 वट भाविक लक्षणा ॥ दोहा ॥ वट सो काम  
 थान में चतुराई सरसात ॥ भाविक भावी भूत को ज-  
 चरण साक्षात् ॥ ३८ ॥ टीका ॥ काम कथान में  
 तुराई सरसावे सो वट है भावी भूत को जहाँ साक्षा-  
 चरण होय सो भाविक अलंकार है ॥ ३८ ॥ अथ  
 वट भाविक उदाहरन ॥ दोहा ॥ चली लाल-  
 लच भरी ललना नुम्हे बुलात ॥ लखौ लाडली सदन  
 में रमा सदन छाँबि छात ॥ ३९ ॥ टीका ॥ हे ला-  
 ल चली लालच की भरी ऊई ललना नुमकों बुलावै है  
 देखौ लाडली का सदन में रमा कासा सदन की छाँबि  
 छावै है यहाँ रमा को सदन पहिले हो और धागे रु-  
 है गो सो राधिका का भवन में वर्तमान काल में बन्यो  
 यति भाविक अलंकार है ॥ ३९ ॥ अथ चेटक  
 नर्स सचिव लक्षणा ॥ दोहा ॥ चेटक चतुराई  
 लाप में जानि कार नित्य चित ॥ नर्स सचिव हरि को  
 सरसा दे मिलाय नित्य मित ॥ ४० ॥ अथ उदात्त  
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ पर के श्लाघ्य चरित्र को चिन्ह  
 जनावन हार ॥ बर्नन संपति चरित्र को द्विविधि उदा-  
 त उदार ॥ ४१ ॥ टीका ॥ पैला का श्लाघ्य चरित्र  
 का चिन्ह को जनावन घालो संपति का चरित्र को व-

नैल होय की उदात्त है सो दो तरह को है हे उदात्त  
 ३८३ ॥ अथ चैतक अथम उदात्त उदाहरन  
 दोहा ॥ लली चली खिल जान है भूति गेल मां स  
 हि ॥ भली भूति अरि दीप हरि रास राम यद  
 ३८४ ॥ टीका ॥ हे लली कहाँ चली जाय है गेल  
 ली के मग के सीहि अली भूति सों अरि करि के  
 यह हरि को रास उग है यहाँ रास स्थान कृष्ण  
 जलाय चरित्र को वर्णन है याने अथम उदात्त है  
 ३८५ ॥ अथ नर सचित्र द्वितीय उदात्त  
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ लै गोरु रस लेन मिस राधे के  
 भुलवाय ॥ रमानाय सस सदन धित हरि लखि ल  
 लुआय ॥ ३८५ ॥ टीका ॥ गोरु लेवा का मिस  
 राधे को भुलवाय के ले गयो ॥ विष्णु का भवन  
 मान भवन से कृष्ण को वैष्णव दीप के ललच  
 यहाँ गोरु लेवा का मिस सों भुलवा करे ले गयो  
 नर सचित्र है ॥ गोरु कृष्ण का संपति चरित्र को  
 वर्णन है याने दूसरे उदात्त है ॥ ३८५ ॥ अथ  
 अथ अत्युक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ वेष रूप  
 चनादि को बदलि करे जो हास ॥ हरि राधा के मेल  
 कहत विदूषक नास ॥ ३८६ ॥ टीका ॥ वेष  
 रूपादि को जो बदलि करि के हास्य को  
 रीति का मेल से नाकों विदूषक कहे हैं ॥  
 ३८६ ॥ दोहा ॥ अद्भुत कूर उदारना सूरतादि  
 ॥ ॥ जहाँ वर्णन अत्युक्ति से बल प्रकार की  
 ३८७ ॥ टीका ॥ उदारना को कुरो

प्रेम होय सो लज्जत प्रकार की अंत्युक्ति है ॥ ३८७ ॥  
 अथ विदुषक अंत्युक्ति उदाहरन ॥ दो०  
 चक्र घालीगी निकुंज के वन में अति शय लाय ॥ वे  
 ठे मृदि किंवार तुम में कति देह भुजाय ॥ ३८८ ॥  
 टीका ॥ वन में निकुंज के च्यारो ओर में घसी-  
 लाय लगी है तुम किंवार जुड़ि करि कै वैठे में क-  
 ति के बुरा द्यो हों यहाँ लाय को अति शय वर्नन  
 है याते अंत्युक्ति है ॥ ३८८ ॥ अथ दूत बरणी  
 न ॥ दोहा ॥ दूत निस्पृहार्थ तु प्रथम द्वितिय मि-  
 तार्थ उदार ॥ सु संदेश हारक तृतीय कवि गुलाब  
 निधरि ॥ ३८९ ॥ अथ निस्पृहार्थ निरुक्ति  
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ जानि दुजन को भाव चर दे उत्तर  
 शुभ उक्ति ॥ अन्य अर्थ के योग तें नासन को सुनि-  
 रुक्ति ॥ ३९० ॥ टीका ॥ दोनन को औष भव जानि  
 के शुभ वचन से उत्तर दे और का जोग से नासन  
 को और अर्थ होय सो निरुक्ति है ॥ ३९० ॥ अथ  
 निस्पृहार्थ निरुक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 न अति चाहत राम को नहि अति चाहत राम ॥  
 तुम हर्ये हो होय गो साँचो रावन नाम ॥ ३९१ ॥  
 टीका ॥ न राम को अत्यंत चाहती है लोको रा-  
 म अत्यंत चाहते हैं तुम प्रसन्न हो वो गो साँचो  
 रावन नाम होय गो बड़ा जानकी का हरन जाग से  
 रावरा को रोवरा साँचो नाम भया याते निरुक्ति  
 है ॥ ३९१ ॥ अथ मिताय प्रतिपद्य लक्षणा  
 दोहा ॥ कवि प्रसारा काजहि कर सो मिताय पद

चानि ॥ कथन निषेध प्रसिद्ध को प्रति षेध मुज  
 आनि ॥ ३८२ ॥ टीका ॥ प्रमाण कह कर के का  
 करे सो मितार्थ है प्रसिद्ध निषेध को कथन हो  
 सो प्रति षेध हटा से आनी ॥ ३८२ ॥ अथ  
 र्य प्रति षेध उदाहरण ॥ दोहा ॥ चील  
 ज में लखि लली नाचत है तार ॥ सोहन नंद  
 र नीह है मन्मथ अवतार ॥ ३८३ ॥ टीका ॥  
 अली निकुंज में चील के देखि ताल देदे कर के नाचत है  
 न है सो नंद कुमार नहीं है कामदेव का अवतार है यहा  
 को निषेध कर के कामदेव को अवतार उहराये  
 प्रलंकार है ॥ ३८३ ॥ अथ संदेश हारक विधि  
 दोहा ॥ सु संदेश हारक कहै कही बात है  
 सिद्ध करे जब सिद्ध कौ तब विधि भूषण होय ॥  
 ३८४ ॥ टीका ॥ कही बात कौ कहै सो संदेश  
 है ॥ जब सिद्ध कौ सिद्ध करे तब विधि अलं  
 र होय है ॥ ३८४ ॥ अथ संदेश हारक विधि  
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ लाल कह्यो करि लाल  
 आज रास में आज ॥ प्यारी प्यारी होय गी जब  
 तजि लाज ॥ ३८५ ॥ टीका ॥ लाल मैं चाह करि  
 कह्यो आज रास में आवो है प्यारी लाज कौ तज  
 तब प्यारी होय गी यहाँ प्यारी सिद्ध अर्थ को फी  
 सिद्ध करी याते विधि अलंकार है ॥ ३८५ ॥  
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारन कारज संग है हेतु  
 प्रथम पिछानि ॥ कारन कारज एक है हेतु द्वितीय  
 खानि ॥ ३८६ ॥ टीका ॥ कारन कारज साथ होय सो

पहिलो भेद पिछानौ ॥ कारन कारज एक होय सो दूसरो  
 भेद वखानौ ॥ ३८६ ॥ दोनन के उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 होत दूर डख तुरत ही लेत प्रियाम को नाम ॥ हैं गुला-  
 ब हरि जनन के कृपा कृपा सुख धाम ॥ ३८७ ॥ टी० ॥  
 प्रियाम को नाम लेता ही तुरत डख दूर होय है गुला-  
 ब काव कहै है हरि जनन के कृपा की कृपा है सोई  
 सुख को घर है यहाँ प्रियाम को नाम लेता ही दुख दूर  
 होय है ई में कारन कारज संग हैं यानि प्रियम ह-  
 तु है और कृपा की कृपा है सोई सुख का घर है ई  
 में कारन कारज एक है यानि दूसरो हेतु है ॥ ३८७ ॥  
 छप्पय ॥ रसवत १ प्रेयस २ दोय दूतिय ऊर्ज स्वैत  
 जानौ ॥ चवथ समाहित ५ नाम पंचम भावोदय ५  
 मानौ ॥ भाव सांधि ६ षट भाव शवलता शैलम कहिये  
 प्रत्यक्ष अनुमान ८ दशम उपमान निवाहिये ॥ पुनि शब्द रूपाय पति पुनि  
 अनुपलब्धि संभव लहौ ॥ रातिह्य १५ सहित सब पंच दश-  
 काव गुलाब भूषण गह्वौ ॥ ३८८ ॥ रसवत लक्षणा ॥  
 दोहा ॥ इक रस रसको अंग कहै के स्थाई को होय ॥ के  
 व्यभिचारी भाव को अंग सु रसवत जोय ॥ ३८९ ॥ टी० ॥  
 एक रस दूसरा रसको अंग होय अथवा स्थाई भाव  
 का अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रसवत  
 अलंकार है ॥ ३८९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ जयति  
 जयति योगींद्र मुनि कुंभज महा अनूप ॥ देखे ताके चु-  
 लुक में कच्छप मत्स्य स्वरूप ॥ ४०० ॥ टीका ॥ योगी  
 ंद्र महा अनूप अंगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षण वर्तने ॥ जा-  
 को दुल में कच्छप मत्स्य स्वरूपावतार देखे ॥ यहाँ

व० भ०

मुनि विषय करीत आव को अंग अद्भुत रस है  
 नै रसवत है ॥ ४०० ॥ प्रेय लक्षणा ॥ दोहा ॥  
 व होय अंग भाव को कै रस को अंग चार ॥ सु है प्रेय  
 कहैं याहि कों कवि भावा लंकार ॥ ४०१ ॥ टीका ॥  
 व को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव होय  
 सो प्रेयः लंकार है याही कों कवि है सो भावा लंकार कहैं  
 ॥ ४०१ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ कब वसि सी  
 धरि कोपीनहि चीर ॥ हे हर शिव शंकर  
 पत फिरि हों गंगा तीर ॥ ४०२ ॥ टीका ॥ कोपीन साव  
 चीर धारणा करि कै कासी में वसि कै । हे हर । हे  
 शंकर । जैसे जपतो जूवो तीर पै कब फिरौ गो ॥  
 शांत रस को चिंता संचारी अंग है याते प्रेयस है ॥  
 ४०२ ॥ ऊर्ज स्थित लक्षणा ॥ चंद्रायणा ॥ रसाभास  
 जहैं अंग भाव को होय वर ॥ अथवा भावा भास  
 को अंग तर ॥ सो ऊर्ज स्थित होय भाव रस  
 भावा भास रसा भास क्रम सहित लहि ॥ ४०३ ॥  
 टीका ॥ जहाँ भाव को अंग रसा भाव होय  
 भाव को अंग भावा भास होय सो ऊर्ज स्थित  
 होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावा भास है ॥ शीत  
 नुचित रस है सो रसा भास है ॥ ४०३ ॥  
 दोहा ॥ बन बन भोलन संग रसतुव बैरिन की  
 अरु अरि तुव गुन गनत निति प्रवल प्रतापी राम ।  
 टीका ॥ हे प्रवल प्रतापी राम तेरे बैरिन की स्त्री  
 लन के संग बन बन में रसती है यहाँ अमु विषय  
 नि भाव को अंग रसा भास है याते ऊर्ज स्थित है

नेरे अंग नेरे गुन सदा रनते हैं ॥ इहाँ प्रभु विषय क  
 रति भाव को अंग भावा भास है। याने ऊर्ज स्वित अ-  
 लंकार है ॥ ६०६ ॥ **समाहित लक्षणा ॥ दोहा ॥**  
 अंग होय रस को जहाँ भाव शांति कै होय ॥ भाग शां-  
 ति अंग भाव को जानि समाहित सोय ॥ ६०५ ॥ **टी०**  
 जहाँ रस को अंग भाव शांति होय अथवा भाव को  
 अंग भाव शांति होय सो समाहित जानो ॥ ६०५ ॥ **उ**  
**दाहरन ॥ दोहा ॥** पिय ठाढ़े से मान लीख तिय  
 इत रही विजोय ॥ देखत हँसि दीनों ललन तिय तब  
 दीनों रोय ॥ ६०६ ॥ **टीका ॥** मान देखि करि कै पिय  
 है सो ठाढ़े है रहे इत को तिय है सो विसेस देखि  
 रही ॥ देखते पिय ने हँसि दियो तब तिय ने रोय दि-  
 यो इहाँ अंगार रस को अंग कोप शांति है याते समा-  
 हित है ॥ ६०६ ॥ **भावोदय लक्षणा ॥ दोहा ॥**  
 होय अंग रस को जहाँ भावोदय कै होय ॥ भावोदय  
 अंग भाव को है भावोदय सोय ॥ ६०७ ॥ **टीका ॥**  
 भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहाँ रस को अंग  
 भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ॥ ६०७ ॥  
**उदाहरण ॥ दोहा ॥** सुनि गुन मोहन के रहे हिय  
 बलसी अति वाम ॥ चहत विचारि विचारि उर कब  
 मिलि है घन प्रयास ॥ ६०८ ॥ **टीका ॥** मोहन के गु-  
 न सुनि के वाम है सो हिया में ऊलसी रहे है ॥ उर  
 विचारि विचारि कै चाहती है घन प्रयास कंब  
 मिलै सो ॥ इहाँ अंगार रस को अंग है अतिसुक्य सं-  
 चारी को उदय है याने भावोदय है ॥ ६०८ ॥



भाव संधि लक्षणा ॥ चंद्रायणा ॥ भाव  
 जहं अंग रसहि को के जहां ॥ भाव संधि है अंग  
 को बर तहां ॥ भाव संधि है जुरे विरुद्ध जु भाव  
 व संधि तिहिं नाम समस्त बतावही ॥ ४०८ ॥  
 जहां रस को अंग भाव संधि होय ॥ अथवा भाव  
 ग भाव संधि होय तहां भाव संधि अलंकार है ॥  
 रुद्ध भाव जुरे तिस को सम्पूर्ण कवि भाव संधि  
 बतावे हैं ॥ ४०९ ॥ उहाहरन ॥ दोहा ॥ चलत  
 संग्राम कों लीध विलषी निज बाल ॥ अरुन वरन तन  
 उठे विपुल पुलक ततकाल ॥ ४१० ॥ टीका ॥ वीर  
 ग्राम को चलते विलषी जूड़े अपनी स्त्री देखी  
 य अरुन वरन तन में बज्जन रोस उठे ॥ इहां प्रभु  
 करति भाव को अंग रसणी प्रेम रसा उत्कंठा की संधि  
 याते भाव संधि है ॥ ४१० ॥ भाव शवलता  
 चंद्रायणा ॥ भाव शवलता होय अंग रस को मता  
 के भावहि को अंग भाव की शवलता ॥ भाव  
 य भाव जहं बज्जन ही ॥ उपजे तहां सुभाव शवलता  
 कवि कही ॥ ४११ ॥ टीका ॥ रस को भाव अंग भाव  
 वलता होय अथवा भाव को अंग भाव शवलता  
 य सो भाव शवलता अलंकार है ॥ जहां बज्जन  
 पजे तहां कविन ने भाव शवलता कही है ॥ ४११ ॥  
 उहाहरन ॥ दोहा ॥ बंशीधर बन माल धर हर  
 रंहाय ॥ कित में कित वह कित मिलन  
 बनाय ॥ ४१२ ॥ टीका ॥ बंशीधर बन माल धर  
 सो दर में रहे हैं ॥ कहां में कहां वह कहां मिलन

सजनी न व्योत बताय हौं वंशीधर वनमाल धर यह-  
 नो स्मरणा ॥ कहां में कहां वह यह वितर्क ॥ कहां मिलन  
 यह दीनता ॥ न व्योत बता यह उत्कंठा यह भाव शवल  
 न है सो विप्र लंभ प्रंगार रस को जंग है यार्ने भाव प्रान  
 तना अलंकार है ॥ ४१२ ॥ अथ अस्मारा ॥ लंकार लि-  
 ख्यते ॥ प्रत्यक्ष लक्षणा ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय अरु  
 मन ये जहाँ विषय आपनों पाय ॥ ज्ञान करें प्रत्यक्ष नि-  
 हि कह गुलाब कवि राय ॥ ४१३ ॥ टीका ॥ जहाँ इन्द्रिय  
 और मन ये हैं सो अपनों विषय पाकर के ज्ञान करें ति  
 त्यों गुलाब कहै है कविराज है सो प्रत्यक्ष अलंकार है ॥  
 ४१३ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ लघन सुनझ जिहि का-  
 रें होत जेज धनु धारि ॥ मन मानत है देख यह है  
 वह जनक कुमारी ॥ ४१४ ॥ टीका ॥ रामचंद्र की उक्ति  
 है लक्ष्मणा सुनों ॥ जाके वासे धनुष उताववे को जज्ञहो  
 न है मेरा मन माने है देख यह वही जनक कुमारी है  
 इहाँ मन नेत्रन सों प्रत्यक्ष है यार्ने प्रत्यक्ष अलंकार है  
 ४१४ ॥ अनुमान लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारण के जानि  
 जहाँ कारण जान्यो जाय ॥ है अनुमान अलंकार सु कवि  
 गुलाब के भाय ॥ ४१५ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ चट-  
 काली दीध मथन ध्वनि चरणायुध ध्वनि पाय ॥ जानि  
 सबरी अंत नित्य रहि पिय हिय लपटाय ॥ ४१६ ॥  
 टीका ॥ चिरीन की ध्वनि दीध मथन ध्वनि सुगीकी  
 ध्वनि सुनि के रानि को अंत जानि के नित्य है सो पिय  
 का हिया सों लपटाय रही ॥ इहाँ चटकाली दीध मथ-  
 न सुगी की ध्वनि कारण जानि नै निशान कारण जान्यो

अनुमान है ॥४१६॥ उपमान लक्षणा ॥  
 ॥ उपमा की सादृश्य तैं विन देख्यो उपमेय  
 परे उपमान सो अलंकार है जेय ॥४१७॥ टीका  
 पमान की सादृश्य सैं विना देख्यो उपमेय जानि  
 जानिवे जोरय उपमान अलंकार है ॥४१७॥  
 ॥ दोहा ॥ सन्सय सन सुन्दर लसे रीब समे  
 विशाल ॥ सागर सन गंभीर है सो दशरथ को लाल ॥  
 ४१८॥ टीका ॥ कामदेव की समान सुंदर लसे है  
 र्य समान विशाल तेज है समुद्र समान गंभीर है  
 स चंद्र है इहाँ कामादि उपमानन सैं रामचंद्र जाने  
 याते उपमान है ॥४१८॥ शब्द लक्षणा ॥  
 जहाँ शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाणा वखानि  
 शब्दालंकार है भाषत सु कवि सुजान ॥४१९॥  
 जहाँ शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाणा को  
 न होय सो शब्दालंकार है सु कवि सुजान हैं सो  
 ते हैं ॥४१९॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ धर्म विना  
 हि सुख लहे गुरु विन लहे न ज्ञान ॥ ज्ञान विना  
 मुक्ति कै पांच पांच सरे अज्ञान ॥४२०॥ टीका ॥  
 धर्म विना सुख नहि मिले गुरु विना ज्ञान नहि  
 ज्ञान विना मुक्ति नहि होय ॥ अज्ञान है सो पांच  
 कै सरे है ॥ इहाँ शास्त्र प्रमान है ॥ याते शब्द  
 है ॥४२०॥ अर्थ अर्थपति लक्षणा ॥  
 जहाँ व्यर्थ भे अर्थ कौ और जोग सैं थाप ॥  
 ति अलंकारि सु भाषत सु कवि सदाप ॥४२१॥  
 जहाँ व्यर्थ भये अर्थ कौ और जोग सैं थापे सो

पति अलंकार गर्व सहित सुकवि भाष्यते हैं ॥३२॥  
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ तिय तेरे काटि है यहै तेँ की  
 नौ निधार ॥ जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर-  
 भार ॥४२१॥ टीका ॥ हे तिय तेरे काटि है यह मैंने  
 निश्चय कियो है जो नहि होय तो भारी कुच भार-  
 को कौन धारै है इहाँ नहि यह व्यर्थार्थ कुच धारण  
 योग्य करि उहरायो याते अर्थापत्ति है ॥४२१॥ अ-  
 य अनुप लब्धि संभव लक्षण ॥ दोहा ॥  
 जानि परे नहि वस्तु कहु अनुप लब्धि है सोय ॥  
 जहँ संभव है वस्तु को संभव नाम सु होय ॥४२२॥  
 टीका ॥ जहाँ कहु वस्तु नहि जानि परे सो अनुप-  
 लब्धि अलंकार है जहाँ वस्तु को संभव होय सो संभ-  
 व नामक अलंकार होय है ॥४२२॥ अथ अनुप लब्धि  
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ नहि तेरे काटि सब कहत कुच  
 यिति विन आधार ॥ इन्द्र जाल यह काम को लोक कर  
 त निधार ॥४२३॥ टीका ॥ तेरे काटि नहि है ॥ सब  
 कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है ॥ यह का-  
 मदेव को इंद्रजाल है रासैं लोक निश्चय करते हैं इ-  
 हाँ काटि को अभाव है ॥ याते अनुप लब्धि है ॥४२३॥  
 अथ संभव को उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनी न दे  
 खी नुव सदृश है चषभानु कुमार ॥ जानत है कहै  
 होयगी विपुला धरनि विचारि ॥४२४॥ टीका ॥  
 हे चषभानु कुमार ॥ तो समान देखी है न सुनी है  
 परंतु सदृशी बड़ी विचारि के जान्यो हों कोई हो-  
 यगी ॥ इहाँ को संभव है याते संभावनालंकार है

॥४२५॥ अथ रीतिहय लक्षणा ॥ दोहा ॥ सु  
हय प्राचीन की उर्ध्वलि आई जु कहानी ॥ ताको  
यल को नहि न परै पहिचानि ॥ ४२६ ॥ टीका ॥ जो  
प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम  
ही पहिचान्यो परै सो रीतिहय अलंकार है ॥ ४२  
उहाहरण ॥ दोहा ॥ हे सीता उर धीर धरि  
रे मन अपघात ॥ जीवन सो नर सुख लहे यहै  
की बात ॥ ४२७ ॥ टीका ॥ विजय की उक्ति ॥ हे  
रा हृदय में धीरज धरि। मन में अपघात मति धरे।  
आदसी जीवै सो सुख पावै। यह लोक की बात है  
हैं जीवन सो नर सुख लहे यह लोक कहानी है ॥  
याने रीतिहय है ॥ ४२७ ॥ इति प्रसाराणां लंका  
राः ॥ अथ संस्तीष्ट शंकर तिलव्यते ॥  
भूषण शब्द र अर्थ के आपस में मिलि जाहि ॥ संस्  
तीष्ट र शंकर तहाँ ये जुग नाम कहाहि ॥ ४२८ ॥ टीका  
जहाँ शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलि ज  
हि तहाँ संस्तीष्ट और शंकर ये दो नाम कहावै है ॥  
४२८ ॥ अथ संस्तीष्ट लक्षणा ॥ दोहा ॥ एक अ  
लंकार को रहे नहि दूसर की चाह ॥ बाध कहै इक  
न को होय नहि किज रह ॥ ४२९ ॥ जुदे जुदे भाते  
सकल जगनी अपनी वाम ॥ तिल तंडल की रीति की  
है संस्तीष्ट सु नाम ॥ ४३० ॥ टीका ॥ एक अलंकार  
को दूसरे अलंकार की चाह नही रहे और एक अ  
कार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी रह से नही  
होय ॥ ४३० ॥ तिल तंडल की रीति कीर के सब अप

अपनी ओर पर जुदे जुदे भासैं सो संस्तीष्ट नाम है ॥३३॥  
**अथ संस्तीष्ट भेद ॥ दोहा ॥** अर्थ अर्थ के भूषण  
 शब्द शब्द के होय ॥ अर्थ अर्थ के होय यों त्रय सं-  
 स्तीष्ट विजोय ॥४३१॥ **टीका ॥** अर्थ अर्थ के अलंका-  
 र होय और शब्द शब्द के अलंकार होय और अर्थ  
 शब्द के अलंकार होय जैसे तीन संस्तीष्ट देखौ ॥४३१॥  
**अथ शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥** पय पानी की रीति  
 करि होय परस्पर तीन ॥ ताको संकर नाम ही भाषत पर-  
 प्रवीन ॥४३२॥ **टीका ॥** दूध जल की रीति करि के अलं-  
 कार परस्पर तीन होय ताको परस प्रवीन है सो संकर न-  
 म भाषते हैं ॥४३२॥ **अथ शंकर भेद ॥ दोहा ॥**  
 हि अंगारी भाव १ अरु सम आधान्य २ चरखानि ॥ संदेह  
 अरु इक वाचकानु प्रवेश चव भावि ॥४३३॥ **टीका ॥** अ-  
 गारी भाव शंकर है और सम आधान्य शंकर चरखानो  
 संदेह शंकर ३ और एक वाचकानु प्रवेश शंकर जानौं  
 ये चारि भेद हैं ॥४३३॥ **अथ अंगारी भाव ल-**  
**क्षणा ॥ दोहा ॥** बीज वृक्ष के न्याय करि इक इक  
 को अंग होय ॥ सो अंगारी भाव है कवि गुलाब सति-  
 जोय ॥४३४॥ **टीका ॥** बीज वृक्ष के न्याय करि के स-  
 क अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगारी  
 भाव शंकर है गुलाब कवि के मत में देखौ ॥४३४॥  
**अथ सम आधान्य शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥**  
 दिन दिन पात के न्याय करि संग प्रगटे संग भासे ॥ ना-  
 म सम आधान्य ही कवि गुलाब कह तास ॥४३५॥  
**टीका ॥** दिन स न्याय करि अलंकार साथ ही प्रगटे

साथ ही भासें गुलाब कीब है सो ताकों नाम सम प्र  
 धान्य कहें है ॥ ४३२ ॥ अथ संदेह शंकर  
 ॥ चंद्रायण ॥ प्रथम सिताये द्वितीय  
 भास ही ॥ द्वितीय सिताये प्रथम विशेष प्रकास ही ॥  
 धन इक कों एक राति दिन न्याय करे ॥ तींहे शंकर  
 देह कहत काव मोद धरे ॥ ४३६ ॥ टीका ॥  
 लंकार सिताये सें दूसरे अलंकार सोसे दूसरे अलंकार  
 सिताये सें पहिलो अलंकार भासे राति दिन न्याय  
 क कों एक बाधे नही ताकों संदेह शंकर कहत हैं ॥ काव  
 मोद धरे कै ॥ ४३६ ॥ अथ एक वाचकानु प्रवे-  
 श शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥ न्याय नृसिंहा कार  
 करि पद रु वाक्य इक साँहि ॥ जुग भूषणा इक वाचका  
 प्रवेश कहि ताहि ॥ ४३७ ॥ टीका ॥ नृसिंहा कार न्या  
 य करि एक पद और एक वाक्य में दोय अलंकार हैं  
 य ताकों एक वाचकानु प्रवेश संकर कहौ ॥ ४३७ ॥ अ  
 र्थ अर्थ की प्रथम संस्था को उदाहरन ॥  
 दोहा ॥ शशि सो उज्जल मुख लसे खंजन हैं मनु न  
 अधर नासिका विंवशुक मधुर सुधा सें वेन ॥ ४३८ ॥  
 का ॥ शशि सो उज्जलो मुख लसे है ॥ नैन हैं सो मानों  
 जन हैं ॥ अधर और नासिका हैं सो किं दूरी और शुक  
 सुधा से मीठे वचन हैं यहाँ उपमा उत्प्रेक्षा यथा  
 अलंकार करि संस्था है ॥ ४३८ ॥ द्वितीय  
 को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर की कर की वर  
 धूलि देह ॥ कत मुकरत परधी परत मुख सों सनी  
 टीका ॥ सुंदर कर की चरी कर कि गई है धीरे

रिके धूसरी देह है ॥ क्यों नटे है ॥ पिछानी परे है ॥ सुख सों  
 सनेह में सनी है ॥ इहाँ यम कहे कानु प्रास शब्दा लंकारन  
 की संसृष्टि है ॥ ४३८ ॥ **तृतीय संसृष्टि को उदा-**  
**हरन ॥ दोहा ॥** दृग से दृग हैं याहि के मुख सो मुख ही  
 आहि ॥ कर से कर कुच से कुचाहि उपमा उपजै काहि ॥ ४४०  
**टीका ॥** याके दृग से याके ही दृग हैं ॥ मुख सो मुख ही है  
 कर से कर ही हैं ॥ कुच से कुच ही हैं ॥ उपमा कौन कौं उप  
 जै ॥ यहाँ के कानु प्रास अनन्वय शब्दार्थ लंकार की संसृ  
 ष्टि है ॥ ४४० ॥ **इति संसृष्टिः ॥ अथ अंगारी**  
**भाव शंकर उदाहरन ॥ दोहा ॥** हलत पवन नैं  
 तरुन तर दोखत छाह अचूक ॥ शशि हरि नैं तम राजह  
 नैं मानज तिनके हूक ॥ ४४१ ॥ **टीका ॥** पवन सैं हालते  
 वृक्षन के नीचे जो अचूक छाया दोखती है सो मानों शशि  
 सिंह नैं तम रूप हाथी मारे हैं तिनके हूक हैं ॥ यहाँ श-  
 शि हरि तम राज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है यानि  
 अंगारी भाव शंकर है ॥ ४४१ ॥ **अथ सप्त प्राधान्य**  
**शंकर उदाहरण ॥ दोहा ॥** लीचत तुंग पयोधर  
 सुर विनुरगा वलि चार ॥ मध्य अरुण नायक मनुज न-  
 भ श्री सरकत हार ॥ ४४२ ॥ **टीका ॥** ऊँचे सेघन कौं उ-  
 लाड़ती जड़ सूर्य का घोड़ान की पंक्ति है सो हमारे र-  
 हा करी सो मानों मध्य में है लाल सारंग जाके असो आ  
 काश लक्ष्मी को पचा को हार है ॥ इहाँ श्लेष उत्प्रेक्षा  
 समा सोक्ति साय ही प्रगटते हैं साय ही भासते हैं या-  
 नैं सप्त प्राधान्य शंकर है ॥ नम श्री में नायिका व्यव-  
 हार को आरोप है ॥ सो समा सोक्ति है ॥ नायक नाम सा-



थी और हार को मीरा को है ॥ नायको नेतार  
 मध्यमरा व प्रीति विष्वाः ॥ ५५२ ॥ अथ  
 कार उदाहरण ॥ दोहा ॥ अमृत सिंघु  
 रति विधि अनुसासन जोय ॥ काँडे शशि  
 राधा सुख सम होय ॥ ५५३ ॥ टीका ॥ काम  
 सो ब्रह्मा की आज्ञा देख के अमृत के समुद्र को  
 के कलंक रहित चंद्रमा को काँडे तो राधा के मुख  
 न होय ॥ यहाँ जो यौ होय तो यौ होय ऐसा  
 संभावना अलंकार है और ऐसी चंद्रमा होय न  
 का सुख की बराबरी होय यह मिथ्या वरानि है  
 तै मिथ्याध्यवसिति है ॥ ५५३ ॥ पुनः ॥  
 सर्प महा विष उगलतो बसत मूल के साँहि ॥ तौ  
 जुत सुतरु तै कहा प्रयोजन आहि ॥ ५५४ ॥  
 बहूत जहर कौ उगलतौ ज्यो सर्प मूल में बसे है  
 ए फल सहित सुंदर वृक्ष सौ काँडे प्रयोजन है  
 प्रस्तुत सर्प वृत्तांत वरानि में अ प्रस्तुत राजा के  
 वे वारे खल को वृत्तांत वी प्रतीत होय है याँ  
 कि है ॥ अथवा प्रस्तुत खल वृत्तांत  
 सौ अप्रस्तुत सर्प वृत्तांत कथन है याँ अ  
 शंसा है ॥ अथवा वरार्य जान सर्प के वृत्तांत  
 पास रहवे वारे खल को वृत्तांत प्रगट होय है ये  
 प्रस्तुत हैं याँ प्रस्तुतांकर है निश्चय न भयो याँ  
 देह शंकर है ॥ ५५५ ॥ अथ एक  
 दोहा ॥ दोहा ॥ हे हरि दीन दयालु  
 सिर नाय ॥ तुव पद पंकज आसरे मन

देखो ६५॥ दोहा॥ हे हार दोन दयाल में यह शिर नवाय कार कै माँ-  
 धार चरणाकल के आसरे मेरो मन भ्रमर लगि जाय ॥ इहाँ पद पे-  
 न्त सधुकर में रूपक छेकानुप्रास है यातें एक वाचकानु प्रवेश संक-  
 ले काह के मत में शब्दार्थलंकार को ही एक वाचकानु प्रवेश होय है  
 मत में शब्दार्थलंकार को ही होय है ॥ जहाँ शब्दार्थलंकार जु-  
 होय तहाँ संस्पष्ट है अरु जहाँ एक पद में दोन होय तहाँ एक  
 कानु प्रवेश शंकर है ॥ ६४५ ॥ दोहा ॥ चंद्रकला वीका करी सोती-  
 सहाय ॥ सोती शंकर नै लिरव्यो सोध ग्रंथ सुख दाय ॥ ६४६ ॥

इति बनिता भूषण सम्पूर्णम् शुभम् ॥

बनिता भूषण का शुद्ध शुद्ध पत्र लिख्यते ॥

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	नहा	नही	२१	रंग	सँग
२	अनन्यय	अनन्यय	२२	तादत रुरया	तादत रुरया
३	नायका की	नायका को	२३	सांवेह	संदेह
४	उर में	छर में	२४	कामांधा	चालांधा
५	अवगर्थ	अवगर्थ	२५	साची	साची
६	भलक	भलक	२६	सन	नेन
७	न्यगत रूप	न्यगत रूप	२७	पतिको	पति कौं
८	जोगत	जागत	२८	छिपावे	छिपावे
९	देवर	देवर	२९	संसा को	संसा को
१०	सध्या	सध्या	३०	तिहिंपति	जिहिंपति
११	यावना	योवना	३१	जानै	जानै
१२	उराय	उराय	३२	नानऊ	आनऊ
१३	रमा लखा	रमा लखावे	३३	आसपसु	आसपसु
१४			३४	अधर नै	अधर में

१७ २२	रतिमें	रतिमें	२३ २०	न्हवाकों
१७ २४	मसाल की प्र- कासे	मसाल की प्र- कासे सो मध्या	२३ २१	वायिका कों
		धीराधीरा ना-	२५ १८	दुराय
		यिका है	२६ १७	आवति
१८ १	कोष	कोष	२६ २३	लो
१८ ३	अशिद्धा	अशिद्धास्पद	२७ ५	हर्षे
१८ ११	चन	चेन	२७ १८	गानिक
१८ २२	तिय सों है सो	तिय है सो	२७ २०	दायकी
१८ २३	धीरा है	धारे	२८ २३	इष्टजन
२० १	खडन	खडन	२८ २४	मसले
२० ३	रंग्यो है	रंग्यो है	२८ ६	धीर लो
२० १६	इकसे	इकसे	२८ १५	रूपरू
२० २५	प्रीत	प्रीति	२९ १	जैसे
२१ १	सापन्हव	सापन्हव	२९ १६	अरि मन
२१ १३	शयो युक्ति	शय उक्ति	३१ १०	धर्म की
२१ १४	कान	कान्ह	३१ ६	गये
२१ ५	कटक लगे	कटका लगे	३१ १	सेनता
२२ २०	गुप्ता यो	गुप्ता	३१ २३	सोस
२२ २१	नोय नै	नोय नै	३१ २	सिय
२२ २२	अशंव धानि	अशंव धानि	३१ १६	ससा शोत्रि
	य	य	३५ २३	कला
२२ २६	तुछित	तुछ	३६ ५	वांचित
३ ५	पंग	पंग	३६ १२	हेय
३ ५	कांठ हैं	कांठ हैं	३६ २०	पौर कुरां कुरा
			३८ ३	उपमा

काय	कार्य	५३	७	तै	नै
सारूप निबंधन	सारूप्य निबंधन	५३	१३	रंगे	रंगे
सीता का	सीता का	५३	१४	सुख	सुख
नायक	नायिका	५४	४	द्वितीय लक्षणा	द्वितीय समलक्षणा
निबंधन	निबंधन				
बात सो	बात सो	५५	८	बरपापरस	बरपापरस
साख को ल	साख को ल	५५	२२	हृष्या	हृष्या
कया मैं	कया मैं	५५	२५	सबलती	सबलती
सांति मे	सांति मे	५६	५	नीचो	नीची
से	से	५६	१८	समाव	समात
कंसादिक	कंसादिक	५७	१५	मायो	मायो
से	से	५८	११	बनना	बनिता
चिन्तादि	चिन्तादि	५८	२२	सहो जिसको	जिसको
वाय	सुवाय	५८	१७	सुरंग	सुरंग
चितवै	चितवै	६०	७	वतावत	बनावते
उत्ता	उत्ता	६१	८	संग	संग
अंगराई	अंगराई	६३	७	भूषतै	भूषतै
वरलुमे	वरलुमे	६३	२२	केरा सुंदरी	करा सुंदरी
घर घर	घर	६५	२१	करि ही	काटि ही
राम	राम	६६	२३	हँसी जभाय	हँसी जभाय
सजे	सजे	६८	२	पूछी	पूछी
अति हेतु है	अति हेतु है	६८	२६	साभरन	साभरन
सीज सेज	सीज सेज	६८	१४	सुख	सुख्य
उसाहि	उसाहि	७१	१	ऊत साप	ऊत साय
कलसन की	कलसन की	७१	१५	जगत न	जगजन
*	*	७३	४	संभवना	संभावना
*	*	७३	२१	दुतान	दुतान

१७	२२	१०	में	रानि में	२३	२०	ह
१७	१६	१०	की प्र-	ससाल की प्र-	२३	२१	नायिका की
			का	कासे सो मध्या	२५	१८	दुशय
				धीराधीरा ना-	२६	१७	जावति
				यिका है	२६	२३	लो
१८	१६		कोष	कोष	२७	५	हर्ष
१८	३		अशिष्टा	अशिष्टास्पदा	२७	१८	गनिक
१८	११		चंत	चेत	२७	२०	दायकी
१८	२२		तिय सों है सो	तिय है सो	२८	२३	हृष्टजन
१८	२३		धीरा है	धारो	२८	२४	समले
२०	१		खलन	खलन	२८	४	पीर को
२०	३		रंयों है	रंयों है	२८	१५	रूप र
२०	१६		इकसे	इकसे	३०	१	जैसे
२०	२५		प्रीत	प्रीति	३०	१४	अरि मन
२१	१		सापन्हव	सापन्हव	३१	१०	धर्म की
२१	१३		शयो युक्ति	शय उक्ति	३४	४	राये
२१	१४		कान	कान्ह	३४	१६	संग सेना
२२	५		कटक लगे	कटक लगे	३४	२३	सोस
२२	१०		गुप्ता को	गुप्ता	३५	२	सिय
२२	१२		जोय नै	जोय नैं	३५	१६	सुखा
२२	१२		अशंव धानि	अशंव धानि	३५	२३	कला
			य	निशय	३६	५	बांचि
२२	१६		सुछित				
२३	५		पंरा				
२३	५		कांटे				





७१	२	अये	अयें	८०	२२	कारि के कड़का	कारि के
७२	२	का हैं	का है	८२	२५	नाई	नाई
७३	१०	गुनवान	गुनखानि	८२	२६	नायक है	सखा है
७४	१३	वांछितार्थ	वांछितार्थ	८३	३	झय	झये
७५	७	ठाहै	ठाहै	८३	८	चरीन	बरीन
७६	२५	इकहा	इकहा	८३	२२	जलाध्य	जलाध्य
७७	३०	मिले	मिले	८४	१०	गोरे	गोगो
७८	३१	गुगा	गगा	८५	१८	विदूषक	विदूषक
७९	३	बन्ध	बन्धे	८५	३	लीगी	लगी
८०	१०	निडर	निडर	८५	२८	हर्ष हो	हर्ष हो
८१	१०	अपान	अपान	८६	१५	राति हय	रोति हय
८२	२४	आन को	आन को	८७	२०	भाव का	भाव को
८३	८	चाहे है	चाह है	८८	४	आग शांति	आव शांति
८४	१६	रहै	रहै	१०२	२४	सदाप	सदाप
८५	५	सुंदर	सुंदर	१०३	२	तै कीनों	तै कीनों
८६	१६	डार	डारि	१०३	२१	जानत हो	जानत हो
८७	२२	इकला	अकेला	१०४	७	अपघात	अपघात
८८	२५	कल्याना	कल्पना	१०४	१८	को	को
८९	१२	मान्यी	मानों	१०४	१८	बांधक	बांधक
९०	२५	गहै सो	गहै सु	१०४	२०	नहि किंहु	नहीं किंहु
९१	२२	सखिन ने	सखिन से	१०४	२०	आसे	आसे
९२	५	पूर्व	पूर्वरूप	१०४	२१	नंडल	नंडल
९३	६	वसे हो	वसे हो	१०५	२३	नप्रवे	नप्रवेश
९४	७	उदाहर	उदाहरन	१०५	१६	अंगांगी	अंगांगी
९५	२५	जान्यो न	जान्यो जात	१०५	१८	अंगांगी	अंगांगी
९६	५	उन्मील	उन्मीलन	१०५	२५	सुन्याय	सुन्याय
९७	२५	बोला	बोली	१०६	१८	सैं वैन	सैं वैन
९८	१०	सदन	सूदन	१०६	२५	धूसरि	धूसरित
९९	२५	ओर	ओर	१०७	१८		नुरगा बोल
१००	७	को	को	१०७	२	विश्वाः	विश्वाः
१०१	२	दंतच्छात	दंतच्छात	१०८	८	शे	शे